धरती आबा की ऊर्जावान भूमि से प्रकाशित लोकप्रिय दैनिक

खबर मन्त्र

सबकी बात सबके साथ

सुप्रभात

रांची, गुरुवार

18.05.2023

* नगर संस्करण । पेज : 12

khabarmantra.net ज्येष्ठ, कृष्ण पक्ष, चतुर्दशी, संवत 2080 मूल्य : ₹ 3 । वर्ष : 10 । अंक : 302

12 निरहुआ-आम्रपाली के गाना ने तोड़े सारे रिकार्ड

न्यूज डायरी

कार्यपालक अभियंता रांची से गिरफ्तार

रांची/धनबाद। एसीबी की टीम ने गिरिडीह में पदस्थापित रहते हुए गबन एवं पद के दुरुपयोग के आरोप में कार्यपालक अभियंता संजय कुमार को रांची स्थित अरगोड़ा, बसंत बिहार कॉलोनी आवास से गिरफ्तार किया है।

लैपटॉप-पीसी उद्योग के लिए प्रोत्साहन योजना

नयी दिल्ली। सरकार ने देश में सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) हार्डवेयर विनिर्माण को प्रोत्साहित करने के लिए 17,000 करोड़ रुपये की उत्पादन से जुड़ी एक और प्रोत्साह योजना (पीएलआई) को बुधवार को मंजूरी प्रदान की।

खरीफ में 38,000 करोड़ रुपये की उर्वरक सब्सिडी

नयी दिल्ली। मंत्रिमंडल ने चालू खरीफ मौसम के लिए फॉस्फेट एवं पोटास (पी एंड के) वाले उर्वरकों के लिए पोषक-तत्व आधारित सब्सिडी (एनबीएस) की दरों को बुधवार को मंजूरी दी। कहा कि वह खरीफ बुआई सत्र 2023 के लिए उर्वरकों पर किसानों को 38,000 करोड़ की सब्सिडी का लाभ देगी।

पत्थर खदान में हादसा एक मजदूर की मौत

गिरिडीह। धनवार थाना क्षेत्र के परोडीह में बुधवार को पत्थर खदान में पोकलेन मशीन में आग लगने से उसमें दबने से सिकंदर पंडित (30) की मौत हो गयी। मृतक कोडरमा के पूर्णाडीह का रहने वाला था।

गोइलकेरा : नक्सलियों ने मोबाइल टावर जलाया

पश्चिमी सिंहभूम। नक्सल प्रभावित गोइलकेरा में नक्सलियों ने उमवि में लगा मोबाइल टावर को पेट्रोल डालकर जला दिया। ज्ञात हो कि मंगलवार देर शाम हथियारबंद नक्सली पहुंचे। पेट्रोल डालकर टावर के मशीनों में आग लगा दी और पोस्टर छोड़कर चले गये।

सेना के वाहन में विस्फोट, चार घायल

सिलीगुड़ी। नगर निगम के वार्ड-13 अंतर्गत पंजाबीपाड़ा इलाके के गैरेज में सेना के वाहन की एसी में गैस भरने के दौरान बुधवार को विस्फोट में चार के घायल होने की खबर है। जिनमें एक सेना के जवान भी शामिल है।

15 लाख का इनामी कृष्णा एनआइए की रिमांड पर

रांची। राष्ट्रीय अन्वेषण अभिकरण (एनआइए) ने गिरिडीह जिले के पीरटांड़ थाना क्षेत्र के मंडलडीह, लेधवा निवासी 15 लाख के इनामी रीजनल कमेटी सदस्य कृष्णा दा उर्फ कृष्णा हांसदा उर्फ कृष्णा मांझी उर्फ अविनाश दा उर्फ आनंद को रिमांड पर लिया है। एनआइए उससे 20 मई तक पूछताछ करेगी।

पंचायत विकास के लिए नौ थीमों का प्रशिक्षण

रांची। पंचायतों के सर्वांगीण विकास के लिए पंचायती राज विभाग नौ थीम पर काम कर रहा है। इसी थीम पर योजनाओं का चयन कर कार्य करने के लिए नामकुम प्रखंड कार्यालय में दो दिवसीय राज्य स्तरीय कार्यक्रम हुआ।

बिजली ने भीषण गर्मी में और बढ़ायी परेशानी

रांची। झारखंड में बिजली की आंख मिचौनी से लोग परेशान हैं। भीषण गर्मी में भी लोगों को बिजली की समस्या से जूझना पड़ रहा है। लोकल फॉल्ट का बहाना बनाकर अधिकारी अपना पल्ला झाड़ते दिख रहे हैं। गर्मी आते ही बिजली व्यवस्था चरमरा गयी है। बार-बार बिजली गुल हो जाने से लोग परेशान और आक्रोशित हैं। विभाग ट्रांसफार्मर में फॉल्ट को बिजली गुल का कारण बताकर बचने की कोशिश कर रहा है।

गहना आभूषण

सोना (बिक्री)	:	57,500 रु./10 ग्राम
चांदी	:	75,000 रु./प्रति किलो

झारखंड हाइकोर्ट ने गृह मंत्रालय से पूछा- आखिर बॉर्डर इलाके से कैसे आ जाते हैं बांग्लादेशी

घुसपैठ पर केंद्र चार हफ्ते में जवाब दाखिल करे

» सीमा से सटे जिलों में बढ़ी मदरसों की संख्या

» अगली तारीख 19 जुलाई निर्धारित

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। झारखंड हाईकोर्ट ने केंद्रीय गृह मंत्रालय से पूछा है कि बतायें कि झारखंड के बॉर्डर इलाके से बांग्लादेशी घुसपैठिए कैसे घुस जा रहे हैं। अदालत गृह मंत्रालय को चार हफ्ते में जवाब दाखिल करने को कहा है। सुनवाई के बाद अगली तारीख 19 जुलाई निर्धारित की है। बुधवार को हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस संजय कुमार मिश्र की अध्यक्षता वाली खंडपीठ में बांग्लादेशी घुसपैठियों के झारखंड में घुसने से संबंधित दायर याचिका पर सुनवाई हुई। यह जनहित याचिका है, जिसे डेनियल दानिश ने दायर की है।

लव जिहाद के मामलों में भी तेजी

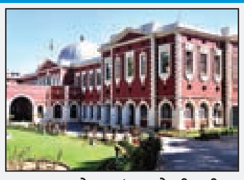

बुधवार को हुई सुनवाई के दौरान प्रार्थी की ओर से अदालत को बताया गया कि संथाल परगना के वैसे जिले जो बांग्लादेश से सटे हुए हैं, उनमें बांग्लादेश के प्रतिबंधित संगठन सुनियोजित योजना के तहत झारखंड की आदिवासी लड़कियों से लव जिहाद के तहत शादी करते हैं। इसे रोका जाना चाहिए। उन्होंने अदालत को बताया कि पिछले कुछ वर्षों में संथाल परगना के बांग्लादेशी सीमा से सटे हुए जिलों में अचानक मदरसों की संख्या में बढ़ोतरी हुई है। अदालत को लगभग 46 मदरसों की सूची भी प्रार्थी ने पेश की जो नए बने हैं। डेनियल दानिश की ओर से जो जनहित याचिका दायर की गयी है, उसमें कहा गया है कि जामताड़ा, पाकुड़, गोड्डा, साहिबगंज आदि झारखंड के बॉर्डर इलाके से बांग्लादेशी घुसपैठिये आ रहे हैं। इस वजह से इन जिलों में जनसंख्या पर असर पड़ रहा है। इन जिलों में बड़ी संख्या में मदरसा स्टेबल किये जा रहे हैं। अब स्थानीय ट्राइबल के साथ वैवाहिक संबंध बनाया जा रहा है।

मदरसों में हो रहे हैं देश-विरोधी कार्य

प्रार्थी ने अपनी याचिका में आरोप लगाया है कि इन मदरसों से देश विरोधी कार्य हो रहे हैं। लव जिहाद के नाम पर आदिवासी युवतियों का शोषण हो रहा है, और घुसपैठिये जमीन पर कब्जा भी कर रहे हैं। याचिका में अदालत से इसकी जांच कराने का आग्रह किया गया है।

अवैध खनन मामले में एजी से मांगा जवाब

पलामू, गढ़वा और लातेहार में अवैध खनन का मामला

रांची (खबर मन्त्र)। पलामू, गढ़वा और लातेहार में अवैध माइनिंग से संबंधित मामले को लेकर पंकज कुमार यादव की जनहित याचिका की सुनवाई बुधवार को झारखंड हाईकोर्ट में हुई। हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस संजय कुमार मिश्र की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने मामले में प्रधान महालेखाकार, झारखंड को मामले में की गई जांच की रिपोर्ट प्रस्तुत करने का निर्देश दिया है। पूर्व में कोर्ट ने इस मामले में प्रधान महालेखाकार को प्रतिवादी बनाया था। बुधवार को सुनवाई के दौरान मामले में गठित 3 सदस्य के कमेटी की रिपोर्ट कोर्ट में प्रस्तुत की गई। कोर्ट ने मामले की सुनवाई 5 जुलाई निर्धारित की है। प्रार्थी की ओर से अधिवक्ता राजीव कुमार ने पैरवी की। उनकी ओर से कोर्ट को बताया गया कि सैटेलाइट इमेज से यह पता लगाना चाहिए कि उक्त तीन जिलों में जिन कंपनियों को कितने लैंड पर माइनिंग के लिए लीज मिला है और वे वास्तविक रूप से कितने लैंड पर माइनिंग का कार्य कर रहे हैं। दरअसल, यह मामला एक संचालक से माइनिंग चलाने के लिए माइनिंग विभाग के अधिकारी द्वारा 20 लाख रुपए की मांग से जुड़ा है। इस मामले में डिप्टी डायरेक्टर रैंक के एक अधिकारी की भूमिका बताई गई है, लेकिन उनके खिलाफ जो जांच हुई उसे बाद में जांच को बंद कर दिया गया था। प्रार्थी का कहना था पलामू सहित कुछ जिलों में अवैध माइनिंग में अरबों का पैसों का खेल चलता है। इसकी रोकथाम होनी चाहिए। सरकार के जो अधिकारी इस अवैध माइनिंग में संलिप्त हैं उनके खिलाफ कार्रवाई होनी चाहिए।

सिद्धारमैया ही होंगे सीएम आलाकमान ने लगायी मुहर

एजेंसी

नयी दिल्ली। कांग्रेस ने कर्नाटक के सीएम का नाम फाइनल कर दिया है। सूत्रों के मुताबिक पार्टी ने एक बार फिर सिद्धारमैया के ऊपर भरोसा जताया है। पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने सिद्धारमैया के नाम पर मुहर लगा दी है। वहीं कर्नाटक में कांग्रेस के अगले सीएम होंगे। वह गुरुवार शपथ ले सकते हैं। चार दिनों के मंथन के बाद कांग्रेस ने कर्नाटक के सीएम का नाम फाइनल कर दिया। कर्नाटक सीएम की रेस में सिद्धारमैया अपने प्रतिद्वंद्वी डीके शिवकुमार पर भारी पड़े। वहीं, डीके शिवकुमार के सरकार में शामिल होने पर सस्पेंस बना हुआ है।

कड़ा मुकाबला चल रहा था : कर्नाटक में सीएम बनने की रेस में सिद्धारमैया और डीके शिवकुमार के बीच कड़ा मुकाबला था लेकिन बाजी सिद्धारमैया के हाथ लगी। हालांकि, यह इतना आसान नहीं था। दोनों के बीच सीएम चुनने को लेकर कांग्रेस में किस तरह से उहापोह की स्थिति थी, इसका अंदाजा इस बात से लगा सकते हैं कि नाम फाइनल होने में कांग्रेस को चार दिन लग गये। विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने 135 सीटों के साथ शानदार जीत दर्ज की है। रविवार को बेंगलुरु में कांग्रेस विधायक दल की बैठक हुई जिसमें एक प्रस्ताव पारित कर सीएम चुनने का अधिकार कांग्रेस अध्यक्ष को दिया गया। अगले दिन सोमवार को कांग्रेस के तीनों पर्यवेक्षक दिल्ली पहुंचे और खड़गे से मिलकर उन्हें विधायकों की राय के बारे में बताया। सूत्रों के मुताबिक सिद्धारमैया के पक्ष में ज्यादा विधायकों का समर्थन था जो उनके दावे को ज्यादा मजबूत कर गया। एक बात और सिद्धारमैया के पक्ष में जाती है वह है मास अपील। पूरे राज्य में उनका असर है। (शेष पेज 11 पर)

गुमला में नाबालिग के साथ सामूहिक दुष्कर्म, पांच अरेस्ट

गुमला। बिशुनपुर थाना क्षेत्रांतर्गत एक सुदूरवर्ती गांव में शादी समारोह में शामिल सातवीं कक्षा की एक नाबालिग बच्ची के साथ चीरोडीह निवासी अवधेश चीक बड़ाईक (23), गुलेंद्र उरांव (19), कुलदीप भगत (19), सुनील उरांव (19) एवं अनुज राम (19) ने सामूहिक दुष्कर्म किया। बुधवार को गुमला एसडीपीओ मनीष चंद्र लाल ने बिशुनपुर थाना में प्रेस कॉन्फ्रेंस कर बताया कि पिछले सोमवार को नाबालिग पीड़िता अपने गांव में रिश्ते के चाचा के घर में शादी समारोह था। वह समारोह में शामिल होने के लिए गयी हुई थी। वह उसी घर में थी जहां नाच गान हो रहा था। इसी बीच रात करीब 10 बजे पीड़िता के फोन पर उसकी सहेली का फोन आया, तो वह वहां से निकल कर कुछ दूर चली गयी। इसी दरम्यान चीरोडीह के अवधेश चीक बड़ाइक और गुलेंद्र उरांव पीछे से आकर धर दबोचा और मुंह बंद कर सुखवा टोली पतरा ले गये, जहां उसके साथ सामूहिक दुष्कर्म किया। घटना के बाद बच्ची अपने घर पहुंची और घटना की जानकारी परिजनों को दी। इसके बाद परिजनों ने बुधवार सुबह बिशुनपुर थाना में सभी आरोपितों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करायी है।

झारखंड में प्रचंड गर्मी से अभी राहत नहीं, और चढ़ेगा पारा

राज्य भर में तेज आंधी-बारिश, ओले भी गिरे

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। झारखंड में फिलहाल गर्मी से राहत नहीं मिलेगी। राज्य के कुछ जिलों में तापमान 44 डिग्री तक पहुंच गया है। गर्मी की वजह से लोगों का घरों से बाहर निकलना मुश्किल है। राजधानी रांची समेत राज्य के कई हिस्सों में बुधवार की शाम सात बजे के बाद तेज आंधी आयी। आंधी के साथ बारिश और ओले भी गिरे। उपराजधानी दुमका में तो भारी बर्फबारी हुई और बड़े-बड़े ओले गिरे। भीषण गर्मी से लोगों को थोड़ी राहत मिली। अपार्टमेंट और कंक्रीट के घरों में बंद बिलबिला रहे लोगों को बारिश और तेज हवा से राहत मिली। गर्जन भी तेज थी। ग्रामीण इलाकों में ओले भी गिरे।

दुमका में गिरे बड़े-बड़े ओले

दुमका। बुधवार को जिले में बारिश के साथ जमकर ओलावृष्टि हुई। अचानक आसमान से बड़े-बड़े आकार के ओले गिरने लगे। इससे मौसम तो सुहाना हुआ ही, लोगों को गर्मी से थोड़ी राहत भी मिली। लेकिन इससे सड़क के किनारे खड़े कुछ वाहनों के शीशे भी टूट गये। अचानक दोपहर बाद आकाश में बादल घिर आये और जमकर ओलावृष्टि होने लगी। दुमका में पिछले 15 दिनों से तापमान काफी बढ़ा हुआ था। रोज का तापमान 40 डिग्री से ऊपर रिकॉर्ड किया जा रहा है।

तापमान 40 डिग्री पार

राज्य के अधिकांश जिलों का तापमान 40 डिग्री सेल्सियस के पार पहुंच गया है। मौसम विभाग ने लोगों से सतर्क रहने की अपील की है। आने वाले चार-पांच दिनों तक राज्य के तापमान में कोई बदलाव संभव नहीं है। तामपान में और वृद्धि ही संभव है। कुछ जिलों में लू चलने की संभावना व्यक्त की गयी है। बच्चों और बुजूर्गों को इस मौसम में बचने की जरूरत है। विभाग ने सलाह दी है कि ऐसे मौसम में अधिक से अधिक ढीले ढाले सूती कपड़े पहनें। धूप में निकलना जरूरी हो तभी धूप में निकलें, इसके पहले सर, चेहरा और शरीर के अन्य भागों को ढंक लें। नियमित पानी पियें। किसी भी तरह की कमजोरी, थकान, बीपी लो आदि की समस्या होने पर डॉक्टर से संपर्क करने कहा गया है। (शेष पेज 11 पर)

बिहार में शराब ढूंढने वाला ₹60 लाख का ड्रोन लापता

खबर मन्त्र ब्यूरो

पटना। बिहार सरकार का 60 लाख का ड्रोन लापता हो गया। सरकार ने इसे राज्य में शराब ढूंढने के लिए मंगवाया था। अब तक पुलिस उस ड्रोन का पता नहीं लगा पायी है। इसको लेकर बिहार में सियासी बयानबाजी भी शुरू हो गयी है। भाजपा के नेता कह रहे हैं कि जिस तरह ड्रोन गायब हुआ है, उसी तरह सीएम की कुर्सी भी गायब हो जायेगी। इसको लेकर बिहार सरकार के मद्य निषेध मंत्री सुनील कुमार ने पलटवार किया है। मद्य निषेध मंत्री सुनील कुमार ने कहा कि भाजपा को बेचैनी हो रही है। यह तकनीकी गड़बड़ी के कारण हुआ है। हमलोग उसे ढूंढ निकालेंगे। महागठबंधन की सरकार अच्छे से चल रही है, इसलिए उन्हें बैचैनी हो रही है। हमलोग ड्रोन को बहुत जल्द खोज लेंगे। पुलिस भी जांच कर रही है। जैसे ही रिपोर्ट आयेगी, जानकारी दी जायेगी। (शेष पेज 11 पर)

राज्य में सियासी बयानबाजी तेज

खोजने वाले को मिलेगा इनाम

ड्रोन गायब होने के बाद इसकी जानकारी छपरा के उत्पाद विभाग को दी गयी थी। छपरा के उत्पाद अधीक्षक रजनीश ने ड्रोन खोजने वालों को इनाम देने की भी घोषणा की है। बिहार सरकार का यह ड्रोन शराब माफियाओं के लिए खतरा पैदा करने वाला था। जब से ड्रोन गायब हुआ है, तब से लगातार खोजबीन की जा रही है। भाजपा नेता प्रतिपक्ष विजय सिन्हा ने कहा कि इससे पहले रेल का इंजन, पटरी और टावर गायब हो चुका है तो ड्रोन गायब होना कोई बड़ी बात नहीं है। सीएम की कुर्सी भी गायब हो जायेगी तो इसमें आश्चर्य नहीं होगा।

गैंगस्टर अमन श्रीवास्तव कड़ी सुरक्षा में लाया गया रांची

मददगारों की सूची बनी एटीएस कसेगा शिकंजा

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। झारखंड के छह जिलों की पुलिस के लिए चुनौती बना गैंगस्टर अमन श्रीवास्तव को एटीएस ने मुंबई से गिरफ्तार कर बुधवार को कड़ी सुरक्षा में रांची लाया। इस दौरान रांची एयरपोर्ट पर सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम थे। अमन के बरामद मोबाइल फोन से उसके कई मददगारों के बारे में पुख्ता जानकारी मिली है। इनसे अमन श्रीवास्तव लगातार संपर्क में रहता था। इन मददगारों को एनआइए ने पूर्व में जेल भी भेजा था।

मददगारों में कई कोयला कारोबारी और व्यापारी : अमन श्रीवास्तव के मोबाइल से उसके मददगारों के बारे में जो जानकारी मिली है, उनमें रांची में रहनेवाला कोयला कारोबारी, लातेहार के चंदवा के कोयला ट्रांसपोर्टर और रामगढ़ का एक बड़ा कोयला कारोबारी शामिल है। अब एटीएस इन मददगारों पर शिकंजा कसेगी। इसकी सूची बना ली गयी है। इन मददगारों से अमन श्रीवास्तव लगातार संपर्क में रहता था। कई मददगारों को एनआइए ने पहले भी जेल भी भेज दिया था। (शेष पेज 11 पर)

ड्रग तस्कर-गैंगस्टर-खालिस्तानी टेरर लिंक के खिलाफ कार्रवाई

लॉरेंस बिश्नोई, गोल्डी समेत दर्जनभर गैंगस्टर्स के यहां एनआइए का छापा

एजेंसी

नयी दिल्ली। राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआइए) ने बुधवार को एक बड़े ऑपरेशन में गैंगस्टरों, ड्रग तस्करों और आतंकवादी समूहों के बीच कथित सांठगांठ पर कार्रवाई के तहत छह राज्यों में 100 से अधिक स्थानों पर छापेमारी की। एजेंसी खालिस्तानी तत्वों के साथ संबंधों की भी जांच कर रही है। दिल्ली-एनसीआर समेत हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और उत्तराखंड में 100 से अधिक स्थानों पर तलाशी चल रही है। दिल्ली एनसीआर में 32, राजस्थान में 18 ठिकानों पर एनआइए ने छापा मारा। पंजाब में भी 65 ठिकानों पर एनआईए की रेड जारी है। गैंगस्टर-टेरर लिंक केस में लॉरेंस बिश्नोई, गोल्डी बराड़ और नीरज बवाना सहित दर्जन भर गैंगस्टरर्स के यहां एनआइए के छापे जारी है। देश में आतंकवादी गतिविधियों की योजना बनाने और उन्हें

अंजाम देने में खालिस्तानी समूहों से जुड़े गैंगस्टरों की संलिप्तता का सुझाव देने वाली खुफिया सूचनाओं के जवाब में एनआइए की कार्रवाई सामने आयी है। एजेंसी का उद्देश्य आतंकवाद को बढ़ावा देने में शामिल नेटवर्क को उजागर करना और उनकी गतिविधियों को बाधित करना है। ऑपरेशन राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा पैदा करने वाले आपराधिक नेटवर्क को खत्म करने के एनआईए के प्रयासों में एक महत्वपूर्ण कदम है। फिलहाल एनआईए ने इस मामले में कोई आधिकारिक बयान नहीं दिया है। (शेष पेज 11 पर)

इमरान के घर छिपे हैं 40 आतंकी, पुलिस ने घेरा

एजेंसी

कराची। पाकिस्तान के पूर्व पीएम इमरान खान के लाहौर वाले घर में 30 से 40 आतंकियों के छिपे होने की खबरें हैं। बताया जा रहा है कि उनके लाहौर जमान पार्क स्थित घर को पुलिस ने घेर लिया है। वहीं पंजाब प्रांत की सरकार ने उनसे कहा है कि वह आतंकियों को पुलिस को सौंप दें। सरकार ने 24 घंटे का अल्टीमेटम भी दिया है। मीडिया के मुताबिक उनके घर में 30-40 आतंकवादियों ने शरण ले ली है। पंजाब प्रांत की सरकार के भेजने पर पुलिस ने इमरान के घर को घेर लिया है। आतंकियों को सौंपने के लिए 24 घंटे का अल्टीमेटम दिया है। पिछले एक हफ्ते से देश में राजनीतिक उथल-पुथल का माहौल है और इस नयी घटना ने अस्थिरता को बढ़ा दी है।

इमरान को मालूम है सबकुछ : पंजाब प्रांत के सूचना मंत्री आमिर मीर ने लाहौर में एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित कर कहा, इन आतंकवादियों को सौंप देना चाहिए नहीं तो कानून अपना काम करेगा। सरकार को इन आतंकियों की मौजूदगी के बारे में पता था क्योंकि उसके पास विश्वसनीय खुफिया रिपोर्ट्स थीं। मीर ने कहा कि जो खुफिया रिपोर्ट आयी है, वह बहुत ही खतरनाक है। उन्होंने कहा कि एजेंसियां जियोफेंसिंग के जरिए जमान पार्क में आतंकियों की मौजूदगी की पुष्टि कर सकती है। (शेष पेज 11 पर)

आतंकियों की तरह बर्ताव

मीर ने कहा कि पीटीआइ अब एक 'आतंकियों' की तरह बर्ताव कर रही है। उनका कहना है कि प्रमुख इमरान एक साल से ज्यादा समय से सेना को निशाना बना रहे हैं। मीर का दावा है कि इमरान खान की गिरफ्तारी से पहले हमले की योजना बनायी थी। मीर ने बताया कि आर्मी इंस्टीट्यूट पर नौ मई को हमले एक निर्धारित योजना के तहत किये गये थे। मीर का कहना है कि सरकार ने जीरो टॉलरेंस की नीति अपनायी है। प्रांत के मुख्यमंत्री मोहसिन नकवी ने कहा है कि उन्होंने पुलिस को फ्रीहैंड दिया है ताकि उपद्रवियों से निबटा जा सके।

हो सकता है मेरा यह आखिरी ट्वीट हो : इमरान खान

पाकिस्तान के पूर्व पीएम और पाकिस्तान तहरीक ए इंसाफ (पीटीआइ) अध्यक्ष इमरान खान एक बार फिर मुश्किलों में हैं। उन्हें एक बार फिर गिरफ्तार किया जा सकता है। इससे पहले उन्होंने ट्वीट कर कहा है कि मेरी अगली गिरफ्तारी से पहले शायद ये मेरा आखिरी ट्वीट हो। पीटीआई नेता जानकारी देते हुए कहा है कि पुलिस ने मेरे घर को चारों ओर घेर लिया है। उन्होंने कहा, मुझे आज खौफ कि पाक तबाही के रास्ते पर निकल चुका है। अगर अभी हमने कंट्रोल नहीं किया तो शायद हम वहां न पहुंच जाये, जहां से लौट न पायें। उन्होंने दावा किया कि पिछले एक साल से इमरान खान को रोकने के लिए पूरा जोर लगाया जा रहा है।

पतरातू में जल शोधन संयंत्र के निर्माण की पीएम ने की सराहना

एजेंसी

नयी दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने झारखंड में पतरातू प्रखंड में जल शोधन संयंत्र का निर्माण कार्य पूरा होने की बुधवार को सराहना की। कहा कि इससे उस इलाके में महिलाओं का जीवन आसान होगा।

श्री मोदी ने इस संयंत्र के बारे में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सांसद जयंत सिन्हा के ट्वीट को टैग करते हुए लिखा कि बहुत ही सराहनीय प्रयास! स्वच्छ पानी की यह सुविधा झारखंड में पतरातू की हमारी माताओं और बहनों के जीवन को बहुत आसान बनाने वाली है। श्री सिन्हा ने इस संयंत्र के चित्रों के साथ ट्वीट किया कि रामगढ़ के पतरातु प्रखंड की पंचायतों में जलापूर्ति हेतु 50 करोड़ रुपये से वाटर फिल्टर प्लांट व जलमीनार के निर्माण का कार्य पूरा कर लिया गया है। उन्होंने इसी ट्वीट में कहा है कि इससे उस क्षेत्र में अब जलापूर्ति में अत्यंत सुविधा होगी। उन्होंने लिखा है, क्षेत्र में जलापूर्ति सुनिश्चित करने हेतु जलमीनर बनाने का काम युद्धस्तर पर जारी है।

मिलेगा स्वच्छ पानी

प्रतिदिन 400-500 मेगावाट बिजली खरीद रही सरकार

भीषण गर्मी में बिजली गुल, विभाग का दावा- दे रहे पर्याप्त बिजली

झारखंड में गर्मी के कारण बिजली की डिमांड 2500 मेगावाट तक पहुंची

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। झारखंड में गर्मी आते ही बिजली व्यवस्था चरमरा गई है। बार-बार बिजली जाने से लोग परेशान और आक्रोशित हैं। विभाग ट्रांसफार्मर में फॉल्ट को बिजली गुल का कारण बताकर बचने की कोशिश कर रहा है। दरअसल, कम बिजली आपूर्ति के कारण हाहाकार मचा हुआ है। मांग के अनुरूप बिजली आपूर्ति करने में विभाग असफल साबित हो रहा है। हालात यह है कि पिछले दो दिन से जारी बिजली की आंख मिचौनी तीसरे दिन भी जारी रही।

हालांकि पिछले दो दिनों की अपेक्षा बुधवार को लोड शेडिंग कम रहा। मांग के अनुरूप बिजली मुहैया कराने में जुटे जेबीवीएनएल के अधिकारी इसके पीछे लोकल फॉल्ट बताकर बचने की कोशिश करते दिखे। सोमवार से हटिया ग्रीड में आई तकनीकी खराबी काफी मशक्कत के बाद मंगलवार देर रात दूर होने से विभाग के अधिकारियों ने राहत की सांस ली। इसके बावजूद शहरी क्षेत्र की अपेक्षा ग्रामीण इलाकों में बिजली की किल्लत बनी रही।

झारखंड में इन दिनों भीषण गर्मी की वजह से बढ़ी बिजली की डिमांड करीब 2500 मेगावाट तक पहुंच गई है। रिपोर्ट के अनुसार, बुधवार दोपहर 2 बजे एसएलडीसी में 1550 मेगावाट बिजली की मांग थी, जिसमें राजस्थान से मिलने वाले करीब 400 मेगावाट सोलर पावर के साथ 1565 मेगावाट उपलब्ध थी। इसमें राज्य सरकार के द्वारा मात्र टीवीएनएल से 350 मेगावाट बिजली मिल रही है। सिकिदरी हाइडल पॉवर पानी के अभाव में बंद है।

इधर झारखंड में बिजली की मांग के अनुरूप राज्य सरकार प्रतिदिन 500 मेगावाट बिजली सेंट्रल पूल और निजी कंपनियों से खरीद कर आपूर्ति कर रही है। यह प्रतिदिन डिमांड के अनुरूप बदलता रहता है। इस तरह से सरकार राज्य में बिजली आपूर्ति बनाए रखने के लिए इंडियन एनर्जी एक्सचेंज से 12 रुपये प्रति यूनिट की दर से प्रतिदिन 10 करोड़ की बिजली खरीद रही है। इसके अलावे निजी पॉवर कंपनियों से बिजली खरीद की जाती है जो एक दिन पहले डिमांड के अनुरूप आकलन कर बुक किया जाता है।

सामान्य बिजली आपूर्ति में राज्य सरकार नाकाम : संजय सेठ

खबर मन्त्र ब्यूरो

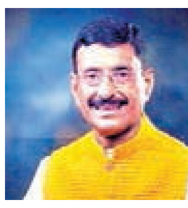

रांची। सांसद संजय सेठ ने कहा है कि जबसे झामुमो गठबंधन की सरकार बनी है तब से राज्य में बिजली की स्थिति खराब हुई है। शहर हो या गांव इस भीषण गर्मी में बिजली की कटौती से आम लोगों का जीना दुर्लभ हो गया है। रात में घंटों बिजली कटी रहती है। बिजली नहीं रहने से शहर के कई मोहल्लों में पानी सप्लाई नहीं हो पा रही है। बिजली दिन भर में दर्जनों बार कट जा रही है। व्यापार उद्योग धंधे प्रभावित हो रहे हैं। उपभोक्ता जब समय पर बिजली बिल की भुगतान कर रहे हैं तो बिजली विभाग को भी उपभोक्ता के परेशानियों का ध्यान रखना चाहिये। उन्होंने बिजली विभाग से बिजली आपूर्ति ठीक करने की मांग की है।

कुल सीट की तुलना में अबतक 246 प्रतिशत अधिक आवेदन

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के नेतृत्व में उत्कृष्ट विद्यालय की पहल को मिल रही सराहना

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। झरना कच्छप अपनी बेटी का नामांकन अब राज्य सरकार द्वारा प्रारंभ किये गये उत्कृष्ट विद्यालय में कराना चाहते हैं ताकि उनकी बच्ची भी अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाई कर सके, इसके लिए उन्होंने टीवीएस उच्च विद्यालय, धुर्वा में छठी कक्षा में नामांकन के लिए आवेदन दिया है। मुख्यमंत्री के प्रति आभार प्रकट करते हुये झरना ने कहा कि गरीब के बच्चों को भी अंग्रेजी माध्यम में शिक्षा देने की यह पहल सराहनीय है। ऐसे ही हजारों माता-पिता और अभिभावक हैं, जो सरकार द्वारा शुरू किये गये सीबीएसई संबद्धता प्राप्त 80 उत्कृष्ट विद्यालयों नामांकन के लिए अपने बच्चों का आवेदन जमा कर रहें हैं।

मालूम हो कि झारखंड में पहली बार सरकारी स्कूलों का कायाकल्प कर उत्कृष्ट विद्यालय बनाने की मुख्यमंत्री के सार्थक प्रयास के बाद अभिभावकों में अपने बच्चे-बच्चियों के नामांकन को लेकर खासा उत्साह दिख रहा है। बड़ी संख्या में अभिभावकों द्वारा उत्कृष्ट विद्यालय की इस ऐतिहासिक पहल को सराहा जा रहा है। उत्कृष्ट विद्यालयों में नामांकन के लिए 17 मई की शाम साढ़े पांच बजे तक कुल 12,146 उपलब्ध सीट की तुलना में अबतक 29,863 आवेदन विद्यालय प्रबंधन द्वारा प्राप्त किया गया है। सबसे अधिक आवेदन देवघर से 3247 पलामू से 2322 लोहरदगा से 2254 गिरिडीह से 1708 एवं रामगढ़ से 1498 आवेदन अबतक प्राप्त हुये हैं। राज्य के 80 उत्कृष्ट विद्यालयों में अबतक कुल 29863 आवेदन बच्चों के जमा हुए हैं।

आवेदन की तिथि बढ़ी

अभिभावकों की मांग को देखते हुए उत्कृष्ट विद्यालयों में आवेदन जमा करने की समय सीमा 25 मई 2023 तक बढ़ाई गई है। चयन परीक्षा का आयोजन 30 मई को होगाए प्रथम मेधा सूची 7 जून को जारी होगा एवं 12 जून से मेधा सूची के अनुसार नामांकन प्रारंभ होगा।

कार्यालय मेदिनीनगर नगर निगम

ज्ञापांक .... दिनांक ....

शुद्धि – पत्र

P.R. No. - 297396 है।

कार्यालय ज्ञापांक 1922 दिनांक 13.05.2023 से निकाली गयी निविदा सूचना संख्या 03/2023 – 24 में परिमाण विपत्र बिक्री की तिथि दिनांक 21.05. 2023 के स्थान पर दिनांक 20.05.2023 पढ़ा जाय। उक्त तिथि को इस हद तक संशोधित किया जाता है। शेष शर्तें यथावत् रहेगी।

नगर आयुक्त
मेदिनीनगर नगर निगम

PR 297600 Palamu(23-24).D

पंचायत सचिवों के बीच 24 को सीएम बांटेंगे नियुक्ति पत्र

रांची। राज्य के सभी जिलों में पंचायत सचिवों की नियुक्ति का रास्ता साफ हो गया है। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन 1632 पंचायत सचिवों को 24 मई को रांची में नियुक्ति पत्र सौंपेंगे। इसकी कार्य योजना तैयार की जा रही है। पंचायती राज विभाग ने सभी जिलों के उपायुक्तों को पत्र लिखा है ओर अपने जिले में अनुशंसित पंचायत सचिवों की नियुक्ति के लिए कार्रवाई करने का निर्देश दिया है। सभी जिलों में इसकी प्रक्रिया भी प्रारंभ भी कर गयी है। 2017 में ही राज्य कर्मचारी चयन आयोग से इनकी नियुक्ति की अनुशंसा की गयी थी, लेकिन कार्मिक विभाग के एक पत्र की वजह से नियुक्ति रूकी हुई थी। अब विभाग ने नियुक्ति की रोक को हटा दिया है। इसके बाद सभी की नियुक्ति की जायेगी। पंचायत सचिव की नियुक्ति होने से पंचायतों में कार्य प्रणाली बेहतर होगी।

JAPIT
Jharkhand Agency for Promotion of Information Technology

(An Autonomous body under Department of Information Technology & e-Governance, Govt of Jharkhand)
Ground Floor, Engineer's Hostel – I, Near Golchakkar, Dhurwa, Ranchi, Jharkhand
Phone. 0651-2401044, 2401047 email: japit_doit@rediffmail.com

CORRIGENDUM-VI

Selection of System Integrator for Upgradation, Operation and Maintenance of Jharkhand State Data Centre 2.0 (JHSDC 2.0)

Tender Ref No. JAPIT/JH-SDC2.0/01/2023

With reference to the above tender, it is hereby informed Corrigendum VI can be downloaded from the Jharkhand e-Procurement Portal (https://jharkhandtenders.gov.in) other terms and conditions will remain same.

PR Ref No. 289890

Sd/-
CEO, JAP-IT

PR 297589 Information Technology(23-24)#D

कार्यपालक अभियन्ता का कार्यालय,
लघु सिंचाई प्रमंडल, गुमला
अति अल्पकालीन निविदा आमंत्रण सूचना संख्या 03 वर्ष 2023–24

1. विभाग का नाम :– जल संसाधन (लघु सिंचाई) विभाग, झारखंड सरकार, रांची।
2. विज्ञापन दाता का नाम :– कार्यपालक अभियन्ता, लघु सिंचाई प्रमंडल, गुमला।
3. परिमाण विपत्र की बिक्री की तिथि :– 22.05.2023 से 25.05.2023 तक (3:00 बजे अपराह्न तक)
4. निविदा प्राप्त करने की तिथि एंव समय :– 26.05.2023 को 03:00 बजे अपराह्न तक
5. निविदा खोलने की तिथि एंव समय :– 26.05.2023 को 3:30 बजे अपराह्न
6. परिमाण विपत्र बिक्री का स्थान :– (1) कार्यपालक अभियन्ता, लघु सिंचाई प्रमंडल, गुमला। (2) सहायक अभियन्ता, लघु सिंचाई अनुमंडल, गुमला।
7. निविदा प्राप्ति एंव निविदा खोलने का स्थान :– कार्यालय परिसर, लघु सिंचाई प्रमंडल, गुमला।
8. परिमाण विपत्र का मूल्य :– राष्ट्रीयकृत बैंक द्वारा निर्गत बैंक ड्राफ्ट जो राष्ट्रीयकृत बैंक, गुमला में भुगतेय हो, मान्य होगा।
9. कार्य की विस्तृत विवरणी :–

ग्रुप सं0	योजना का नाम	प्रखंड	योजना मद का नाम	परिमाण विपत्र की राशि (रू0 में)	अग्रधन की राशि (रू0 में)	परिमाण विपत्र का मूल्य (रू0 में)	कार्य समाप्ति की अवधि	निविदा दाता की समुचित श्रेणी
1	Rajyakrit Middle School Pojenga का चाहरदीवारी निर्माण।	पालकोट	DMFT	3911800.00	78300.00	5000.00	तीन माह	श्रेणी–III
2	Project High School Pojenga का चाहरदीवारी निर्माण।	पालकोट	DMFT	4255100.00	85200.00	5000.00	तीन माह	श्रेणी–III
3	Rajyakrit Upgraded High School Malai With Gate (Part – A) का चाहरदीवारी निर्माण।	पालकोट	DMFT	3235000.00	64700.00	5000.00	तीन माह	श्रेणी–III
4	Rajyakrit Upgraded High School Malai (Part – B) का चाहरदीवारी निर्माण।	पालकोट	DMFT	3193600.00	63900.00	5000.00	तीन माह	श्रेणी–III
5	Rajyakiya Basic School Baghima का चाहरदीवारी निर्माण।	पालकोट	DMFT	3922500.00	78500.00	5000.00	तीन माह	श्रेणी–III
6	Rajyakrit High School Baghima With Gate (Part-A) का चाहरदीवारी निर्माण।	पालकोट	DMFT	2956700.00	59200.00	5000.00	तीन माह	श्रेणी–III
7	Rajyakrit High School Baghima (Part - B) का चाहरदीवारी निर्माण।	पालकोट	DMFT	2914900.00	58300.00	5000.00	तीन माह	श्रेणी–III
8	Rajyakrit Primary School Bakaspur का चाहरदीवारी निर्माण।	रायडीह	DMFT	2632400.00	52700.00	5000.00	तीन माह	श्रेणी–III
9	Rajyakrit High School Bargaon का चाहरदीवारी निर्माण।	सिसई	DMFT	3123800.00	62500.00	5000.00	तीन माह	श्रेणी–III
10	Rajyakrit High School Kumhari का चाहरदीवारी निर्माण।	बसिया	DMFT	4746300.00	95000.00	5000.00	तीन माह	श्रेणी–III
11	Rajyakrit Upgraded + 2 High School Kurkura का चाहरदीवारी निर्माण।	कामडारा	DMFT	4011200.00	80300.00	5000.00	तीन माह	श्रेणी–III
12	Govt. UPG MS Girls Jairagi का चाहरदीवारी निर्माण।	डुमरी	DMFT	3656400.00	73200.00	5000.00	तीन माह	श्रेणी–III
13	Govt. UPG MS Manjira का चाहरदीवारी निर्माण।	बिशुनपुर	DMFT	2630000.00	52600.00	5000.00	तीन माह	श्रेणी–III
14	Govt. PS Serka का चाहरदीवारी निर्माण।	बिशुनपुर	DMFT	3979600.00	79600.00	5000.00	तीन माह	श्रेणी–III
15	Govt. MS Toto का चाहरदीवारी निर्माण।	गुमला	DMFT	2607800.00	52200.00	5000.00	तीन माह	श्रेणी–III
16	Govt. MS Kesipara का चाहरदीवारी निर्माण।	गुमला	DMFT	2807000.00	56200.00	5000.00	तीन माह	श्रेणी–III

निविदा की शर्तें :– 1. बैंक ड्राफ्ट निबंधित संवेदक के स्वयं के खाता से निर्गत हुआ हो तथा बैंक ड्राफ्ट की वैद्यता अवधि निविदा की प्रकाशन की तिथि से तीन माह तक का हो, मान्य होगा।
2. निविदा में 10% न्युनतम दर से अधिक न्युनतम दर उद्धृत करने पर प्राक्कलित राशि का 20% अथवा 30% अतिरिक्त जमा राशि का डाकघर साक्षी जमा पासबुक/बैंक द्वारा निर्गत फिक्स डिपोजिट निविदा के साथ जमा करना अनिवार्य होगा।
3. जो निम्न है:– 1. 10% से 20 प्रतिशत कम दर की राशि का 20% तक।
2. 20% प्रतिशत से अधिक कम दर की राशि का 30% अतिरिक्त जमानत राशि देय होगा।
10. निविदा से संबंधित सभी सूचना अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय के सूचनापट पर देखा जा सकता है।

E-mial ID – eemidgum@gmail.com.

कार्यपालक अभियंता,
लघु सिंचाई प्रमण्डल, गुमला।

PR 297562 Minor Irrigation(23-24)D

प्रदेश कार्यसमिति की बैठक में बनी भावी सांगठनिक कार्यक्रमों की रूपरेखा

महासंपर्क के रास्ते सभी 14 लोस सीटों पर लहरायेगा भगवा परचम : भाजपा

भाजपा प्रदेश इकाई मिशन 2024 को लेकर हुई रेस

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। भाजपा ने महासंपर्क के रास्ते सभी 14 लोकसभा क्षेत्रों में भगवा परचम लहराने का संकल्प लिया है। यह संकल्प बीते मंगलवार को एक दिवसीय प्रदेश कार्य समिति की बैठक में लिया गया है। इस दौरान पार्टी के दिग्गजों लक्ष्मीकांत वाजपेयी, दीपक प्रकाश, बाबूलाल मरांडी, अर्जुन मुंडा, रघुवर दास व समीर उरांव ने केंद्र की उपलब्धियों को घर-घर पहुंचाने का आह्वान किया। साथ ही, महागठबंधन सरकार की नाकामियों का पर्दाफास करने पर बल दिया गया। भाजपा ने केंद्र में फिर नरेंद्र मोदी की सरकार बनाने के लिए झारखंडवासियों से समर्थन मांगा है। प्रदेश कार्य समिति में 30 मई से 30 जून तक राज्य के सभी गांवों में महासंपर्क अभियान चलाने का फैसला लिया गया है। इस क्रम में कार्यकर्ता घर-घर जाकर नौ वर्षों के मोदी सरकार की उपलब्धियां बतायेंगे और समर्थन मांगेंगे। राज्य सरकार के भ्रष्टाचार के किस्से भी सुनाये जायेंगे। भाजपा ने लोकसभा स्तर पर जनसभा करने का फैसला लिया है। इसके अलावा विधानसभा से बूथ स्तर तक के कार्यक्रम तय किये गये। इस क्रम में 17 से 21 मई के बीच जिला कार्यसमिति की बैठक व 18 से 24 मई के बीच मंडलों में बैठक होगी। आजीवन सहयोग निधि अभियान को सफल बनाने की भी अपील की गयी। प्रदेश प्रभारी लक्ष्मीकांत वाजपेयी के अनुसार बूथ कमेटियों की जांच करायी जायेगी। कर्नाटक चुनाव का दृष्टांत देते हुए कहा कि वहां कई बूथ कमेटियां फर्जी पाई गईं थी। कश्मीर से कन्याकुमारी तक मोदी के हाथ में सुरक्षित है। हम हर घर की चौखट पर जाएंगे, प्रधानमंत्री के संदेश को पहुंचायें। दीपक प्रकाश ने कहा था कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को तीसरी बार भी जनता का आशीर्वाद मिलेगा। 9 वर्ष भारत के स्वाभिमान व सम्मान का वर्ष रहा है।

बाबूलाल मरांडी ने कहा कि महासंपर्क अभियान में केंद्र सरकार की उपलब्धियों के साथ राज्य की भ्रष्ट सरकार की लूट, झूठ व भ्रष्टाचार भी उजागर करेंगे। रघुवर दास ने कहा कि केंद्र के 9 वर्षों की उपलब्धियां बेमिसाल हैं। केंद्र भ्रष्टाचार मुक्त भारत के लिए दृढ़ संकल्पित है।

अर्जुन मुंडा ने कहा कि मोदी सरकार के 9 वर्ष आदिवासी-दलित और पिछड़े समाज के उत्थान का वर्ष है। कुल मिलाकर यह कि भाजपा ने मिशन 2024 को लेकर रेस है। झारखंड के सभी 14 लोकसभा सीट पर भगवा परचम लहराने के लिये शाम,दाम, दंड -भेद की नीति अपनायी जा रही है। विशेषकर आदिवासियों के लिये आरक्षित सीटों पर कार्यकर्ताओं ने अभी से पसीना बहाना शुरू कर दिया है। राजनीतिक प्रेक्षकों का मानना है कि चुनाव प्रबंधन को लेकर भाजपा ने अभी बढ़त हासिल की है। यहां विपक्षी दलों में कार्यक्रमों का अभाव देखा जा रहा है। जबकि, भाजपा ने चुनाव को लेकर भावी रूपरेखा व कार्यक्रम पर काम करना शुरू कर दिया है।

केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा ने सीनी में रेल चक्का निर्माण को लेकर अश्विनी वैष्णव से चर्चा की

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। जनजातीय मामलों के मंत्री अर्जुन मुंडा ने बुधवार को रेलवे एसंचार और इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव और पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस व शहरी विकास मंत्री हरदीप सिंह पुरी से मुलाकात की। उनसे अपने संसदीय क्षेत्र खूंटी से संबंधित कुछ समस्याओं और विकास के बारे में चर्चा की। उन्होंने रेल मंत्री से सरायकेला खरसावां स्थित सीनी में रेल चक्का निर्माण के लिए पहल करने, नामकुम-कांड्रा रेल लाइन का काम शीघ्र शुरू करने, हटिया-बंडामुंडा रेल खंड में कंहरवा-तांती-पवोटोनिया-ओर्गा स्टेशन के बीच रेल लाइन दोहरीकरण का कार्य, सीनी और मुंडाटांड रेलवे गेट के बीच सड़क निर्माण के सहित कई ट्रेनों के ठहराव के बारे में चर्चा की। मंत्री हरदीप पुरी से उनके कार्यालय में मुलाकात कर क्षेत्र की समस्याओं और विकास के बारे में चर्चा हुई।

सिंहभूम लोस सीट पर झामुमो ने ठोंका दावा, कांग्रेस सकते में...

साजिद हुसैन

चक्रधरपुर। सिंहभूम संसदीय सीट को लेकर झामुमो-कांग्रेस में अभी से ही रस्साकशी तेज हो गई है। कांग्रेस के कब्जे वाली सिंहभूम सीट पर अब झामुमो ने दावा ठोंक दिया है। बुधवार को चाईबासा में झामुमो की जिला स्तरीय बैठक में तीन विधायकों की उपस्थिति में सिंहभूम सीट पर दावेदारी की गई है। जिला झामुमो कमिटी के इस दावे से कांग्रेस खेमे में हलचल मच गई है। मालूम हो कि वर्तमान में सिंहभूम सीट से कांग्रेस की कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष गीता कोड़ा सांसद है। हालांकि झामुमो के दावेदारी के बाद कांग्रेस की तरफ से किसी तरह की प्रतिक्रिया नहीं आई है।

चाईबासा के झामुमो विधायक दीपक बिरूवा ने बैठक के दौरान कहा कि सिंहभूम सीट पर झामुमो का हक बनता है। उन्होंने यहां तक कहा कि पार्टी प. सिंहभूम लोकसभा सीट से प्रत्याशी खड़ा करती है, तो जीत की जिम्मेदारी मेरी होगी। उन्होंने बैठक में इस सीट के लिए पार्टी प्रत्याशी का नाम भी प्रस्तावित किया। उन्होंने कहा कि अगर लोस चुनाव में चक्रधरपुर के झामुमो विधायक सुखराम उरांव या मझगांव से विधायक निरल पूर्ती को प्रत्याशी बनाता है तो जीत निश्चित है। वहीं विधायक सुखराम उरांव ने कहा सिंहभूम सीट पर झामुमो का ही दावा बनता है। पार्टी के कार्यकर्ताओं का भी यही मत है। उन्होंने कहा कि इसे लेकर जल्द ही वह पार्टी के केंद्रीय नेतृत्व को अवगत कराएंगे। मालूम हो कि सिंहभूम की छह विस सीट में से पांच सीट झामुमो के खाते में है। इसमें चक्रधरपुर, चाईबासा, मझगांव, मनोहरपुर व सरायकेला विधानसभा सीट शामिल है जबकि जगन्नाथपुर विस सीट से कांग्रेस के विधायक हैं। मालूम हो कि पिछले कुछ महीनों से झामुमो के अंदरखाने में सिंहभूम सीट को लेकर दावेदारी की चर्चा जारी थी। लेकिन अब झामुमो ने इस दावेदारी को पुख्ता कर कांग्रेस को सकते में डाल दिया है।

खबर एक नजर में

एनआइए ने कृष्णा हांसदा को लिया रिमांड पर

रांची। 15 लाख के इनामी नक्सली सह रीजनल कमेटी सदस्य कृष्णा हांसदा उर्फ कृष्णा मांझी उर्फ अविनाश दा उर्फ आनंद को एनआइए ने रिमांड पर लिया है। उस पर गिरिडीह जिले के पीरटांड थाना क्षेत्र के मंडलडीह, लेधवा निवासी से एनआइए 20 मई तक पूछताछ करेगी। कृष्णा को पारसनाथ इलाके का आतंक हांसदा को जनवरी में पुलिस ने गिरफ्तार किया था।

एनोस एक्का की पत्नी मेनन को मिली बेल

रांची। मधु कोड़ा कैबिनेट में मंत्री रहे एनोस एक्का की पत्नी मेनन एक्का को सुप्रीम कोर्ट ने नियमित जमानत दे दी है। जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस जीके माहेश्वरी की बेंच में मेनन एक्का की जमानत अर्जी पर सुनवाई हुई। अदालत ने हिरासत अवधि (कस्टडी) को देखते हुए जमानत अर्जी मंजूर कर ली। मेनन एक्का की ओर से सुप्रीम कोर्ट के वरीय अधिवक्ता सिद्धार्थ दवे और गौरव अग्रवाल ने बहस की। मनी लॉन्ड्रिंग केस में दोषी मेनन एक्का को झारखंड हाइकोर्ट ने जमानत देने से इनकार कर दिया था, जिसके बाद उन्होंने सुप्रीम कोर्ट से जमानत के लिए गुहार लगाई थी।

नियम का उल्लंघन कर रहे मंत्री बन्ना : सरयू राय

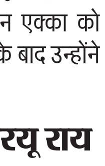

रांची। निर्दलीय विधायक सरयू राय ने कहा है कि स्वास्थ्य मंत्री बन्ना गुप्ता मुख्यमंत्री के अधिकार को चुनौती दे रहे हैं। कहा कि मंत्री जमशेदपुर की डॉक्टर रीना सिंह के पदस्थापन संबंधी फाइल को ढाई महीने से दबाए बैठे हैं। कहा कि स्वास्थ्य विभाग की स्थापना समिति की बैठक में डॉक्टर के पदस्थापन के लिए मंजूरी मिल चुकी है। मुख्यमंत्री की स्वीकृति के लिए फाइल भेजी जानी है लेकिन मंत्री फाइल आगे नहीं बढ़ा रहे हैं। नियम का उल्लंघन कर वे सीएम के अधिकार को चुनौती दे रहे हैं।

प्रवासी मजदूरों की मृत्यु पर उनके शव पैतृक आवास तक लाने के लिए मिलेंगे ₹50 हजार

रांची। गंभीर अप्राकृतिक आपदा, घटना में प्रवासी श्रमिकों की मृत्यु अथवा सामान्य मृत्यु होने की स्थिति में उनके शव को पैतृक निवास स्थान में लाने के लिए दी जानेवाली सहायता राशि में बढ़ोतरी कर दी गयी है। इसके तहत पंजीकृत प्रवासी कर्मकार लाभुकों व अपंजीकृत कर्मकार की मृत्यु होने पर उनके शव को पैतृक आवास तक लाने के लिए 50 हजार रुपये तक की सहायता राशि दी जायेगी। वहीं, झारखंड से बाहर रह रहे प्रवासी श्रमिकों की सामान्य तरीके से मृत्यु होने पर भी उनके शव को लाने के लिए 50 हजार रुपये तक की सहायता दी जायेगी। इस संबंध में श्रम नियोजन एवं प्रशिक्षण विभाग ने अधिसूचना जारी कर दी है।

खरीफ सह मिलेट्स कार्यशाला में बोले कृषि मंत्री बादल पत्रलेख, अधिकारियों से कहा

किसानों का भरोसा हासिल करना जरूरी

किसान कल्याण के लिए 2019 से अबतक ₹4500 करोड़ जारी

राज्य की जीडीपी में कृषि क्षेत्र की भागीदारी 14 से 20 प्रतिशत करने की आवश्यकता बतायी, किसानों की समस्याओं को दूर करने पर बल दिया।

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। कृषि मंत्री बादल पत्रलेख ने कहा कि अधिकारियों को किसानों का भरोसा जीतने के लिए वचनबद्ध होकर काम करना चाहिये। श्री पत्रलेख बुधवार को हेसाग स्थित पशुपालन भवन सभागार में खरीफ सह मिलेट्स कार्यशाला में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि राज्य के जीडीपी में कृषि क्षेत्र की भागीदारी को 14 प्रतिशत से 20 प्रतिशत किये जाने की जरूरत है। उन्होंने किसानों की समस्याओं को प्राथमिकता के आधार पर दूर करने पर बल दिया। राशि का आवंटन और खर्च कर देना ही विभाग का काम नहीं है। बल्कि किसानों की समस्याओं को करीब से देखने की जरूरत है। सभी पदाधिकारियों को ऐसे जिलों से सीखने की जरूरत है, जिस जिले में उत्कृष्ट तरीके से योजनाओं का क्रियान्वयन किया गया है।

उन्होंने कहा कि किसानों को अनुदानित दर पर बीज उपलब्ध कराया जा रहा है। लेकिन किसानों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने में हम पीछे क्यों रह जा रहे हैं, इस पर काम करने की जरूरत है। किसानों को विभिन्न स्तर पर सभी योजनाओं का लाभ अगर नहीं मिलता है। तो पदाधिकारी अपनी कार्यशैली में सुधार करें। चेकडैम, खदानों के पानी से सिंचाई की जा सकती है। बड़े वाटर रिजर्ववायर बनाकर हम आगे बढ़ सकते हैं। लेकिन उसके लिए पदाधिकारियों को योजना बनाकर काम करना होगा। एश्योर्ड इरिगेशन एरिया को बढ़ाना होगा।

2019 से अब तक कृषि विभाग ने करीब 4500 करोड़ रुपये किसान कल्याण के लिए दिए हैं। 5 लाख किसानों का लोन माफ किया गया है। साथ ही, 9.38 लाख किसानों को पिछली सरकार से बकाया बीमा का लाभ भी दिलवाया गया है। मुख्यमंत्री सुखाड़ राहत के तहत 3500 रुपये प्रति एकड़ प्रति किसान दिया गया।

इस अवसर पर अबू बकर सिद्दीख ने पदाधिकारियों को कहा कि खरीफ और रबी दोनों ही फसलें काफी महत्वपूर्ण हैं। राज्य में करीब 18 लाख हेक्टेयर भूमि पर खरीफ फसल होती है इसका ज्यादातर हिस्सा बारिश पर निर्भर है। मौके पर चंदन कुमार आदि अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे।

अमन श्रीवास्तव की गिरफ्तारी से रांची में खूनी संघर्ष की आशंका टली!

पांडेय गिरोह व अमन श्रीवास्तव गैंग के बीच 1990 से है अदावत

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। हजारीबाग कोर्ट परिसर में गैंगस्टर सुशील श्रीवास्तव हत्याकांड के बाद स्पेशल ब्रांच ने हजारीबाग, रामगढ़ और जमशेदपुर के बाद रांची में गैंगवार होने की आशंका जाहिर की थी। गैंगवार पांडेय गिरोह व अमन श्रीवास्तव गिरोह के बीच होना था। आठ सालों तक पुलिस की मुस्तैदी के कारण गैंगवार टलता जा रहा था।

इधर, लगातार अमन श्रीवास्तव गैंग के द्वारा पतरातू इलाके में फायरिंग और व्यवसायियों से लेवी मांगने के मामले में सीआइडी, एटीएस, रामगढ़ पुलिस और रांची पुलिस अमन श्रीवास्तव की तलाश कर रही थी। स्पेशल ब्रांच ने आशंका व्यक्त की थी कि पांडेय गैंग और सुशील श्रीवास्तव के गैंग के बीच की यह अदावत अब रांची को निशाने में ले सकती है। दोनों ही आपराधिक गिरोह का रांची से पुराना नाता रहा है। इसी शहर के अरगोड़ा इलाके में सुशील श्रीवास्तव की पत्नी मीनू श्रीवास्तव पर किशोर पांडेय के शार्गिदों ने 3 जून, 2015 में जानलेवा हमला किया था। दूसरी तरफ पांडेय गैंग से बदला लेने के लिए सुशील श्रीवास्तव ने रांची जेल में ही डॉन अनिल शर्मा से हाथ मिलाया था। ऐसे में 1990 से ही दोनों आपराधिक गिरोह के बीच अदावत चल रहा था। भले ही भोला पांडेय, किशोर पांडेय और सुशील श्रीवास्तव मारे जा चुके हैं, पर इनका गैंग अभी भी जिंदा है।

पांडेय गिरोह की विरासत किशोर की पत्नी के पास

गैंगस्टर भोला पांडेय और किशोर पांडेय के मारे जाने के बाद यह लगा था कि पांडेय गैंग कमजोर हो चुका है, पर हजारीबाग सिविल कोर्ट में सुरक्षा व्यवस्था को धत्ता बताते हुए अपराधियों ने गैंगस्टर सुशील श्रीवास्तव को गोलियों से भूनकर जता दिया कि ये अदावत खत्म नहीं हुई है। अपराध जगत में यह भी चर्चा जोरों पर है कि किशोर पांडेय के मारे जाने के बाद उसकी पत्नी ने गैंग की कमान संभाल ली है। दूसरी तरह पारिवारिक सूत्रों के मुताबिक, किशोर पांडेय की हत्या के बाद उसकी भाभी और छोटा भाई बबलू पांडेय भी गैंग संभाल सकता है।

भोला पांडेय का भतीजा था किशोर

किशोर पांडेय पतरातू बस्ती निवासी गैंगस्टर भोला पांडेय का भतीजा था। 2009 में भोला पांडेय के मारे जाने के बाद गैंग की कमान उसने संभाल ली थी। हालांकि, कच्ची उम्र से ही वह अपराधिक घटनाओं को अंजाम देने लगा था। 2007 में रामगढ़ सयाल निवासी मो सकरूल्ला और खलारी में दो व्यवसायियों की हत्या कर दी थी। 2009 में रांची के फाइनेंसर व कोयला व्यवसायी राजकुमार धानुका उर्फ राजू धानुका हत्याकांड के बाद वह सुर्खियों में आया था। अंडरवर्ल्ड में उसकी पहचान एक शूटर के रूप में रही थी।

रिटायर्ड फौजियों को बनाया था बॉडीगार्ड

किशोर जानता था कि उसकी जान खतरे में हैं। इसलिए उसने सेना से रिटायर्ड कुछ फौजियों को अपनी सुरक्षा में लगा रखा था। 2009 में राजू धानुका की हत्या के बाद पुलिस ने 2010 में किशोर पांडेय को कोलकाता से पकड़ा था। वह करीब ढाई साल तक जेल में रहा। रामगढ़ जिले के पतरातू बस्ती निवासी गैंगस्टर किशोर पांडेय की जमशेदपुर के कदमा में पिछले साल 15 अक्टूबर, 2014 को गोलियों से छलनी कर दिया गया था। किशोर पांडेय की हत्या की खबर सुनकर पूरा पतरातू इलाका सदमे में था।

रैयती जमीन पर किया कब्जा फिर दर्ज कराया फर्जी मुकदमा

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। रांची के इटकी थाना क्षेत्र के तरगड़ी गांव में पहले तो जमीन देखरेख करनेवालों ने जमीन पर कब्जा कर लिया। जब इसका विरोध किया गया तो आरोपियों ने एसटी/एससी थाने में फर्जी तरीके से मुकदमा भी दर्ज करा दिया। अब रैयत फर्जी मुकदमे को निरस्त करने और आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई करने को लेकर इडी की शरण में जाने को विवश है। रैयत विनोद पोददार ने कहा कि उन्हीं के वंशज की जमीन उनसे लूटी जा रही है। जब वे जमीन पर अपना मालिकाना हक लेने के लिए गए तो उनके साथ न मारपीट की गई, बल्कि जान से मारने की धमकी भी दी गई।

इस मामले में संजय महतो, शाहिद जावेद ने कहा कि उनलोगों के साथ अभद्र व्यवहार किया गया। इतना ही नहीं, जमीन पर कब्जा करनेवालों ने उनके विरूद्ध एसटी/ एससी थाने में फर्जी मुकदमा भी दर्ज कर दिया है। फर्जी मुकदमा दर्ज करने के मामले में संजय महतो और शाहिद जावेद एसएसपी, ग्रामीण एसपी, इटकी थाना को आवेदन दे चुके हैं। संजय महतो का कहना है कि जिस जमीन को आदिवासी जमीन बताया जा रहा है वह मूल रूप से सदान की जमीन है।

जमीन देने के नाम पर ₹46 लाख की ठगी

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। अरगोड़ा थाना में एक एकड़ जमीन देने के नाम पर जालसाजी और धोखा कर 46 लाख की ठगी करने का मामला प्रकाश में आया है। इस संबंध में अरगोड़ा निवासी शनि कुमार साहू ने अरगोड़ा के पीपर टोली निवासी मीना तिग्गा और उसके भाई कार्तिक तिग्गा के खिलाफ जमीन का एकरनामा करके 46 लाख रुपये लेकर जमीन नहीं देने का आरोप लगाया है। साथ ही एसटी एससी केस में फंसाने की भी धमकी दी है।

25 से भरे जायेंगे डिप्लोमा स्तर की संयुक्त प्रतियोगिता परीक्षा के फॉर्म

जेएसएससी ने जारी की परीक्षा संबंधी अधिसूचना, 24 जून की मध्यरात्रि तक फॉर्म ऑनलाइन भरे जायेंगे

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। राज्य में डिप्लोमा स्तर संयुक्त प्रतियोगिता के तहत विभिन्न पदों के लिए 25 मई से फॉर्म भरे जायेंगे। झारखंड कर्मचारी चयन आयोग- जेएसएससी ने इससे संबंधित सूचना जारी कर दी है। इसमें बताया गया है कि फॉर्म 24 जून को मध्यरात्रि तक ऑनलाइन भरे जायेंगे। आवेदन से संबंधित विस्तृत जानकारी आयोग की वेबसाइट पर उपलब्ध है। अभ्यर्थी फॉर्म में दर्ज अर्हतानुसार एवं शैक्षणिक योग्यता और निर्धारित आयु सीमा के तहत ऑनलाईन आवेदन कर सकते हैं। यह परीक्षा कनीय अभियंता (यांत्रिक), मोटरयान निरीक्षक और कनीय अभियंता (विद्युत) के पद के लिए ली जायेगी।

28 जून की मध्यरात्रि तक फॉर्म के प्रिंटआउट को खुला रहेगा लिंक : आयोग द्वारा जारी अधिसूचना के अनुसार 26 जून की मध्यरात्रि तक परीक्षा शुल्क भुगतान व फोटो एवं हस्ताक्षर अपलोड कर आवेदन पत्र का प्रिंटआउट लेने के लिए 28 जून की मध्यरात्रि तक लिंक खुला रहेगा। वहीं, 29 जून से 1 जुलाई के मध्यरात्रि तक पुनः लिंक खोल दी जायेगी ताकि, अभ्यर्थी ऑनलाईन आवेदन पत्र में अभ्यर्थी का नाम, जन्मतिथि, ई-मेल व मोबाइल नंबर छोड़कर किसी भी अशुद्ध प्रवष्टि को संशोधित कर सकें।

क्या होगा परीक्षा का स्वरूप : इन पदों के लिये केवल मुख्य परीक्षा लिया जायेगा। इसमें सभी प्रश्न वस्तुनिष्ठ एवं बहुविकल्पीय उत्तर देने होंगे। एक प्रश्न तीन अंक का होगा। प्रत्येक सही उत्तर के लिये तीन अंक दिए जायेंगे। प्रत्येक गलत उत्तर के लिए एक अंक की कटौती की जायेगी। प्रश्न पत्र हिंदी और अंग्रेजी में होगा। कुल 120 प्रश्न होंगे और परीक्षा अवधि दो घंटे की होगी।

शिक्षा विभाग में लंबित मामलों का निष्पादन नहीं होने से शिक्षक-अभ्यर्थी परेशान

रांची। स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग लंबित मामलों के निष्पादन में रूचि नहीं ले रहा है। विभाग में 6 ऐसे मामले लंबित हैं, जिनके निष्पादन से अधिसंख्य शिक्षकों को लाभ मिलेगा। परंतु निष्पादन नहीं होने से शिक्षक-अभ्यर्थियों को परेशानी हो रही है। सीटेट और बीएड उत्तीर्ण अभ्यर्थी शिक्षक बहाली के लिए फॉर्म नहीं भर पा रहे हैं। इस कारण 14 वर्षों से विश्वविद्यालयों में शिक्षकों की बहाली नहीं हो सकी है। शिक्षकों की प्रोन्नति भी लंबित है। झारखंड शिक्षक प्राधिकरण का अध्यक्ष पद रिक्त रहने से कई परेशानियां खड़ी हो गयी हैं।

इन मामलों का निपटारा नहीं कर रही है सरकार : सीटेट अभ्यर्थियों की मांग है कि झारखंड के शिक्षक बहाली में उनको भी बैठने दिया जाये। 2015 से 2021 के बीच स्नातक किये विद्यार्थी शिक्षक का फॉर्म नहीं भर पार रहे हैं। विश्वविद्यालयों में 2008 के बाद सहायक प्राध्यापकों की बहाली नहीं हुई। मिडिल व हाई स्कूलों में शिक्षकों का प्रमोशन रूका है। हाईकोर्ट के निर्देश के बाद भी झारखंड शिक्षक प्राधिकरण में अध्यक्ष नियुक्त नहीं किया गया है।

सुनवाई के दौरान डीजीपी, डीजी सीआइडी और रांची एसएसपी रहे हाजिर

हाइकोर्ट ने राज्य सरकार से पूछा- रांची हिंसा मामले में कुछ केस सीआइडी को क्यों सौंपी?

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। रांची में 10 जून को हुई हिंसा मामले पर झारखंड हाईकोर्ट ने राज्य सरकार को स्टेट्स रिपोर्ट प्रस्तुत करने का निर्देश दिया है। साथ ही प्रार्थी को भी कहा है कि वह अगर राज्य सरकार के जवाब पर अपना प्रति उत्तर देना चाहते हैं तो भी दे सकते हैं। कोर्ट ने राज्य सरकार से पूछा है कि 10 जून हिंसा मामले में कुछ केस को सीआईडी को क्यों सौंपा गया? कोर्ट ने मामले की सुनवाई 21 जून निर्धारित की है। इससे पहले सुनवाई के दौरान राज्य के गृह सचिव, डीजीपी, रांची एसएसपी, डीजी सीआईडी कोर्ट में उपस्थित हुए।

उनके द्वारा कोर्ट को बताया गया कि मामले में जांच जारी है। जिस पर कोर्ट ने इन सभी अधिकारियों की अगली सुनवाई में उपस्थिति से छूट प्रदान की है। प्रार्थी की ओर से अधिवक्ता राजीव कुमार ने पैरवी की। दरअसल, पूर्व की सुनवाई में कोर्ट ने सरकार से मौखिक पूछा था कि रांची हिंसा को लेकर दर्ज कुछ केस सीआईडी तथा कुछ पुलिस अनुसंधान कर रही है। ऐसा कर अनुसंधान को खत्म करने की कोशिश की जा रही है, ताकि सीआईडी और पुलिस की रिपोर्ट में कुछ अंतर आ जाए और फिर जांच खत्म हो जाए या तो पूरी केस की जांच सीआईडी से कराई जानी चाहिए थी या पूरा केस पुलिस से जांच कराना चाहिए था। ताकि जांच में कोई विरोधाभास न आ सके। कोर्ट ने मौखिक यह भी कहा था कि यह कौन सी प्रशासनिक अनिवार्यता थी जिसके तहत घटना के समय वहां मौजूद रांची के तत्कालीन एसएसपी को स्थानांतरित कर वेटिंग फॉर पोस्टिंग में रखा गया था।

बता दें कि रांची हिंसा मामले में दायर पंकज यादव की जनहित याचिका में हैदराबाद के सांसद असदुद्दीन ओवैसी, सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी ऑफ इंडिया के महासचिव यास्मीन फारूकी समेत रांची उपायुक्त, एसएसपी, मुख्य सचिव, एनआईए, ईडी को प्रतिवादी बनाया है। उन्होंने अदालत से मामले की एनआईए जांच कराकर झारखंड संपत्ति विनाश और क्षति निवारण विधेयक-2016 के अनुसार आरोपियों के घर को तोड़ने का आदेश देने का आग्रह किया है। याचिका में इस घटना को प्रायोजित बताकर एनआईए से जांच करके यह पता लगाने का आग्रह किया है कि किस संगठन ने फंडिंग कर घटना को अंजाम दिया। नुपुर शर्मा के बयान पर जिस तरह से पुलिस पर पत्थरबाजी हुई, प्रतिबंधित अस्त्र शस्त्र का प्रयोग हुए, धार्मिक स्थल पर पत्थरबाजी की गए यह प्रायोजित प्रतीत होता है।

'हो' विषय के लिए असिस्टेंट प्रोफेसर नियुक्ति मामले में जेपीएससी 31 जुलाई तक रिजल्ट जारी करे : हाइकोर्ट

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। स्थानीय विषय 'हो' के लिए असिस्टेंट प्रोफेसर नियुक्ति में साक्षात्कार लिए जाने के एक साल बीतने के बाद भी जेपीएससी द्वारा रिजल्ट जारी नहीं किए जाने को सरस्वती गगराई एवं अन्य की रिट याचिका की सुनवाई झारखंड हाईकोर्ट में हुई। हाईकोर्ट के न्यायमूर्ति डॉ एसएन पाठक की कोर्ट ने मामले में जेपीएससी को 31 जुलाई से पहले रिजल्ट जारी करने का निर्देश दिया। कोर्ट ने मामले को निष्पादित कर दिया।

प्रार्थी की ओर से अधिवक्ता शुभाशीष रसिक सोरेन ने पैरवी की। दरअसल, हो विषय के लिए असिस्टेंट प्रोफेसर नियुक्ति प्रक्रिया वर्ष 2018 में शुरू हुई थी। कतिपय कारणों से वर्ष 2019 में इस प्रक्रिया में रुकावट आई थी। बाद में वर्ष 2022 में फिर से प्रक्रिया शुरू हुई थी। जिसमें 28 मार्च 2022 को करीब 20 अभ्यर्थियों का साक्षात्कार लिया गया था लेकिन रिजल्ट जारी नहीं होने से प्रार्थी ने हाईकोर्ट में याचिका दाखिल की थी। असिस्टेंट प्रोफेसर में हो विषय के लिए करीब 7 पदों के लिए विज्ञापन जेपीएससी ने निकाला था।

सदर अस्पताल में घुटने के प्रत्यारोपण का पहली बार हुआ सफल ऑपरेशन

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। सदर अस्पताल में बुधवार को पहली बार टोटल नी रिप्लेसमेंट सर्जरी की गयी। जानकारी के अनुसार डोरंडा निवासी 69 वर्षीय मरीज मो हाफिज की कई साल से दोनों घुटनों की तकलीफ से परेशान थे। चल-फिर भी नहीं पा रहे थे।

सदर अस्पताल के डॉक्टरों ने उन्हें देखने के बाद घुटना प्रत्यारोपण का फैसला लिया। अस्पताल प्रबंधन ने इसके लिए जरूरी चीजों का इंतजाम किया। मरीज की सर्जरी आयुष्मान भारत योजना के तहत निःशुल्क किया गया। यह ऑपरेशन सदर अस्पताल के हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉ मुजम्मिल और डॉ प्रभात रंजन ने अन्य सहयोगियों के साथ किया। डॉक्टरों ने बताया कि ऑपरेशन कामयाब रहा।

खबर एक नजर में

यूपी के गवर्नर से मिले राज्यपाल राधाकृष्णन

रांची। झारखंड के राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन बुधवार को उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल से लखनऊ स्थित राज भवन में शिष्टाचार भेंट की। इस दौरान दोनों ने एक दूसरे से अपने-अपने प्रदेश पर चर्चा की।

डीएवी बरियातू के समर कैंप में बच्चों ने की मस्ती

रांची। डीएवी पब्लिक स्कूल बरियातु में गर्मियों की छुट्टी के दौरान समर कैंप वीक का आयोजन किया गया है। इसमें विद्यार्थियों को पेन्टिंग, म्यूजिक और स्पोर्ट्स से संबंधित गतिविधियां करायी जा रही हैं। प्रकृति के बीच बैठकर रंगों को उकेरना, सुर-ताल के उतार-चढ़ाव को समझना, खेल के नियमों के साथ खेल भावना, टीम भावना और नियमित अभ्यास का महत्व- इन सभी का ज्ञान वे आनन्द के साथ इन दिनों ले रहे हैं। प्राचार्य विनय कुमार पाण्डेय ने कहा कि समय कैम्प में विद्यार्थियों को अपनी रचनात्मकता और अन्य योग्यताओं को दर्शाने का मौका मिलता है। इस दौरान वे बहुत सी उपयोगी चीजें सीखते हैं जो उनके जीवन में काम आएगी।

बाजार समितियों में लागू नहीं हुई मार्केट फीस

रांची। राज्य में कृषि बिल पारित होने के बाद भी राज्य की मार्केट कमेटियों में मार्केट फीस लागू नहीं किया जा सका है। इस कारण न सिर्फ बाजार समितियों का राजस्व प्रभावित हो रहा है, बल्कि राज्य की कमेटियों का विकास भी थम सा गया है। राज्य की किसी कमेटी में न तो सड़क है और न बिजली-पानी। यहां तक कि नियमित सफाई भी नहीं हो रही है। इस मुख्य कारण बताया जा रहा है कि इसमें बाजार समिति के अधिकारी रूची नहीं ले रहे हैं। हालांकि व्यापारियों की मानें तो वह बाजार समिति के अधिकारियों पर भारी पड़ रहे हैं। यही कारण है कि मार्केटिंग बोर्ड की ओर से राज्य की बाजार समितियों में मार्केट फीस लागू करने को लेकर 17 मार्च को चैंबर अध्यक्ष के साथ-साथ व्यापारियों की बैठक बुलायी गयी थी परंतु बैठक से ठीक दो दिन पहले इस बैठक को अपरिहार्य कारणों से स्थगित कर दिया गया। वहीं बोर्ड और बाजार समिति के अधिकारी कहते हैं कि व्यापारियों के साथ मीटिंग नहीं पा रही है तो वो क्या कर सकते हैं।

वैश्य मोर्चा का प्रमंडलीय सम्मेलन 28 को, 10 सदस्यीय तैयारी समिति घोषित

रांची। झारखंड प्रदेश वैश्य मोर्चा की कोर कमिटि की बैठक में लिये गये निर्णय के अनुसार 28 मई को रांची में झारखंड प्रदेश वैश्य मोर्चा का प्रमंडलीय कार्यकर्ता सम्मेलन आयोजित किया जाएगा। यह सम्मेलन ओबीसी को 27 प्रतिशत आरक्षण, वैश्य आयोग का गठन, छोटे व्यापारियों, दुकानदारों की 10 लाख रुपये तक की ऋण माफी, सरकारी अधिकारियों, भू-माफियाओं की मिलीभगत से जमीन की लूट, 6 जुलाई को नई दिल्ली के जंतर-मंतर पर होने वाले महाधरना की तैयारी को लेकर आहूत की गई है। इस सम्मेलन में कार्यकर्ताओं की भागीदारी, व्यवस्था और प्रखंडों में बैठक कर प्रचार-प्रसार के लिए लोगों को प्रभारी नियुक्त किया गया है, जिसमें हीरानाथ साहु (कार्यकारी अध्यक्ष), अश्विनी कुमार साहु (वरीय उपाध्यक्ष), परशुराम प्रसाद (केंद्रीय उपाध्यक्ष, अधिवक्ता), इंदुभूषण गुप्ता (उप-प्रधान महासचिव), कपिल प्रसाद साहु (केंद्रीय महासचिव), हरिनाथ साहु (केंद्रीय महासचिव), गुड्डू साहा (केंद्रीय सचिव), रोहित कुमार साहु (जिलाध्यक्ष, रांची) रेणू देवी (अध्यक्ष, महिला मोर्चा) एवं हलधर साहु (अध्यक्ष, युवा मोर्चा) शामिल हैं। दक्षिणी छोटानागपुर प्रमंडल के सभी जिलों में निवास करने वाले केंद्रीय पदाधिकारियों, जिला अध्यक्ष, संयोजक एवं प्रकोष्ठ संगठन पदाधिकारी इस सम्मेलन को सफल बनाने सहयोग करेंगे।

कुछ खुद हैं गैंगस्टर बादशाह, तो कुछ वंश चला रहे गैंग!

कुबेर सिंह

रांची। पुलिस जब भी किसी गैंगस्टर को गिरफ्तार करती है तो एकबार फिर गैंग और गैंगस्टर के बीच बैचेनी बढ़ जाती है। गैंगस्टर अमन श्रीवास्तव की गिरफ्तारी के बाद से झारखंड में गैंगेस्टर्स राज और उसके खात्मे के लिए झारखंड पुलिस तत्पर है। कुछ गैंगस्टर्स का अभी भी अपने गैंग पर बादशाहत है तो कुछ गैंगस्टर के वंश ही गैंग चला रहे हैं। ऐसे ही गैंगस्टर्स की सूची में अनिल शर्मा, अखिलेश सिंह, सुशील श्रीवास्तव(मृत), भोला पांडेय (मृत), किशोर पांडेय(मृत), अमन श्रीवास्तव का दबदबा आज भी कायम है। कुछ की गैंगवार में हत्या हो चुकी है तो कुछ सलाखों के पीछे रहकर भी गैंग ऑपरेट कर रहे हैं।

सुशील श्रीवास्तव

कोयला माफिया के तौर पर कुख्यात सुशील श्रीवास्तव उर्फ बाबा का कई सालों तक इलाके पर प्रभुत्व रहा। इस वजह से सालों जेल में रहने और जेल को सुरक्षित माननेवाले सुशील की हत्या दो जून, 2016 को हजारीबाग सिविल कोर्ट में कर दी गई। बिहार-झारखंड के नेताओं से करीब का रिश्ता और भोला पांडेय के साथ रिश्ते बिगड़ने के बाद दोनों में अदावत छिड़ गई। सुशील ने साल 2009 में कोलकाता से रांची आने के क्रम में भोला पांडेय की हत्या करवा दी।

अनिल शर्मा

पिछले 3 दशक से आतंक का पर्याय बन चुके गैंगस्टर अनिल शर्मा भोमा सिंह हत्याकांड में सजायाफ्ता है। दो साल से जेपी नारायण कारा हजारीबाग में सजा काट रहा है। फिलहाल, वह रिम्स में इलाजरत है। गैंगस्टर पर जेल में रहते आपराधिक घटनाओं को अपने गुर्गों द्वारा अंजाम दिए जाने का आरोप लगने पर दुमका केंद्रीय कारा से उसे 2021 में 'द्रीय कारा हजारीबाग में स्थानांतरित किया गया था। अनिल शर्मा 23 साल से जेल में सजा काट रहा है। अनिल शर्मा के खिलाफ कई थानों में हत्या व रंगदारी समेत कई अपराध को लेकर इसके खिलाफ मामले दर्ज कराये गये थे। एक वक्त था, जब अपराध की दुनिया में अनिल शर्मा की तूती बोलती थी।

भोला पांडेय

साल 2008 में रामगढ़ व रांची में अमरेंद्र तिवारी नाम के शूटर की तूती बोलती थी। अमरेंद्र तिवारी ने सुशील श्रीवास्तव से हाथ मिला लिया था। सुशील श्रीवास्तव जेल बंद था, लेकिन अमरेंद्र तिवारी जेल के बाहर। सुशील श्रीवास्तव हर हाल में भोला पांडेय व उसके गिरोह को खत्म करने के लिए वर्ष करना चाहता था। उसने इसके लिए अमरेंद्र तिवारी से बात की। वर्ष 2009 में दुमका से रांची लाने के क्रम में एक लाइन होटल में जब पुलिसकर्मी और भोला पांडेय खाना खाने रुके थे, भोला पांडेय शौच करने लिए होटल के पीछे गया था। तभी अमरेंद्र तिवारी ने भोला पांडेय की हत्या कर दी थी।

किशोर पांडेय

किशोर पांडेय पतरातू बस्ती निवासी अपराधी भोला पांडेय का भतीजा था। किशोर के पिता कामेश्वर पांडेय रेलकर्मी हैं और छोटे पुत्र बबलू पांडेय के साथ पतरातू में रहते हैं। वह अपने चाचा से प्रभावित था व कम उम्र में ही अपराध करने लगा था। साल 2007 में उसने रामगढ़ जिला के सयाल निवासी मो. सकरुल्ला और खलारी में दो व्यवसायियों की हत्या कर दी थी। वर्ष 2009 में रांची के फाइनेंसर राजू धानुका की हत्या के बाद वह सुर्खियों में आया था। साल 2014 में किशोर की जमशेदपुर में हत्या कर दी गई। अब पांडेय गिरोह की कमान विकास तिवारी संभाल रहा है। फिलहाल वह सलाखों के पीछे है।

अखिलेश सिंह

अखिलेश सिंह के खिलाफ 56 से अधिक आपराधिक मामले दर्ज हैं। इनमें उपेंद्र सिंह, जयराम सिंह, आशीष डे, परमजीत सिंह हत्याकांड, आर्म्स एक्ट, धोखाधड़ी, दस्तावेज की हेराफेरी है। साकची जेल के जेलर उमाशंकर पांडेय की हत्या मामले में उसे आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई थी। 2007 में उसे हाईकोर्ट से पेरोल मिला था लेकिन इसके बाद वह अदालत में उपस्थित नहीं हुआ। दोबारा वह नोएडा से 2011 में पकड़ा गया। 2015 में उसे कुछ शर्तों के साथ हाईकोर्ट से जमानत मिली। इस बीच सोनारी के अमित सिंह और उपेंद्र सिंह की हत्या का मामला दर्ज हुआ। जमशेदपुर पुलिस ने उसे गुरुग्राम से अक्टूबर 2017 को पत्नी के साथ गिरफ्तार किया था। वो अभी दुमका जेल में बंद है।

अमन श्रीवास्तव

सुशील श्रीवास्तव की हत्या के बाद धुर्वा में सुशील श्रीवास्तव को दफन किया जा रहा था। तब ताबड़तोड़ फायरिंग हुई। खून का बदला खून की तर्ज पर लेने की शपथ यहां अमन श्रीवास्तव ने ली। अमन, सुशील का बड़ा बेटा है। पढ़ा लिखा अमन गिरोह की कमान संभाल रहा है। उसके मददगार बने बोकारो जेल में बंद अमरेंद्र तिवारी और रामगढ़ का लखन साव है। अमन के इशारे पर 26 अक्तूबर 2016 को किशोर पांडेय के बुजुर्ग पिता कामेश्वर पांडेय की हत्या पतरातू में कर दी गई। अपराध से दूर रहने वाले कामेश्वर पांडेय की हत्या के ठीक बाद एक शूटर को भीड़ ने पीट-पीटकर मार डाला था। हत्याकांड के बाद अमन श्रीवास्तव ने इस वारदात को अंजाम दिलवाने की बात खुद कबूली। जिसके बाद अमन श्रीवास्तव एक के बाद एक घटना को अंजाम दिलाकर राज्य के छह जिलों की पुलिस के लिए चुनौती बन गया था। 15 मई को झारखंड एटीएस ने उसे मुंबई से गिरफ्तार कर लिया गया।

सीआइपी में बनेगा न्यूरोसर्जरी सुविधायुक्त 500 बेड का भवन और ओपीडी : निदेशक

106वां स्थापना दिवस समारोह में की गयी घोषणा

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। केंद्रीय मनःचिकित्सा संस्थान (सीआईपी) ने बुधवार को अपना 106वां स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर 17 मई को आयोजित कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रांची विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अजीत कुमार सिन्हा और विशिष्ट अतिथि रांची आईआईएम के प्रोफेसर (डॉ) दीपक श्रीवास्तव थे। अतिथियों का स्वागत करते हुए सीआईपी के निदेशक प्रोफेसर (डॉ) बासुदेब दास ने संस्थान की विरासत और हासिल की गई उपलब्धियों और भविष्य में हासिल किए जाने वाले लक्ष्यों के बारे में बात की। उन्होंने 500 बिस्तरों वाले न्यूरोसर्जरी सुविधाओं वाले एक नए ओपीडी भवन की भी घोषणा की। प्रोफेसर (डॉ) दीपक श्रीवास्तव ने मानसिक और सामाजिक कल्याण के लिए प्रबंधन और एक समग्र दृष्टिकोण पर चर्चा की।मुख्य अतिथि डॉ अजीत कुमार सिन्हा ने वैश्वीकरण के कारण छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य में बदलते रुझान पर जोर दिया। छात्रों के सामने आने वाली विभिन्न चुनौतियों और इन चुनौतियों से निपटने के महत्व पर चर्चा की। मंच पर उपस्थित सीआईपी के पूर्व निदेशक डॉ डी राम, सीआईपी के प्रशासनिक अधिकारी डॉ अविनाश शर्मा, सीआईपी के पूर्व छात्र अध्यक्ष डॉ दीपांजन भप्ताचाजी और सीआईपी की मैट्रन श्रीमती सवर्णबाला सोरन थे। उन्होंने सीआईपी बुलेटिन 2023 और पूर्व छात्र न्यूजलेटर 2023 जारी किया। सीआईपी के छात्रों और स्टाफ सदस्यों को विभिन्न पुरस्कार दिए गए। धन्यवाद डॉ अविनाश शर्मा ने किया। कार्यक्रम में जी-20 नेतृत्व के माध्यम से वैश्वीकरण और मानसिक स्वास्थ्य मार्चिंग विषय पर एक सीएमई का आयोजन किया गया था।

इसमें डॉ संजय कुमार मुंडा ने वैश्वीकरण के युग में सीमांत समुदायों के मानसिक स्वास्थ्य विषय अपनी बात रखी। उन्होंने हाशिए पर पड़े लोगों के सामने आने वाली विभिन्न चुनौतियों पर चर्चा की। डॉ निखिल नायर ने एलजीबीटीक्यू और मानसिक स्वास्थ्य पर वैश्विक से स्थानीय स्तर पर बातचीत की। उन्होंने इस समुदाय के सामने आने वाली चुनौतियों का पता लगाया और बताया कि कैसे उन्हें समाज की मुख्यधारा का हिस्सा बनने में मदद की जा सकती है।

डॉ मालविका पारिख ने मां-बच्चे के मानसिक कल्याण में वैश्विक रुझानः क्या भारत तैयार है? विषय पर बात की। उन्होंने आधुनिक भारत में मातृत्व के विभिन्न बदलते परिदृश्यों पर जोर दिया। डॉ पूजा शर्मा और डॉ चंद्रमौली रॉय ने एंडॉक्सिफेन : फ्रॉम कोर्टेक्स टू क्लिनिक विषय पर बात की। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. बी दास और डॉ

रांची विश्वविद्यालय के सात कर्मचारी सम्मानित

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। रांची विश्वविद्यालय के शहीद स्मृति भवन, मोरहाबादी कैंपस में बुधवार को आयोजित समारोह में कुलपति प्रो. अजीत कुमार सिन्हा ने 7 गैर शैक्षणिक कर्मचारियों को सम्मानित किया। मौके पर वीसी ने कहा कि विश्वविद्यालय के नायक हैं हमारे कर्मचारी। ये हमारे स्तंभ है। हमारी हर रोज मदद करते हैं। समारोह रांची विश्वविद्यालय और आर्ट ऑफ गिविंग संस्था ने संयुक्त रूप से आयोजित किया था। मौके पर 10वां अंतरराष्ट्रीय कला दिवस भी मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो अनिल ठाकुर ने की। मुख्य अतिथि डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. तपन कुमार शांडिल्य थे। कार्यक्रम में कुलसचिव डॉ. एमसी मेहता, कुलपति की ओएसजी डॉ स्मृति सिंह, प्रो. अर्चना दुबे, अंजू देवी, मो फारूख, सुशीला देवी, एतवा मुंडा, प्रभा हेमरोम, राजेश कुमार, डॉ. हरि उरांव और अन्य कर्मचारी शामिल थे।

तीन दिवसीय बड़ा पूजा महोत्सव का शुभारंभ आज से

रांची। जय मां काली जगदंबा ट्रस्ट के तत्वावधान में आज से तीन दिवसीय बड़ा पूजा महोत्सव शुरू होगा। ट्रस्ट के सचिव पवन पासवान ने बताया कि आज शाम 4:00 बजे से भव्य शोभायात्रा निकाली जायेगी। शोभायात्रा के बाद मां को छप्पन भोग लगाया जाएगा जिसके बाद पूजा-अर्चना शुरू होगी। 19 मई को मुख्य पूजा सुबह 3:00 बजे से रात्रि 11:00 बजे तक आयोजित की जाएगी। इसी दिन भव्य भंडारे का भी आयोजन किया जायेगा। ट्रस्ट के सचिव पवन पासवान ने बताया इस भंडारे में पूरे झारखंड ही नहीं देश विदेश के लोग इस भंडारे में शामिल होंगे। वहीं 20 मई को शाम 4:00 से रात्रि 10:00 बजे तक मां का जागरण कार्यक्रम होगा। बताया गया कि कार्यक्रम में भक्तों के लिए भव्य पंडाल का निर्माण किया जा रहा है। लंबी कतार होने के कारण महिलाओं की परेशानी को देखते हुए महिलाओं के लिए बैठने की व्यवस्था की गई है। भव्य लाइट गेट बनाए जा रहे हैं। डायनासोर गोरिला राजस्थानी नृत्य पूजा के मुख्य आकर्षण होंगे। कुल 50 तोरण द्वार बनाए गए हैं।

झारखंड कला जतरा : फेस्टिवल ऑफ क्रिएटिविटी में दिखेगा झारखंडी दृश्य कला का आयाम

खबर मन्त्र संवादाता

रांची। संस्कृति कार्य निदेशालय पर्यटन कला संस्कृति खेलकूद एवं युवा कार्य विभाग झारखंड सरकार एवं कलाकृति आर्ट फाउंडेशन के द्वारा पन्द्रह दिनों तक चलने वाले झारखण्ड कला जतरा फेस्टिवल ऑफ क्रिएटिविटी का आयोजन 19 मई से कलाकृति स्कूल ऑफ आर्ट्स डोरंडा के प्रांगन में किया जा रहा है। कार्यक्रम मे विभिन्न कार्यशालाओं का आयोजन किया जाएगा। कार्यशाला के पोस्टर विमोचन के अवसर पर धनंजय कुमार ने बताया कि झारखण्ड कला जतरा पहली बार आयोजित किया जा रहा है जिसमें ढोकरा आर्ट, क्ले मॉडलिंग एंड कास्टिंग, मूर्तिकला, झारखंड की लोक चित्रकला सोहराय, राज्य स्तरीय चित्रकला शिविर चित्रकला एवं कला जतरा मेला का आयोजन किया जाएगा।

ये कार्यशाला निःशुल्क होगी जिसमें राज्य के 10 से 25 वर्ष तक प्रतिभावान बच्चे और युवा कलाकार हिस्सा ले सकते हैं।

यह कार्यक्रम संस्कृति कार्य निदेशालय पर्यटन कला संस्कृति खेलकूद एवं युवा कार्य विभाग झारखंड सरकार के सहयोग से आयोजित किया जा रहा है। जिनको भी इस कार्यशाला में हिस्सा लेना हो वे 7091091066 पर वॉट्सएप कर सकते हैं। चयन के बाद उन्हें कार्यशाला के लिए आमंत्रित किया जायेगा।

वी फाउंडेशन का ऑनलाइन गुरुशाला समर कैंप 2023 का आयोजन

रांची। वी की सीएसआर शाखा वी फाउंडेशन ने स्कूली बच्चों के लिए ऑनलाइन 'गुरुशाला समर कैंप 2023' का आयोजन किया है। इसमें हिस्सा लेने के लिए भारत भर के बच्चों को आमंत्रित किया है। यह कैंप 30 जून 2023 तक कक्षा 6 से 10 तक के छात्रों के लिए सप्ताह के तीन दिन सोमवार, बुधवार और शुक्रवार को सुबह 11 बजे से दोपहर 12 बजे के बीच चल रहा है। इस गुरुशाला कैंप में भारत में कहीं से भी निःशुल्क हिस्सा ले सकते है। साथ ही इस समर कैंप के विशेषज्ञों द्वारा इंटरैक्टिव सेसन का लाभ उठाकर अपना ज्ञान बढ़ा सकते है। कैंप के सत्रों में 'डू इट योरसेल्फ' , 'थिएटर' सत्रों के माध्यम से छात्र चुनौतीपूर्ण सामाजिक परिदृश्यों और कमजोर भावनाओं को व्यक्त करने के लिए रचनात्मक और आत्मविश्वास बढ़ाने वाली तकनीक सीख सकते हैं। 'फिटनेस विद फन' सत्र में नृत्य, जुंबा और योग जैसी गतिविधियां शामिल है। गुरुशाला के इस समर कैंप में सेल्फ-डिफेन्स प्रोग्राम के तहत स्टूडेंट्स को आत्म रक्षा की तकनीक का प्रशिक्षण दिया जाएगा।

डीएसपीएमयू के डॉ अशोक नाग को गौतम बुद्धा सम्मान

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। डीएसपीएमयू के बॉटनी को प्रोफेसर डॉ अशोक कुमार नाग को गौतम बुद्ध सम्मान से सम्मानित किया गया। डॉ नाग को सम्मान स्वरूप एक प्रशस्ति पत्र, मोमेन्टो तथा शॉल देकर सम्मानित किया गया। डॉ नाग को वनस्पति शास्त्र के क्षेत्र में उनके किये गये शोध कार्यों के बदौलत यह सम्मान दिया गया। उल्लेखनीय है कि डॉ नाग ने नेतरहाट विद्यालय, नेतरहाट से शिक्षा ग्रहण की और दिल्ली विश्वविद्यालय में भी अध्यापन का कार्य किया और विगत 23 वर्षों से शिक्षण कार्य व शोध से जुड़े हैं। वर्तमान में डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय में वनस्पति शास्त्र विभाग में कार्यरत हैं। डॉ नाग को यह सम्मान बोधगया स्थित शाक्य मुनि कॉलेज, बोधगया तथा अन्तर्राष्ट्रीय सेंटर फॉर साइन्टिफिक रिसर्च एंड डेवलपमेंट, बेंगलुरू, कर्नाटक के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार में गौतम बुद्धा सम्मान, 2023 प्रदान किया गया। शाक्य मुनि कॉलेज, बोधगया के प्राचार्य तथा बौद्ध मठ स्वामियों की उपस्थिति में डॉ नाग को यह पुरस्कार प्रदान हुआ। इस अवसर पर डॉ नाग ने अपना शोध प्रस्तुत किया और आयोजकों को उत्कृष्ट आयोजन के लिए बधाई दी। उल्लेखनीय है कि राष्ट्र के 400 से अधिक शोधार्थी ने इस राष्ट्रीय सेमिनार में भाग लिया। डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर तपन कुमार शांडिल्य एवं कुलसचिव डॉ नमिता सिंह ने डॉ नाग की उपलब्धि की सराहना की और बधाई दी।

छात्र संगठन की मजबूती को लेकर झारखंड छात्र मोर्चा की बैठक

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। झारखंड छात्र मोर्चा की बैठक बुधवार को राजकीय अतिथिशाला मोराबादी में हुई। इसमें मोर्चा के रांची जिलाध्यक्ष मुश्ताक आलम भी शामिल हुए। बैठक में छात्र मोर्चा के सदस्यों ने वर्तमान में संगठन की स्थिति से अवगत कराया और झारखंड छात्र मोर्चा की मजबूती एवं विस्तार पर अपनी बातें रखी। जिलाध्यक्ष ने आश्वस्त किया कि केंद्रीय नेतृत्व को इन सब बातों से अवगत करा कर जल्द ही छात्र मोर्चा का गठन एवं विस्तार किया जायेगा, ताकि झामुमो का छात्र संगठन मजबूत हो।

बैठक में झामुमो के नेता फरीद आलम, छात्र मोर्चा के असद फेराज टिंकू, अमन तिवारी, मोहम्मद इरफान,अजीत विशकर्मा, सलमान अली खान,अतिकुर रहमान ,मनीष राणा,अल्ताफ रजा, काशिफ अहमद, मेराज खान मौजूद थे ।

चर्च कॉम्प्लेक्स के एसी मार्केट में खुला डॉ पार्थ पॉलिक्लिनिक एंड डायग्नोस्टिक सेंटर

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। डॉ पार्थ पॉलिक्लिनिक एंड डायग्नोस्टिक सेंटर का उद्घाटन डॉ पार्थ के पिता एवं शहर के जाने माने ज्योतिष आचार्य आर के तिवारी के हाथों हुआ। रांची के प्रतिष्ठित दांत चिकित्सक डॉ पार्थ परितोष ने अपने नये दंत क्लिनिक का शुभारंभ किया। गौरतलब है कि डॉ पार्थ रांची के दंत चिकित्सा क्षेत्र में एक जाना पहचाना नाम है। रांची में 2017 से ही डॉ पार्थ शहर के सैनिक बाजार में स्थित क्लिनिक में अपना योगदान दे रहे थे। दिल्ली से पढ़ाई करने के पश्चात राज्य के सबसे बड़े अस्पताल रिम्स से अपने करियर की शुरूआत करते हुए डॉ पार्थ ने दंत चिकित्सा में एक खास मुकाम हासिल किया है। आपको बता दें की डॉ पार्थ की पत्नी डॉ नित्या तिवारी भी दंत चिकित्सक हैं, जो डॉ पार्थ के साथ ही अपना योगदान दे रही हैं। डॉ नित्या तिवारी ने लखनऊ से बीडीएस, एमडीएस एवं प्रोस्थोडोंटिस्ट की डिग्री प्राप्त की है। आँख और कान का प्रोस्थेटिक इलाज के साथ-साथ ओरल इंप्लांट में डॉ नित्या तिवारी को विशेषज्ञता हासिल है। डॉ पार्थ के पिता ज्योतिषाचार्य आर के तिवारी शहर के जाने माने व्यक्ति हैं। डॉ पार्थ पॉलिक्लिनिक एंड डायग्नोस्टिक सेंटर में अत्याधुनिक मशीनों के साथ मरीजों का इलाज किया जाता है, जैसे दांत एवं मसुढ़ों कि सफाई,दांत निकालना, दांत के नस का इलाज, दांत में मसाला भरना तथा फिक्स दाँत और आर्टिफीसियल जबड़ा जैसी सुविधा इस नये क्लिनिक में उपलब्ध है। यहाँ पर दांतों के साथ-साथ बाल और स्किन की समस्या का भी समाधान उपलब्ध है। सैनिकों के लिए मुफ़्त कन्सल्टेंसी की सुविधा उपलब्ध है। सबसे खास बात यह है कि डॉ पार्थ पॉलिक्लिनिक एंड डायग्नोस्टिक सेंटर में हाइड्राफेशियल (चेहरे का झुर्रियों का इलाज), फेस पीआरपी तथा हेयर पीआरपी का इलाज अत्याधुनिक मशीनों से किया जाता है, जो राँची शहर में और कहीं भी उपलब्ध नहीं है।

आबिद अली अंसारी मोमिन कॉन्फ्रेंस के प्रदेश अध्यक्ष मनोनीत

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। ऑल इंडिया मोमिन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष एडवोकेट फिरोज अहमद अंसारी ने आबिद अली अंसारी को झारखण्ड प्रदेश मोमिन कॉन्फ्रेंस का पुनः अध्यक्ष मनोनीत किया है। साथ ही अनवार अहमद अंसारी को भी पुनः कार्यकारी अध्यक्ष बनाया गया है। इस संबंध में राष्ट्रीय अध्यक्ष ने मनोनयन पत्र जारी कर दिया है। प्रदेश अध्यक्ष बनाये जाने पर आबिद अली अंसारी ने राष्ट्रीय अध्यक्ष के प्रति आभार प्रकट करते हुए कहा कि जिस उम्मीद और विश्वास के साथ मुझे अध्यक्ष बनाया गया है उसे पूरा करने के लिए प्रयासरत रहूंगा। उन्होंने कहा कि मोमिन कॉन्फ्रेंस मोमिनों एवं अल्पसंख्यकों के विकास के लिए कृतसंकल्पित है।

कॉन्फ्रेंस मोमिनों और अल्पसंख्यकों के अधिकार के लिए आवाज उठाते रहेगी।

आबिद अली अंसारी को अध्यक्ष एवं अनवार अहमद अंसारी को कार्यकारी अध्यक्ष बनाये जाने पर राष्ट्रीय महासचिव सगीर अंसारी, राँची जिलाध्यक्ष शमीम अख्तर आजाद, प्रवक्ता सह महासचिव जफर इमाम, उपाध्यक्ष अब्दुल गफ्फार अंसारी, अब्दुल्लाह हबीब ,जाकिर हुसैन, सचिव अब्दुल इमाम अंसारी, मकबूल अंसारी , तस्लीम अंसारी, सलामत अंसारी, वकील अहमद , शमशेर आलम , ताउद्दीन अंसारी, तोहिद आलम अंसारी ,अशफाक आलम, मुबारक अंसारी, सफीउल्लाह इनाम अंसारी, अब्दुस सलाम ,मेराज अंसारी, औरंगजेब आलम, जुल्फिकार अली अंसारी ,कयूम अंसारी, रब्बानी राजा, गुलशाद रजा, इश्तियाक अंसारी ,सलीम अंसारी, तनवीर आलम अंसारी, फिरोज अंसारी ,कयूम फराज, महेबूब ओहदार, असलम अंसारी, महताब आलम, मियां जान अंसारी ,असलम अंसारी ,कमरुल हक ,आजाद अंसारी ,वसीम अंसारी सहीत अन्य लोगों ने बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं।

लेम बड़गाई स्वास्थ्य केंद्र में आइयूसीडी के साथ अंतरा लगाने की शुरुआत

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। लेम-बड़गांई स्थित स्वास्थ्य केंद्र में झारखंड सरकार एवं पीएसआई इंडिया की ओर से बुधवार को महिलाओं के लिए आईयूसीडी मेडिकल उपकरण लगाने के लिए कैंप लगाया गया। अब यह सुविधा लोगों को रेगुलर मिलती रहेगी। मौके पर 11 महिलाओं को आईयूसीडी उपकरण लगाया गया और 6 अंतरा लगाया गया।

आईयूसीडी एक मेडिकल उपकरण है, जिसे लगाने के बाद एक बच्चे से दूसरे बच्चे के पैदाइश के बीच एक निश्चित दूरी बनाई जा सकती है। यह बिल्कुल सेफ है। इसे कभी भी लगाया जा सकता है और जब चाहे निकाला भी जा सकता है। इस उपकरण को लगाने या निकालने में बमुश्किल 10 से 15 मिनट का समय लगता है। मौके पर मुख्य रूप से पूर्व पार्षद हुस्न आरा, तबरेज (हेल्थ मैनेजर),डॉ एसके झा, एएनएम दीदी कुसुम सिन्हा, और सहिया दीदी के अलावा पीएसआई इण्डिया से रीमा नंदी तथा राजेश गुप्ता उपस्थित थे।

स्थानीय कला प्रतिभा को अंतराष्ट्रीय मंच देना चित्रपट झारखंड फिल्म फेस्टिवल का उद्देश्य : प्रो गोपाल पाठक

तीन दिवसीय चित्रपट झारखंड फिल्म फेस्टिवल 23 जून से

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। सरला बिरला विश्वविद्यालय परिसर में 23, 24 एवं 25 जून 2023 को तीन दिवसीय चित्रपट झारखंड फिल्म फेस्टिवल-2023 का आयोजन होगा। इस कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर गोपाल पाठक की अध्यक्षता में आयोजन समिति के सदस्यों की समीक्षा बैठक हुई। विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रोफेसर गोपाल पाठक ने कहा कि स्थानीय कला एवं प्रतिभा का ना केवल स्थानीय स्तर बल्कि राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंच तक पहुंचाने के लिए यह कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। चित्रपट झारखंड फिल्म महोत्सव के प्रेजिडेंट डॉ प्रदीप कुमार वर्मा ने कहा कि चित्रपट केवल मनोरंजन ही नहीं संस्कार एवं संस्कृति के वाहक भी होते हैं। झारखंड की संस्कृति केवल देखने की नहीं अपितु भाग लेने की है। फिल्में दस्तावेज होती हैं जो इतिहास का बोध कराती हैं। उन्होंने कहा कि चित्रपट झारखंड के द्वारा स्थानीय प्रतिभाओं को सामने लाने का प्रयास किया जा रहा है। विदित हो कि चित्रपट झारखंड फिल्म फेस्टिवल 2023 में फिल्म जमा किए जा रहे हैं जिसके लिए पंजीकरण की प्रक्रिया जारी है। कैंपस फिल्मों के लिए 100 रुपये प्रति फिल्म एवं अन्य श्रेणियों के लिए 250 रुपए प्रति फिल्म निर्धारित किए गए हैं। चयनित फिल्मों को 30 मई 2023 तक अधिसूचित किया जाएगा। इस अवसर पर कुलसचिव प्रो विजय कुमार सिंह, प्रो एसबी दंडीन, हरि बाबू शुक्ला, डॉ अशोक कुमार अस्थाना, डॉ पार्थ पॉल, डॉ राधा माधव झा, अजय कुमार, प्रवीण कुमार,श्री आशुतोष द्विवेदी सहित विश्वविद्यालय के सभी पदाधिकारी, प्राध्यापक, कर्मचारी एवं आयोजन समिति के सभी सदस्य उपस्थित थे।

स्पीड न्यूज

जलसा ए दस्तार बंदी का हुआ आयोजन

इटकी। इटकी के कुंदी गांव स्थित मदरसा जामिया अजीजिया में आगामी 21 मई रविवार को एकदिवसीय जलसा ए दस्तार बन्दी कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। कार्यक्रम में मदरसा के 19 विद्यार्थियों को 'हाफिज' की उपाधि प्रदान की जायेगी। कार्यक्रम में अररिया बिहार के मुफ़्ती अब्दुल्लाह सालिम कमर चतवेर्दी, कटक उड़ीसा के शैखुल हदीस मौलाना मोहम्माद अब्दुल्लाह, शायर शाबान दिलखैराबादी सहित कई अन्य मशहूर ओलमा व शायर शिरकत करेंगे। यह जानकारी मदरसा के मोहतमिम मौलाना जुबैर अशरफ रहीमी ने दी।

मिनी जलमीनार से जलापूर्ति ठप

इटकी। इटकी के तरगड़ी रहमत नगर में पिछले कई महीनों से सोलर युक्त मिनी जलमीनार से जलापूर्ति ठप है। जिससे रहमत नगर में भीषण पेयजल संकट व्याप्त हो गया है। पेयजल संकट से त्रस्त ग्रामीणों ने बुधवार को बीडीओ से भेंट कर एक ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में जलमीनार की तत्काल मरम्मत कराने की मांग की गयी है।

एकागुड़ी में मसना घेराबंदी का शिलान्यास

रातू। बिजुलिया के एकागुड़ी में बुधवार को आजसू नेता भरत साहू कांसी और भाजपा नेत्री सुमन मिश्रा ने बच्चा मसना में प्रस्तावित चहारदीवारी की आधार शिला रखी। इससे ग्रामीण बेहद उत्साहित नजर आये। लोगों ने बताया कि उक्त मसना स्थल की खाता संख्या 194 और प्लॉट नंबर 526 है। निर्माण कार्य जन सहयोग से किया जायेगा। इस दौरान मदद के लिये सैकड़ों हाथ उठे। मौके पर गोपाल मिश्र, अखिलेश शर्मा, अखिलेश मिश्र, सुभास कुमार, सोनू कुमार, मनोवर अंसारी, सुरज साहू, विकास कुमार व बिनु महतो आदि भी मौजूद थे।

पेयजल की समस्या को लेकर बैठक

सोनाहातू/राहे। विधायक सुदेश महतो ने अपने आवासीय कार्यालय में पेयजल की समस्या को लेकर पेयजल विभाग के कार्यपालक अभियंता निरंजन कुमार, सहायक अभियंता तेलेस्फोर मिंज सहित कनीय अभियंता के साथ बैठक किये। बैठक में हर मुहल्ले में पेयजल की समस्या पर चर्चा हुआ तथा हर घर में पेयजल देने की गारंटी पर रूपरेखा तय किया गया। गांव के खराब चापानल को यूद्व स्तर में दुरुस्त करने का निर्देश दिये साथ ही ड्राई जॉन इलाके में गर्मी के मौसम तक टेंकर से पेयजल आपूर्ति करने का निर्णय लिया गया।इस दौरान जल जीवन मिशन के तहत हर घर नल योजना की समीक्षा किया गया।

सताकी,अम्बाझरिया, होटलो, बारेन्दा, हेसाडीह, लांदुपडीह, तेतला,बसन्तपुर, बंसिया,पंडाडीह, हारिन आदि पंचायत में बन रहे जलमीनार योजना की निर्माण कार्य में तेजी लाने को कहा गया।

रांची टाटारोड पर जली एसयूवी कोकर के पवन शर्मा की

नामकुम। मंगलवार को रांची टाटारोड पर जामचुंआ समीप जलने वाली एसयूभी 500 कोकर के रहनेवाले पवन कुमार शर्मा की थी। मामले में पवन ने नामकुम थाने में आवेदन देकर बताया है कि वे अपने भाई के साथ रात लगभग नौ बजे अपन एसयूभी 500 गाडी संख्या जेएच01डीडी 7000 से जरूरी काम से बुण्डू जा रहे थे। इसी दौरान जामचुंआ समीप बोनेट से धुंआ निकलता देख उन्होने गाडी रोक कर बोनेट उठाया तो काफी तेज गति से धुंआ निकलने लगा और आग लग गयी। आग इतनी तेज थी कि पलभर में ही गाडी पूरी तरह से जलकर राख हो गयी। मामले की जानकारी उनके द्वारा नामकुम पुलिस को दी गयी जिसके बाद मौके पर पहुंची फायर ब्रिगेड ने आग बुझाया पर गाडी पूरी तरह से जलकर राख हो चुकी थी। इस घटना में कार सवार दोनो युवक सुरक्षित है।

विधायक के जनता दरबार से पदाधिकारी गायब

ओरमांझी से हटाया गया एएनएम से छेड़छाड़ के आरोपी बीपीएम प्रमोद को, जेएसएलपीएस बीपीएम पर जल्द गिरेगी गाज

खबर मन्त्र संवाददाता

ओरमांझी। प्रखंड मुख्यालय में बुधवार को विधायक राजेष कच्छप द्वारा जनता दरबार लगाया। जनता दरबार में प्रखंड क्षेत्र से काफी संख्या में लोग अपनी समस्याओं को लेकर पहुंचे थें। सभी से आवेदन लेकर उपस्थित अधिकारियों को त्वरित निष्पादन करने के लिए कहा गया। बाद में विधायक प्रखंड मुख्यालय के सभागार में प्रखंड के जनप्रतिनिधियों के साथ एक बैठक भी की। प्रमुख अनुपमा देवी की अध्यक्षता में हुई बैठक में कई एएनएम द्वारा बीपीएम द्वारा छेड़छाड़ किए जाने की जानकरी दी। बैठक समाप्ती के बाद विधायक ने अलग से एएनएम से मिले और पुरी जानकारी ली। एएनएम द्वारा बीपीएम के खिलाफ साक्ष्य भी प्रस्तुत किए। जिसके बाद विधायक ने सीएस से पुछा की बीपीएम प्रमोद कुमार काफी पहुंच वाला है क्या, फिर आज तक कार्रवायी क्यों नही हुई। जिसके कुछ ही घंटा बाद ही प्रमोद कुमार को ओरमांझी

बैठक में उपस्थित विधायक राजेश कच्छप व प्रमुख। एएनएम से बात करते विधायक ।

से हटाने का जिला से लेटर निकल गया। ओरमांझी से हटाकर कांके प्रतिन्यूक्त कर दिया गया। जल्द ही उसे दूसरे जिला भेजा जाएगा। वहीं जेएसएलपीएस के बीपीएम मुकेष सिन्हा पर भी जल्द कार्रवायी होगी। मुकेष सिन्हा पर प्रखंड में कार्य करने से ज्यादा राजनीति करने सहित कई गंभीर आरोप लगे हैं।

उपप्रमुख रिजवान अंसारी ने बताया कि जेएसएलपीएस के मुकेष सिन्हा पिछले दस वर्ष से ओरमांझी प्रखंड जमें हैं। इस दौरान वे विधायक, प्रमुख, जिला परिसद चुनाव जीताने ठेका लेता है। वहीं पीडीएस दुकान दिलाने के नाम पर पैसे की उगाही भी करता है। यही नही मुकेष सिन्हा पर समुह की दीदियों का सोषण करने का भी आरोप लगा है। हलाकि मुकेष सिन्हा के बचाव में दो पंचायत प्रतिनिधि व जेएसएलपीएस के कई ब्लॉक कर्मी भी सामने आ आए थें। विधायक ने मुकेष सिन्हा पर कार्रवायी के लिए कुछ समय लिया है। वहीं सीएचसी के बीपीएम पर कार्रवायी विधायक राजेष कच्छप की पहल पर हुई है। इससे पूर्व प्रमुख, उपप्रमुख जिप सदस्य व पंसस सदस्यों द्वारा भी बीएपीएम पर कार्रवायी के लिए लिखा गया था। बीपीएम को हटाए जाने से सीएसची के एएनएम ने हर्ष जताया गया है। बैठक में जिप सदस्य कमिष्नर मुंडा, सरिता देवी, सभी पंचायत समिति सदस्य, पूर्व प्रमुख जयगोविंद उर्फ लालू साहू, पूर्व प्रमुख मुंतजिर अहमद रजा, विधायक प्रतिनिधि प्रेमनाथ मुंडा, तुलसी खरवार, सुनील उरावं, दिनेश प्रमाणिक व मुखिया के साथ प्रखंड व अंचल कर्मी उपस्थित थें।

पदाधिकरी के नही पहुंचने से नाराजगी : सूचना मिलने के बाद भी प्रखंड क्षेत्र के कोई भी पदाधिकरी बैठक में नही पहुंचे। पीएचईडी विभाग से प्रतिनिधि के रूप में खलासी, विद्युत विभाग से मिस्त्री व वन विभाग से वनरक्षी को भेज दिया गया था। बैठक में प्रखंड कार्यायल में उपस्थित बीडीओ विजय सोनी, सीओ विजय केरकेट्टा व सीडीपीओ अनिमा निलम भेंगरा तो उपस्थित हुए।

इसके अलावे सभी विभाग के प्रतिनिधि ही पहुंचे थें। जिसपर विधायक द्वारा काफी नाराजगी जतायी गई। पंचायत प्रतितिनिधियों ने जानकरी दी की जल जीवन मिषन के तहत प्रखंड में चल रहे नल जल योजना के कान्टेक्टर राजेष सिंह ने 10 माह पूर्व कार्य शुरू किया और भाग गया। प्रखंड क्षेत्र के सभी पंचायत में कार्य अधुरा पड़ा है। पेयजल की भी समस्या है। विधायक ने पीएचइडी विभाग के एसी से बात कर खलासी को प्रतिनिधि के रूप में भेजने पर नाराजगी जताई। जिसके थोड़ी देर बाद विभाग के एसडीओ भागे-भागे पहुंचे, और कार्य जल्द शुरू व समस्याओं का निदान करने का अष्वासन दी।

शाही हत्याकांड : पुलिस ने पत्नी और साला को किया गिरफ्तार

संपत्ति की थी लालच दोनों करते थे मारपीट

खबर मन्त्र संवाददाता

रातू। गोविंद नगर में रहने वाले मांडर नारो के जमीन कारोबारी राजकुमार शाही उर्फ अनिरुद्ध हत्याकांड मामले में उनके भाई त्रिशुल शाही के बयान पर रातू थाने में भादवि की धारा 302 और 120 बी के तहत कांड संख्या 201/23 दर्ज की गयी है। इसमें मृतक की पत्नी सोनी देवी और साला शचींद्र मिश्र को नामजद किया गया है। सोनी देवी पेशे से वकील हैं। पति-पत्नी के बीच आये दिन विवाद होने की खबर है। सोनी उन्हें हमेशा जेल भेजवा देने की धमकी देती थी।

पैतृक संपत्ति से मिले हिस्से की जमीन को वह पुत्र अम्बिकेश के नाम करा ली। इसके बाद भाई शचींद्र मिश्र से मिल कर उन्हें मारपीट करती थी। पुलिस ने दोनों को गिरफ्तार कर लिया है। पूछताछ में सोनी ने जुर्म स्वीकार कर ली है।

प्रेम विवाह की चुकायी कीमत : राजकुमार छत्रीय परिवार से थे। उन्होंने मांडर टोटांबी के सुरेंद्र मिश्र की पुत्री सोनी से प्रेम विवाह किया था। ससुराल के लोग इसके खिलाफ थे। साला शचींद्र मिश्र ने उन्हें जान मारने की धमकी दी थी। बहनोई की हत्या में उसे बहन का साथ मिला। सोमवार की शाम उसे सोनी के घर में देखा गया था।

हत्या की सुबह गये थे रांची

खाना खाकर अनिरुद्ध सो गये। योजनाबद्ध तरीके से भाई-बहन ने धारदार हथियार से उनकी हत्या कर दी। साक्ष्य छिपाने की नीयत से मंगलवार की सुबह छह बजे दोनों रांची चले गये। शाम में लौट सोनी ने अपने जेठ त्रिशुल शाही को सूचना दी, कि वह घर पर नहीं थी और किसी ने उनके पति की हत्या कर दी। इसके बाद घड़ियालु आंसू बहाते हुये विलाप करने लगी।

राष्ट्रीय सेवा योजना के विशेष शिविर का उद्घाटन

खबर मन्त्र संवाददाता

पिस्कानगड़ी। नगड़ी प्रखंड के कुदलोंग स्थित आदित्य प्रकाश जालान टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज में राष्ट्रीय सेवा योजना (एन .एस .एस) के अंतर्गत पांच दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन किया गया। मौके पर संस्था के प्राचार्य डॉ. रामकेश पाण्डेय मुख्य अतिथि प्रो. अशोक कुमार चौधरी , डॉ. शिल्पी एवं विशिष्ट अतिथि डॉ. अमर कुमार चौधरी ने दीप प्रज्जवलन एवं सरस्वती वंदना के साथ किया गया। मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित राँची विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर डॉ. अशोक चौधरी ने युवाओं का आह्वान करते हुए कहा कि देश सेवा के साथ साथ भारतवर्ष के विकास में आप महत्वपूर्ण योगदान देकर मानव सेवा करते हुए उपर उठ जाईए,राष्ट आपका है और आप मेड इन इंडिया की जगह मेक इन इंडिया के सपनों को साकार करें। कार्यक्रम में बतौर मुख्य वक्ता एस.एस.एल.एन.टी. महिला महाविद्यालय, धनबाद के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. शिल्पी द्वारा आत्मनिर्भर भारत विषय पर उद्बोधन में उन्होंने समृद्ध भारत के मुख्य बिन्दुओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भारत को विश्वगुरू की यात्रा के प्रमुख बिन्दु किसान और मजदूरों की सहायता, कृषि में निर्भरता, इंफ्रास्ट्रक्चर और बाजार की उपलब्धता एवं क्वालिटी ऑफ प्रोडक्टिविटी पर केंद्रित की । झारखण्ड प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. अमर कुमार चौधरी ने कहा कि झारखण्ड बदल रहा है, जिसमें युवाओं की भूमिका बारिश की पहली बूंद के रूप में होगी। मौके पर एन.एस.एस. कार्यक्रम की प्रस्तावना देते हुए कॉर्डिनेटर रामजी यादव ने बताया कि इसमें युवाओं को जोड़कर कार्य करना है। समुदाय को जोड़ना तथा उसे सशक्त बनाना जिससे देश सबल हो सके। दुसरे सत्र के अतिथि के रुप में क्षेत्रीय संगठन मंत्री ख्यालीराम और शहीद शेख भिखारी इ.ए कॉलेज के प्राचार्य डॉ सपना त्रिपाठी ने भी संबोधन किया। धन्यवाद ज्ञापन सहायक प्राध्यापक वागीश दुबे संचालन मोहित कुमार तिवारी द्वारा किया गया। समापन शांति मंत्र के साथ किया गया । कार्यक्रम में बी एड के सभी छात्र छात्रा उपस्थित रहे। कार्यक्रम को सफल बनाने में महाविद्यालय के कर्मचारी शामिल थे ।

राष्ट्रीय सेवा योजना के विशेष शिविर में अतिथि का स्वागत करते संस्था के प्राचार्य डॉ रामकेश पांडेय।

रातू : सड़क दुर्घटना में घायल युवक की मौत

खबर मन्त्र संवाददाता

रातू। रातू-ठाकुरगांव रोड स्थित पेट्रोल पंप के समीप 12 मई की शाम सात बजे 125 सीसी की पल्सर मोटर साइकिल जेएच 01 डीएच 2856 के धक्के से आइसक्रीम विक्रेता मो सलीम की घटनास्थल पर ही मौत हो गयी थी। जबकि, मलमाडू निवासी और घायल बाइक चालक 30 वर्षीय सुनिल उरांव को झखराटांड़ स्थित कमलेश मेमोरियल ट्रस्ट हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर में भर्ती कराया गया था। बुधवार की दोपहर उसकी हालत बिगड़ने पर चिकित्सकों ने रिम्स रेफर कर दिया। लेकिन, रास्ते में ही उसकी मौत हो गयी। पुलिस ने शव का पंचनामा कर पोस्टमार्टम के लिये रिम्स भेज दिया।

कैसे घटी थी घटना

मो सलीम होचर में लगने वाले साप्ताहिक शुक्रवार बाजार आइसक्रीम बेचने गया था। वह शाम साढ़े छह बजे बाजार से ठेला लेकर चला। जैसे ही वह पेट्रोल पंप के समीप पहुंचा, समान दिशा से आ रहे सुनिल उरांव ने उसे अपनी चपेट में ले लिया था। इससे उसके सिर पर गंभीर चोटें आयी थी।

तीन दिवसीय समर कैंप का समापन

खबर मन्त्र संवाददाता

इटकी। अजीम प्रेमजी फाउंडेशन के तत्वाधान में मोरो स्थित राजकीय मध्य विद्यालय परिसर में आयोजित तीन दिवसीय समर कैंप का बुधवार को समापन हो गया। मौके पर वृक्षो की सुरक्षा का संकल्प लिया गया। स्कूल परिसर में स्थित सखुआ सहित अन्य पेड़ों में रक्षा सूत्र बांधे गये। कैम्प के क्रम में विद्यार्थियों द्वारा बनाये गये शिक्षा पर आधारित चित्रांकन,आर्ट व विज्ञान से संबंधित कला की प्रदर्शनी लगायी गयी।

विद्यार्थियों ने कैंप में प्राप्त अनुभवों को साझा भी किया। कैंप में मोरो के अलावा बोड़ेया व सियारटोली स्कूल के विद्यार्थियों ने भाग लिया। समापन के मौके पर फाउंडेशन के गुरु प्रसाद, अभिषेक मित्रा,राजेश कुमार, सोनालिका, नंदलाल महतो, आशा खलखो, बिनोद साहू, प्रमोद शाही, संध्या, सुमति, फगनी व नीलम सहित अन्य शामिल थे।

समर कैंप में मौजूद विद्यार्थी व फाउंडेशन के अधिकारी।

भाजपा नेता ने मृतक के सतकर्म में पहुंचकर परिवार को दुख की घड़ी में ढांढस बंधाया

तमाड़। प्रखंड क्षेत्र के सलगाडीह चौक निवासी बुधु लोहरा (उम्र 26 वर्ष) की बीते 07 मई को आकस्मिक मौत हो गयी थी। बुधु लोहरा की 24 वर्षीय पत्नी गुरुवारी देवी जो कि गर्भवती है। बुधु लोहरा जमशेदपुर में मजदूरी कर अपने परिवार को भरण पोषण करते थे। मृतक का एक 4 वर्षीय बेटी भी है। इस हालत में देख ना केवल परिवार बल्कि पूरा गांव की आंखें नम है। मृतक के सतकर्म में ईचागढ़ विधानसभा के भाजपा नेता सह भाजयुमो प्रदेश कार्यसमिति सदस्य विनोद राय पहुंचकर परिवार को इस दुख की घड़ी में ढांढस बांधा। उन्होंने कहा कि एक परिवार का जवान बेटा का यूं अचानक छोड़ जाना पीड़ा को कोई नहीं कम कर सकता। लेकिन परिवार वालों के हिम्मत बनते हुए कहा कि इस बेटी वह आने वाले बच्चे के लिए आप लोगों और हम लोगों को डट कर खड़ा रहना होगा। ताकि आपकी बेटी इस लायक बनी की बड़ी होकर पूरे परिवार का देखभाल करने में सक्षम हो। मौके पर विनोद राय ने परिवार को आर्थिक सहयोग भी किया और सरकार से उचित मुआवजा एवं अविलंब विधवा पेंशन चालू करवाने की बात कही साथ ही साथ हमेशा बच्चों के परवरिश में सहयोग करने की भी भरोसा दिया। मौके पर अमित राय, युवराज सिंह, कैलास पाठक, पार्वती देवी आदि उपस्थित रहे।

विधायक ने जल मीनार निर्माण का किया शिलान्यास

खबर मन्त्र संवाददाता

बेड़ो। विधायक शिल्पी नेहा तिर्की व सांसद प्रतिनिधि धनंजय कुमार राय ने बुधवार को बेड़ो प्रखंड के जरिया पंचायत व करांजी पंचायत सचिवालय भवन के समीप जल जीवन मिशन अंतर्गत जलापूर्ति योजना निर्माण कार्य का शिलान्यास किया। इस दौरान विधायक ग्रामीणों से मिलीं और पंचायत भवन के सभागार में बैठक किया। उन्होंने जल जीवन मिशन योजना के लाभ के बारे में ग्रामीणों को जानकारी दिया। उन्होंने कहा कि किस तरह डीप बोरिंग करके पम्प के माध्यम से कैसे शुद्ध पेय जल घर घर तक पहुँचाया जायेगा ? जिसे पानी की समस्या से लोगों को निजात मिलेगी। साथ ही झारखंड सरकार द्वारा चलायी जा रही अन्य नये योजनाओं के बारे मे भी विस्तृत जानकारी दिया। मौके पर बीडीओ डॉ प्रवीण कुमार, जिपस पूर्वी बेरोनिका उरांव, जिपस पश्चिमी पार्वती कुमारी, सांसद प्रतिनिधि धनंजय कुमार रॉय, प्रमुख विनीता कच्छप, उप प्रमुख मोदस्सीर हक,मुखिया कुंवारी कुमारी खलखो, फ्रांसिस्का मिंज, प्रखंड अध्यक्ष प्रो करमा उरांव,जगरनाथ भगत, विशेश्वर उरांव, राजीव रंजन अधिकारी, मनकु कुजूर, सुलेमान तिर्की, मार्टिन तिर्की, सरोज लकड़ा व जल सहिया एवं ग्रामीण आदि मौजूद थे।

शिलान्यास करते विधायक व साथ में अन्य।

चबूतरा निर्माण कार्य का हुआ शिलान्यास

खबर मन्त्र संवाददाता

बेड़ो। बेड़ो प्रखंड के नेहालू मण्डा टांड़ में बुधवार को चबुतरा निर्माण कार्य का गांव के पहान तथा ग्रामीणों ने विधिवत शुभारम्भ किया। चबुतरा नहीं होने के कारण शिवभक्तों तथा ग्रामीणों को काफी कठिनाईयों का सामना करना पडता था। इस चबुतरा के बनने की से सभी ग्रामीण काफी खुश हैं। इस संदर्भ में मुखिया विरेंद्र भगत ने बताया कि ग्रामीणों के मांग पर इसका निर्माण मुखिया फंड से करीब डेढ़ लाख की लागत से किया जाएगा। वहीं मौके पर मुखिया विरेन्द्र भगत, पहान सोमरा प्रधान,प्रदुमन प्रधान, बिजला महली,भौरा उरांव, अंगद प्रधान, करमबीर प्रधान, विकास प्रधान, आकाश प्रधान, रंजीत प्रधान, नारायण स्वांसी, राजेन्द्र स्वांसी, जगदीश प्रधान, जगन्नाथ साहू, यमुना साहु, किस्को साहू, घाटी प्रधान, बीरबल प्रधान, बिनोद प्रधान, करमनाथ स्वामी, दीपक प्रधान, बिल्कुल प्रधान,रंजीत प्रधान शिवशंकर प्रधान,पवन साहू ,सबिता देवी ,बसन्ती देवी,शान्ति देवी, रौशनी देवी, चन्द्रा देवी, चरिया देवी ,हीरा देवी, गौरी देवी ,सनिचरिया देवी, अंगनी देवी, कामना देवी, मुनी देवी ,सौहबईत देवी,धिराज देवी ,तेतरी देवी, राधिका देवी, दुखनी देवी, सुरजमुनी देवी,कुवारी मुनी देवी व सुनिता देवी समेत दर्जनों ग्रामीण मौजूद थे।

चबूतरा निर्माण के शुभारंभ के बाद उपस्थित मुखिया व ग्रामीण।

घर का ताला तोड़कर अज्ञात चोर नकद और जेवर सहित घरेलू समान उड़ा ले गये

खबर मन्त्र संवाददाता

बेड़ो। बेड़ो थाना क्षेत्र के बेड़ो बिजली पावर सबस्टेशन के क्वाटर में बुधवार की रात में चोरों ने घर का ताला तोड़कर लगभग 45 हजार नगद, सोना चांदी के ज्वेलर्स व घरैलू उपयोग के समान को चोरी कर ली। घटना के संदर्भ में दैनिक बिजली कर्मी असलम मिंया ने बताया कि परिवार के साथ 13 मई की सुबह सात बजे घर में ताला बंद कर शादी समारोह में शामिल होने रिस्तेदार के यहाँ अम्बिकापुर, छत्तीसगढ़ चले गये थे। वहीं बुधवार की सुबह करो 9.30 बजे पढोसी ने फोन पर बताया कि घर के दरवाजा का ताला टुटा हुआ है। शाम में जब घर वापस आया तो अंदर जाकर देखा तो कमरा का सामान बिखरा पड़ा था। अलमारी का लॉक भी टूटा हुआ था सामानों को चेक किया तो पता लगा कि चोर घर में 45 हजार नगद रुपये, सोने व चांदी की ज्वेलर्स एलएडी टीबी, कुलर, नये कपड़े व घरेलु उपयोग के समान चुरा कर ले गए। संभवतः चोरों ने घात लगाकर के बंद घर को अपना निशाना बनाया।

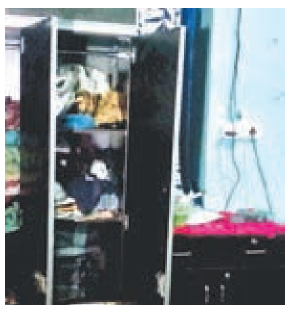

प्रखंड कार्यालय नामकुम में दो दिवसीय राज्यस्तरीय कार्यक्रम

पंचायतों के विकास के नौ थीम पर दिया गया प्रशिक्षण

खबर मन्त्र संवाददाता

नामकुम। प्रखंड कार्यालय में दो दिवसीय राज्यस्तरीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उदघाटन करते हुए पंचायती राज निदेशक निशा उरांव ने बताया कि नौ थीम में गरीबी मुक्त और उन्नत आजीविका,गांव, स्वस्थ गांव, बाल हितैशी गांव,जल पर्याप्त गांव,स्वच्छ और हरित गांव,गांव में आत्मनिर्भर बुनियादी ढांचा, सामाजिक रूप से सुरक्षित गांव,सुशासन वाला गांव तथा महिला और बाल हितैशी गांव की थीम पर योजनाओं का चयन कर उस पर जमीनी स्तर पर कार्य किया जाएगा। श्रीमती उरांव ने बताया कि कार्यक्रम के दौरान इससे जुड़े लोगों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। निदेशक श्रीमती उरांव ने कहा कि इस प्रशिक्षण के उपरान्त प्रशिक्षु अपने पंचायत,गांव को विकसित करने हेतु योजनाओं का चयन कर सकते हैं एवं गांव के लोगों को प्रशिक्षण देकर विकास में भागीदार बना सकते हैं। उन्होंने बताया कि सर्वप्रथम नामकुम से ही दस राज्यव्यापी प्रशिक्षण की शुरूआत की गई है। चूंकि नामकुम प्रखंड रांची जिले से सबसे नजदीक का प्रखंड है और यहां की स्थिति सबसे बेहतर है ।

मौके पर जिला पंचायती राज पदाधिकारी बीरेंद्र चौबे ने भी प्रशिक्षण कार्यक्रम की समीक्षा करते हुए दिशा निर्देश दिए। कार्यक्रम में मुख्य रूप से उप विकास आयुक्त दिनेश कुमार यादव,बीडीओ ज्ञान शंकर जायसवाल, प्रमुख आशा कच्छप तथा उप प्रमुख वीणा देवी सहित राज्यस्तर के प्रशिक्षक तथा सभी 24 जिलों के डीपीएम, शिक्षा विभाग ,चिकित्सा विभाग, जेएसएलपीएस, कृषि विभाग, कल्याण विभाग, मनरेगा, स्वच्छ भारत मिशन के प्रतिनिधि समेत सहायक अभियंता, कनीय अभियंता,सहित सभी मुखिया और पंचायत सचिव तथा संबंधित विभागों के कर्मचारी उपस्थित थे।

स्तरीय शिक्षा पर ध्यान

झारखंड में अलग-अलग जिलों में स्थापित 80 स्कूल ऑफ एक्सीलेंस का उद्घाटन किया। दिल्ली सरकार की तर्ज पर इन स्कूलों में अत्याधुनिक आधारभूत संरचना, लाइब्रेरी, साइंस लैब, डिजिटल स्मार्ट क्लास, लैंग्वेज लैब, स्पोर्ट्स ट्रेनिंग, कमर्शियल ट्रेनिंग की सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं। सभी स्कूल सीबीएसई से मान्यता प्राप्त हैं। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने दावा किया कि इन सभी स्कूलों में कॉन्वेंट स्कूलों की तर्ज पर पढ़ाई होगी। मकसद यह है कि सरकारी स्कूलों से पढ़ने वाले छात्र-छात्राएं आज के प्रतियोगी दौर में किसी से पीछे न रहें। इनके अलावा प्रखंडों में 325 लीडर स्कूल और 4,091 ग्राम पंचायत स्तरीय आदर्श विद्यालय बनाने का लक्ष्य तय किया गया है। राज्य सरकार के मुताबिक इन विशिष्ट स्कूलों में 15 लाख से छात्र-छात्राओं को प्राइवेट स्कूलों की तरह स्तरीय शिक्षा मिलेगी। 80 उत्कृष्ट विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों का ऑनलाइन प्रशिक्षण दो चरणों में नेशनल सेंटर फॉर स्कूल लीडरशिप द्वारा कराया जा चुका है। इन्हें अजीम प्रेमजी फाउंडेशन द्वारा प्रशिक्षित किया गया है। जनवरी माह में प्रधानाध्यापकों को आईआईएम की ओर से स्किल डेवलपमेंट ट्रेनिंग भी दी गई है। इन उत्कृष्ट विद्यालयों के बच्चों को व्यावसायिक प्रशिक्षण भी दिया जाएगा। बच्चों को एग्रीकल्चर, आईटी, आईटीईएस, अपारेल एण्ड मेडअप एण्ड होम फर्निशिंग, मीडिया एंड एंटरटेनमेंट, ऑटोमोटिव, टूरिज्म एण्ड हॉस्पिटलिटी समेत अन्य ट्रेड में प्रशिक्षण दिया जाएगा। संबंधित ट्रेड से जुड़े राज्य स्तरीय प्रतिष्ठानों एवं संस्थानों के साथ इंडस्ट्रियल फील्ड विजिट की व्यवस्था की जा रही है ताकि भावी जीवन में उनके रुचि के अनुसार रोजगार के अवसर भी उपलब्ध हो सके। हेमंत सरकार का यह सराहनीय कदम है।

बिन पानी सब सून

हिमालय के ग्लेशियर पिघलने की दर तेज होने से आकलन के मुताबिक 2050 तक हिमालय के ग्लेशियर लगभग समाप्त हो जाएंगे, इससे भूजल पर निर्भरता बढ़ेगी। भूजल का दोहन बढ़ा तो समूची दुनिया को गंभीर संकट का सामना करना पड़ेगा। इस समय देश में 61.6 प्रतिशत भूमि सिंचाई के लिए भूजल पर निर्भर है, केवल 24.5 प्रतिशत ही नहरों से सिंचित है। शेष पर अन्य पारंपरिक साधनों से सिंचाई होती है। हाल यह है कि देश के लगभग एक तिहाई जिलों में स्थाई भूजल भंडार भी समाप्त हो गए हैं। इसलिए हमें उतना ही भूजल निकालना चाहिए जितना हर वर्ष पुनर्भरण से इकट्ठा होता है। इस आसन्न संकट को देख कर ही हमें भूजल विकास कार्यक्रम बनाने चाहिए और उनका अनुश्रवण करना चाहिए।भूजल के मामले में एक तो हमारे पास वर्तमान तकनीकों से मेल खाने वाले कानूनों का भी अभाव था दूसरे व्यवस्थित अनुश्रवण व्यवस्था भी नहीं थी। 2005 के कानून ने इस कमी को कुछ हद तक पूरा किया है। उससे पहले 1882 का एक कानून था जिसके अनुसार कोई भी अपनी जमीन के नीचे से भूजल दोहन कर सकता था। जाहिर है उस समय ऊर्जा चालित गहरे कुआं बनाने की तो कोई सुविधा ही उपलब्ध नहीं थी। लोग रेहट, कुओं आदि से भूजल दोहन करते थे, जिससे भूजल स्तर पर कोई प्रभाव पड़ने की संभावना ही नहीं रहती थी। आज जब एक डेढ़ हजार फुट नीचे तक से भूजल का निकास संभव हो गया है तो सोचना जरूरी हो गया है। जल की समस्या लगातार बढ़ी होती जा रही है। चैन्नई से बंगलूरू तक रांची से लेकर पटना तक हर शहर में भूमिगत जल कम होता जा रहा है। मानसून की अनिश्चितता भी लगातार बढ़ती जा रही है जिससे स्थिति विषम हो रही है।

आर्टिफिशल इंटेलिजेंस से डर केवल जॉब गंवाने का नहीं

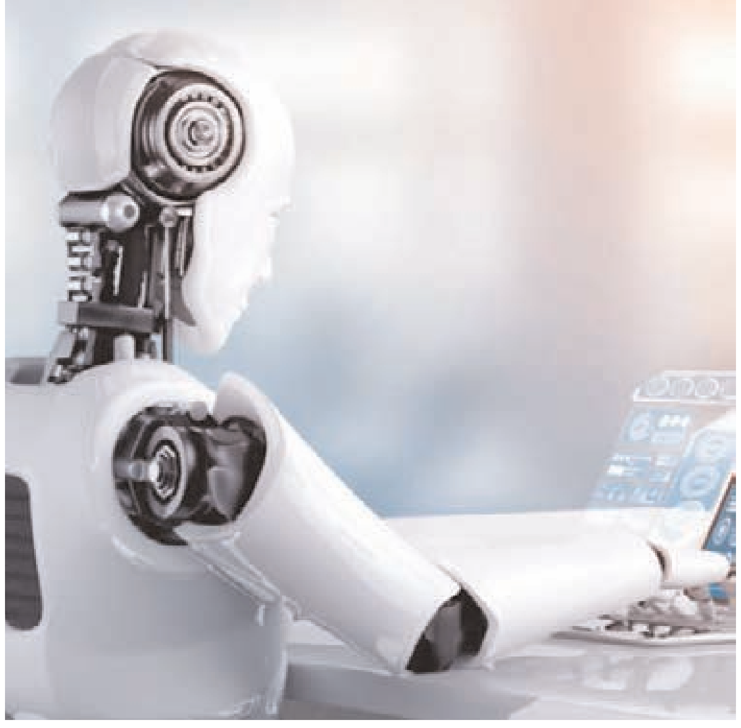

-अजित बी कृष्णण

ज्योफ्रे हिंटन ने हाल ही में गूगल छोड़ने की घोषणा की और जब उनसे पूछा गया कि वह ऐसा क्यों कर रहे हैं तो उन्होंने जवाब दिया, मैंने इसलिए छोड़ा ताकि मैं आर्टिफिशल इंटेलिजेंस (एआई) के खतरों के बारे में बिना यह सोचे बात कर सकूं कि इसका गूगल पर क्या असर होगा। उनकी इस बात ने हम सभी को यह सोचने पर विवश कर दिया कि आखिर हमारे सामने क्या कुछ आने वाला है। हम सभी हिंटन की टिप्पणी को इसलिए बहुत गंभीरता से लेते हैं क्योंकि उन्हें वैज्ञानिक हलकों में एआई के संरक्षक के तौर पर जाना जाता है। न्यूरल नेटवर्क के पीछे उन्हीं का दिमाग है।

यह एक गणितीय अवधारणा है जो इंसानी भाषाओं के भारी-भरकम डेटाबेस से खास किस्म के रुझानों को अलग करती है। ऐसे में आप कह सकते हैं कि चैटजीपीटी जैसे कार्यक्रम बिना न्यूरल नेटवर्क के अस्तित्व में नहीं आ सकते थे और हिंटन ने इसे इस्तेमाल लायक बनाने में योगदान किया है।

ज्योफ्रे हिंटन की बातों और उनके कदमों का शायद वही प्रभाव हो जो उस समय होता अगर होमी भाभा ने सन 1950 के दशक में यह कहते हुए परमाणु ऊर्जा आयोग छोड़ दिया होता कि, हमैंने इसलिए छोड़ दिया ताकि मैं बिना यह सोचे परमाणु ऊर्जा के खतरों के बारे में बात कर सकूं कि इन बातों का भारत के परमाणु कार्यक्रम पर क्या असर होगा?अगर वैसा होता तो भारत शायद परमाणु ऊर्जा को लेकर अपने बड़े-बड़े सपने पहले ही त्याग देता। या फिर मानो ईएमएस नंबूदरीपाद मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी छोड़ते हुए यह कहते, हमैंने इसलिए पार्टी छोड़ी ताकि मैं मार्क्सवाद के खतरों के बारे में बात कर सकूं..वगैरह।

आमतौर पर तकनीकी क्षेत्र में किसी भी नई पहल के समय कुछ लोग आशंका जताते हैं कि इससे नौकरियों को नुकसान होगा। इस बार रहस्यमय बात यह है कि एक नई तकनीक के सह रचयिता ने चेतावनी दी है। ऐसे में हमारे लिए जरूरी है कि हम उसकी बात सुनें।

तकनीक पर अगर निगरानी न रखी जाए तो यह मुश्किल हालात पैदा कर सकती है। उदाहरण के लिए भोपाल में सन 1984 में यूनियन कार्बाइड (एवरेडी बैटरी की निर्माता) के कारखाने में घटित भोपाल गैस त्रासदी को याद कीजिए। तीन दिसंबर, 1984 को करीब 45 टन खतरनाक मिथाइल आइसोसाइनेट गैस इस कीटनाशक संयंत्र से रिसी और करीब 15,000 लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी। तकरीबन पांच लाख बचे हुए लोग दृष्टिहीनता तथा कई प्रकार की अन्य बीमारियों के शिकार हुए क्योंकि वे विषाक्त गैस के संपर्क में आए थे।

इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका के अनुसार इस बात पर सहमति बनी कि कमतर परिचालन और सुरक्षा प्रक्रिया की कमी के कारण यह त्रासदी घटित हुई। दूसरे शब्दों में कहें तो यह मामला बिना समुचित निगरानी के तकनीक के इस्तेमाल का था। हिंटन ने सार्वजनिक रूप से जो चिंताएं जताई उनमें एक प्रमुख चिंता यह थी कि बुरे काम करने वाले एआई का इस्तेमाल करके गलत काम कर सकते हैं।

ऐसे काम जो मासूम नागरिकों को प्रभावित करें। वह उदाहरण देते हैं कि अधिनायकवादी नेता कृत्रिम ढंग से तैयार भाषणों और लेखन का उपयोग करके मतदाताओं को प्रभावित करते हैं। कुछ ऐसे उदाहरण भी हैं जिन्हें कहीं अधिक आसानी से समझा जा सकता है। एक उदाहरण है चालकरहित बस का एक यातायात संचालित पथ पर घुस जाना या सैन्य ड्रोन का मासूम लोगों पर हमला कर देना।

सवाल यह है कि ऐसे में केवल चिंतित होने के अलावा हम नीतिगत स्तर पर क्या कदम उठा सकते हैं? हाल के सप्ताहों में कई शोधकर्ताओं और सिलिकन वैली के कई थिंकटैंक्स ने दुनिया भर के लोगों से यह अपील करनी आरंभ की है कि वे एक ऐसे खुले पत्र पर हस्ताक्षर करें जो जीपीटी4 (चैटबॉट जीपीटी के निर्माताओं द्वारा निर्मित) से अ?धिक श?क्तिशाली एआई प्रयोगों को छह माह के लिए रोकने की मांग करता है।

फ्यूचर ऑफ लाइफ इंस्टीट्यूट ने 28,000 लोगों से ऐसी एक अपील पर हस्ताक्षर कराए। हस्ताक्षर करने वालों में टेस्ला के संस्थापक और ट्विटर के मालिक ईलॉन मस्क, ऐपल के सह-संस्थापक स्टीव वोजनियाक और डीप लर्निंग और ट्यूरिंग अवार्ड विजेता यो?शिओ बेंजियो शामिल थे। इन लोगों की कुछ अनुशंसाएं इस प्रकार हैं:

ऐसे तरीके निकालें जो एआई से तैयार सामग्री को पहचान सकें, एआई से होने वाले नुकसान की जवाबदेही तय हो, एआई प्रणाली के लिए तीसरे पक्ष द्वारा अंकेक्षण और प्रमाणन की व्यवस्था हो (पूरी रिपोर्ट ह्यएफएलआई रिपोर्ट: पॉलिसी मेकिंग इन द पॉजह्र)।

हम खुद को जिस ?स्थिति में आते हैं वह सन 1990 के दशक के इंटरनेट के शुरुआती समय की याद दिलाती है। उस समय भी ऐसी ही चेतावनी दी जाती थी और कहा जाता था कि इंटरनेट तकनीक के कारण लोग घृणा फैलाने वाले या अश्लील संदेशों का प्रसार करेंगे या सूचनाओं की चोरी करेंगे। कहा जाता था कि इंटरनेट नवाचार के कारण मानवता का नष्ट होना तय है। हमने उन चिंताओं को दूर करने के लिए कानून बनाए और मध्यवर्ती प्लेटफॉर्म का निर्माण किया जो ऐसे मंच मुहैया कराते थे जहां लोग सामग्री तैयार कर सकते थे और अन्य लोग उन पर टिप्प?णियां कर सकते थे।

इसके चलते रचनाकारों और टीकाकारों को गलत वक्तव्य से जुड़ी तमाम तरह की कानूनी जवाबदेहियों से मु?क्ति हासिल हुई और मध्यवर्ती कंपनियों और प्लेटफॉर्म को निरंतर नवाचार करने का अवसर मिला। इस क्षेत्र में भी वि?भिन्न प्रकार के कानून लाकर जवाबदेहियों को इसी प्रकार बांटा जा सकता है।

इन तमाम विषयों पर विचार करते हुए यह संभव है कि उन शोधकर्ताओं, निवेशकों और उद्यमियों के लिए कठिनाई पैदा हो जाए जो अपने काम को बढ़ाचढ़ाकर बताने के लिए आर्टिफिशल इंटेलिजेंस की अभिव्यक्ति का इस्तेमाल कर बैठते हों। क्या ऐसी तकनीक को ह्यमशीन लर्निंग का नाम देना अधिक उचित होगा?

> ज्योफ्रे हिंटन की बातों और उनके कदमों का शायद वही प्रभाव हो जो उस समय होता अगर होमी भाभा ने सन 1950 के दशक में यह कहते हुए परमाणु ऊर्जा आयोग छोड़ दिया होता कि, हमैंने इसलिए छोड़ दिया ताकि मैं बिना यह सोचे परमाणु ऊर्जा के खतरों के बारे में बात कर सकूं कि इन बातों का भारत के परमाणु कार्यक्रम पर क्या असर होगा?अगर वैसा होता तो भारत शायद परमाणु ऊर्जा को लेकर अपने बड़े-बड़े सपने पहले ही त्याग देता।

खास बात
प्रवासी भारतीय

आरके सिन्हा

अब लगभग हर रोज मीडिया में भारत से बाहर बसे भारतीयों की उल्लेखनीय उपलब्धियों पर खबरें होती हैं। विश्व बैंक का अध्यक्ष बनने से लेकर किसी देश का राष्ट्राध्यक्ष, प्रधानमंत्री, सांसद वगैरह बन रहे हैं भारतीय। बात यहां तक ही सीमित नहीं है। संसार के कोने-कोने में रहने वाले भारतीयों ने अपने देश के खजाने को अपने पैसे से लबालब भर दिया है। रिजर्व बैंक के फरवरी, 2023 तक के आंकड़े बता रहे हैं कि रिजर्व बैंक का एनआरआई डिपाजिट 136 अरब रुपये हो चुका है। एनआरआई का मतलब है नॉन रेजिडेंट इंडियन (अप्रवासी भारतीय) है। साफ है लगभग तीन करोड़ भारतवंशी तथा एनआरआई अपने वतन को खुशहाल करने का ठोस काम कर रहे हैं। इसलिए यह समझना गलत होगा कि वे सात समंदर जाते ही भारत को भूल जाते हैं।

ऐसा नहीं है। वे कहीं भी चले जाएं, पर रहते भारतीय ही हैं। उनकी पहचान भारतीय के रूप में होती है। वे सब भी गर्व करते हैं कि उन्हें कई पीढ़ियों बाद भी भारतीय ही माना जाता है। एक बार केन्या के हॉकी के महान खिलाड़ी अवतार सिंह सोहल बता रहे थे कि अफ्रीका में 125 से भी ज्यादा सालों से भारतीय बसे हुए हैं। अब वहां उनकी चौथी-पांचवीं पीढ़ी आबाद है। अफ्रीका से अनेक भारतीय परिवार यूरोप, कनाडा, अमेरिका वगैरह भी जाकर बस गए। पर वे जहां भी जाते हैं खुद को भारतीय ही बताते हैं। सोहल ने केन्या का चार ओलंपिक खेलों में प्रतिनिधित्व किया है। उन्होंने चंडीगढ़ में एक फ्लैट भी खरीदा है। कुछ अफ्रीकी देशों में बसे भारतीय कहते हैं कि अगर कभी संकट पैदा हुआ तो वे भारत का रुख कर सकते हैं। इसलिए वे भारत में भी अपनी संपत्ति रख लेते हैं।देश की मजबूत आर्थिक सेहत में उन अनाम भारतीयों का भी बड़ा योगदान नहीं है जो हर साल भारत पैसा भेजते हैं। आमतौर पर मीडिया में उन्हीं की चर्चा होती है जो बड़े इनवेस्टर होते हैं। कोई भी राज्य जब अपने यहां निवेश आमंत्रित करता है तो उसकी निगाह बड़ी कंपनियों पर ही रहती है। मानता हूं कि उनका निवेश भी जरूरी होता है पर अगर अपने देश के नागरिक ही अपने देश में निवेश

निडरता

विचार-प्रवाह

प्रेम प्रकाश

वह आस्था और निर्भीकता दिखाने वाले लोगों के साथ आज भी खड़ा है। उनकी अपील का असर हुआ और देखते-देखते स्थिति में तेज सुधार देखने को मिला। आज भी तकरीबन ऐसी ही स्थिति है। कोरोना संक्रमण की दूसरी लहर बीते वर्ष आई पहली लहर के मुकाबले ज्यादा भयावह है। इंसान से ज्यादा खबरों में लाशें हैं। मनुष्य के लिए मृत्यु का सच ऐसी भयावहता लेकर आया है कि प्रेम, सद्भाव और सहयोग जैसे सामाजिक सरोकार सिरे से गायब हैं। मानवीय करुणा अभी भी बची है, इसके लिए साक्ष्य जुटाने पड़ रहे हैं। ऐसे में न सिर्फ महामारी से बचाव की चिंता है बल्कि इस बात की भी चिंता है कि आदमी एक-दूसरे से दूर होकर, भयभीत होकर क्या अपनी हिफाजत कर पाएगा। जाहिर है जवाब होगा नहीं। पर इस नहीं को हम अपने अमल में कैसे लाएं। कैसे यह दिखेगा कि इतिहास में महामारियों के कई दौर और दो-दो विश्वयुद्ध के बाद हम यह सबक सीख गए हैं अपने देशकाल को प्रेम और करुणा से दूर होते देखना कुछ और नहीं बल्कि इंसान के लिए अपने मौलिक दरकारों-सरोकारों से दूर होना है। इसलिए जब कोविड-19 के रूप में महामारी ने पूरी दुनिया में मौत को पहाड़ जैसे आंकड़ों में बदला तो सामाजिक अध्ययन से जुड़े कई विद्वानों ने इस बात को प्रस्तावना दुनिया के आगे रखी कि यह सेहत से ज्यादा सभ्यता का संकट है। जीवन की हिफाजत की चुनौती पर हम तभी खरे हो पाएंगे जब मनुष्यता और उसकी सामाजिकता को साथ-साथ बचाएं।

ऐसे में हमें करना क्या है, इस बारे में कई लोगों ने कई तरह के सुझाव दिए हैं।

कार्टून वर्ल्ड

लेटर टू एडिटर

गृहयुद्ध जैसी स्थिति

पाकिस्तान में बीते दिनों इमरान खान को जिस तरीके से गिरफ्तार किया गया उसे लेकर जनता सड़कों पर उतर आई। पहले ही कंगाली से जूझ रहे पाक में दंगे भड़कने से गृहयुद्ध की स्थिति उत्पन्न होती नजर आयी। यदि ऐसे ही पाकिस्तान की सड़कों पर अराजकता जारी रही तो सेना को सत्ता हथियाने का मौका मिल सकता है। पाकिस्तान में सेना प्रभावी है।

-सुभाष सिंह, जमशेदपुर

आदर्शों का हनन

कर्नाटक विधानसभा चुनावों में राजनीतिक दलों द्वारा चुनाव आचार संहिता की धज्जियां उड़ाने का वर्णन करने वाला था। इन विधानसभा चुनावों में सत्तापक्ष द्वारा ध्रुवीकरण करने का यत्न किया गया। कांग्रेस ने भी बजरंग दल पर पाबंदी लगाने का आश्वासन दिया। दरअसल बात सिर्फ चुनाव जीतने की नहीं है बल्कि देश की एकता, अखंडता, तथा भाईचारे को बचाए रखने की भी है।

- रवि, रांची

भीषण गर्मी के बावजूद बुक बैंक में बच्चों का आना, पुस्तकें प्राप्त करना जारी है। आज भी कई बच्चे बुक बैंक आए। अपने उपयोग की पुस्तकें लेकर गए। बुक बैंक में पुस्तकों का संग्रह बच्चों के चेहरे पर बहुत खुशी का एहसास कराता है। बच्चों की खुशी ही बुक बैंक सफलता है।

-संजय सेठ, सांसद रांची

आपके ट्वीट

नई दिल्ली में झारखण्ड भवन के निर्माण कार्य का निरीक्षण किया। मुख्यमंत्री ने कहा निर्माण कार्य में गड़बड़ी बर्दाश्त नहीं। 15 दिन में भवन निर्माण को लेकर जिम्मेदार अधिकारियों एवं सलाहकारों की भूमिका से संबंधित जांच रिपोर्ट पेश करें। - हेमंत सोरेन,

ट्रेन और प्लेन सुविधाओं में पिछले सालों में अप्रत्याशित वृद्धि हुई-पर मांग भी बढ़ी है। यह परिणाम है बदलते भारत के सकारात्मक बदलाव का, एकभारतश्रेष्ठभारत का। दिक्कत तो है पर रेल मंत्री और उड्डयन मंत्री की अगुआई सजग है। -महेश पोद्दार

सोचना होगा बिन भूजल, कैसा होगा कल

कुलभूषण उपमन्यु

पर्यावरण

हाल ही में दक्षिण अफ्रीका की राजधानी केपटाउन को जलविहीन घोषित किया गया है। प्रकृति का यह बदला रूप सारी दुनिया के लिए भयावह संदेश है। जलवायु परिवर्तन के दौर में पूरी दुनिया में जल आपूर्ति अपने आप में एक चुनौती के रूप में उभरती दिख रही है। पृथ्वी का 71 प्रतिशत हिस्सा पानी से ढका हुआ है। कुल उपलब्ध जल का 97 प्रतिशत भाग सागरों में है, जो खारा है। केवल तीन प्रतिशत जल ही प्रयोग के योग्य है, जिसमें 2.4 प्रतिशत ग्लेशियरों में है। केवल 0.6 प्रतिशत जल ही नदियों, झीलों आदि में है। पृथ्वी पर कुल 32 करोड़, 60 लाख खरब गैलन पानी है। सागरों से पानी भाप बन कर बादलों के रूप में बरसता है। उसमें से कुछ ही ग्लेशियरों और बर्फ, नदी जल, भूजल के रूप में धरती पर रुक जाता है, बाकी बह कर फिर समुद्र में चला जाता है। जो पानी धरती पर रुक गया, वही हमारे उपयोग के योग्य बचता है। जलवायु परिवर्तन से जमीन पर गर्मी बढ़ रही है और इससे ग्लेशियर और बर्फ के रूप में रुकने वाला जल ग्लेशियर और बर्फ के पिघलने की गति बढ़ने के कारण घटता जा रहा है।

भूगर्भ विज्ञान के विकास के साथ हमें पता चल गया है कि भूजल भंडार तो मीलों तक आपस में जुड़े हो सकते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि भूजल को निजी भूमि से जुड़े व्यक्तिगत अधिकार के रूप में मान्यता नहीं दी जा सकती। भूजल सामुदायिक संसाधन है। इसलिए सामुदायिक हितों के दृष्टिगत ही इसका प्रबंधन होना चाहिए। वर्तमान कानून में इस दिशा में रास्ता बना है किन्तु मौके पर कानून के प्रावधानों को लागू करने की लचर व्यवस्था से काम चलने वाला नहीं है।

हिमाचल प्रदेश के संदर्भ में इसे समझते हैं। हिमाचल में दोहन योग्य भूजल 0.97 बिलियन घन मीटर वार्षिक है, जिसमें से 0.36 बिलियन घन मीटर ही निकाला जा रहा है। 2019 तक प्रदेश में 39085 हैंड पंप जलशक्ति विभाग द्वारा लगाए गए हैं और 8000 निजी कुओं का निर्माण किया गया है। किन्तु यह आंकड़ा विश्वसनीय बिलकुल भी नहीं है, क्योंकि बिना मंजूरी और पंजीकरण के कितने हैंडपंप और सिंचाई कुआं हैं इसकी कोई जानकारी किसी के पास नहीं है। नियमों का उल्लंघन करके ट्यूबवेल लगाने के लिए पांच साल जेल और 10 लाख रुपये तक जुर्माने का प्रावधान 2005 के कानून में था। इसे संशोधित करके जेल की सजा को हटा दिया गया। यह अच्छा कदम है। किन्तु जुर्माने के साथ अवैध लगाए गए भूजल दोहन संयंत्रों को बंद करवाने का प्रावधान होना चाहिए।

गैर पंजीकृत ठेकेदारों की चर्चा भी जरूरी है। 2019 में नए बोर करने पर अगले आदेशों तक प्रतिबंध लगा था, किंतु इसके बावजूद बोर लगाने का काम ऐसे ही लोगों द्वारा चलता रहा। घटते भूजल स्तर से भटियात तहसील में लगे 50 प्रतिशत से ज्यादा हैंडपंप सूखे पड़े हैं। अन्य जगहों में भी ऐसा है। अति दोहन से कई जगह प्राकृतिक जलस्रोत सूख गए हैं।

इसका असर छोटे नदी-नालों के जलस्तर पर भी पड़ेगा। यह भी समझ से परे है कि 2017 में कांगड़ा का इंदौरा, सिरमौर का काला अंब, सोलन का नालागढ़ और ऊना क्षेत्र में भूजल दोहन स्तर पुनर्भरण क्षमता से ज्यादा था। 2020 के बाद के आकलन में इन क्षेत्रों को भी सुरक्षित घोषित किया गया है। जब कि उसके बाद दोहन का स्तर तो बढ़ता ही गया है। आशा की जानी चाहिए कि सरकार इस दिशा में गंभीर पहल करेगी।

(लेखक, पर्यावरणविद् हैं।)

वास्तु कला का नायाब उदाहरण है आगरा का किला

निशांत कुमार चौबे

विरासत

देश में कई दर्शनीय स्थल हैं लेकिन इसमें सबसे सुप्रसिद्ध अकबर द्वारा निर्मित आगरा का किला कई रहस्यमय जानकारियों को समेटे है। आगरा का किला अकबरी शैली का सर्वप्रथम उदाहरण है। आगरा किला का निर्माण कार्य अकबर दरबार के प्रधान कारीगर कासिम खाँ की देखरेख में हुआ था। इसका निर्माण कार्य 1565 ई में प्रारंभ हुआ और लगभग 15 वर्षों में पूर्ण हुआ। इसके निर्माण कार्य में लगभग 35 लाख रुपया व्यय हुआ था। यह किला यमुना नदी के दायें किनारे पर लगभग डेढ़ मील के घेरे में स्थित है। इसकी दीवारों के संबंध में कहा जाता है कि उपर से नीचे तक आग जैसे लाल पत्थरों को लोहे के रिंग्स से इस बारीकी से जोड़ा गया है कि उनके जोड़ में एक बाल भी नहीं जा सकता है। इसमें दो प्रवेश द्वार है। इसके पश्चिम का प्रवेश द्वार 1566 ई में बनकर तैयार हुआ था, इसे दिल्ली दरवाजा कहते हैं। यह अकबर के प्रारंभिक काल की स्थापत्यकला का परिचय प्रदान करता है। इसके मुख्य प्रवेश द्वार पर दोनों ओर दो बुर्ज स्थित है जो इसके कलात्मक रूप प्रदान करते हैं। यह बुर्ज अठपहले हैं और इसमें आपस में अनुरूपता है। इसमें कोष्ठकों तथा बाल्कनियों का भी बड़ा सुंदर प्रयोग किया गया है। प्रवेश द्वार को सुसज्जित करने का ड्ढी बड़ा सराहनीय प्रयास किया गया है। मेहराबों को संगमरमर तथा उस पर विभिन्न डिजाइनों के

निर्माण द्वारा सुसज्जित एवं मनोहारी बनाने का प्रयास किया गया है। इस पर फूल-पत्तियों एवं पशु-पक्षियों का निर्माण हुआ है। इस मुख्य प्रवेश द्वार दिल्ली दरवाजा के अतिरिक्त एक दूसरा छोटा प्रवेश द्वार था जो सभी लोगों के उपयोग के लिये न होकर बादशाह के निजी उपयोग के लिये था। किले के चारों ओर खाई की योजना थी। किले के अंदर अकबर ने लाल पत्थरों से पाँच सौ से अधिक भवनों का निर्माण करवाया था। इनमें से कुछ भवनों का निर्माण बंगाल तथा गुजरात की स्थापत्यकला शैली पर हुआ था। किन्तु इनमें से अधिकांशत: भवनों को अकबर के पौत्र तथा ताजमहल के निर्माता शाहजहां ने गिरवाकर उनके स्थान पर संगमरमर के भवनों का निर्माण करवाया था।

अकबर द्वारा निर्मित भवनों में कुछ भवन अभी शेष है। वर्तमान समय में अकबर के किला अपने सौंदर्य से देश ही नहीं विदेशी लोगों को भी आकर्षित करता है। इस किले को लोग केवल देखने ही नहीं जाते बल्कि इससे जुड़े जानकारियां भी हासिल करते हैं। (लेखक नवोदय स्कूल के प्राचार्य हैं।)

संस्थापक
स्व. डॉ अभय कुमार सिंह
वृन्दा मीडिया पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक, प्रकाशक
मंजू सिंह
द्वारा चिरौंदी, बोड़ेया रोड, रांची (झारखंड) से मुद्रित एवं प्रकाशित।
संपादक
अविनाश ठाकुर*
फोन : 94313-55233
पिन- -834006
e-mail
khabarmantra.city@gmail.com
R.N.I No.
JHAHIN/2013/51797
*पीआरबी एक्ट के अंतर्गत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी।
प्रकाशित खबरों से संबंधित किसी भी विवाद का निपटारा रांची न्यायालय में ही होगा।

स्पीड न्यूज

एयर कूल्ड टीएमटी बार ग्रेड 40 और ग्रेड 60 को क्वायल में किया रोल

बासल (रामगढ़)। जाने-माने उद्योगपति नवीन जिन्दल के नेतृत्व वाली कंपनी जिन्दल स्टील एंड पावर पतरातु ने पहली बार एयर कूल्ड टीएमटी बार ग्रेड 40 और ग्रेड 60 को कइल फर्म में रोल किया है। जेएसपी पतरातु के प्लांट हैड आरके अजमेरिया के कुशल नेतृत्व में जेएसपी पतरातु भारत की पहली कंपनी बन गई हैं जिसने एयर कूल्ड टीएमटी बार का उत्पादन किया।

रजरप्पा मंदिर में हुआ सैकड़ों बच्चों का मुंडन संस्कार

रजरप्पा। रजरप्पा स्थित सिद्धपीठ मां छिन्नमस्तिका मंदिर में बुधवार को मुंडन मुहूर्त होने के कारण श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ी हुई थी। इस दौरान सैकड़ों बच्चों का चूल मुंडन कराया गया। मुंडन मुहूर्त के कारण कोने कोने से पहुंचे लोगों ने बकरों व नारियल की बलि देकर मुंडनशाला में अपने अपने बच्चों का मुंडन संस्कार करवाए। जहां बच्चों की किलकारियों से मुंडनशाला गुलजार रहा। इस दौरान बकरों की बलि भी दी गई।

महायज्ञ को लेकर पूरजोर तैयारी

कुजू। आगामी 26 मई से नगर परिषद क्षेत्र के दिगवार में सप्तदिवसीय श्री श्री 1008 श्री शिव परिवार प्राण प्रतिष्ठा सह पंच कुंडीय रुद्र महायज्ञ को लेकर तैयारी शुरू कर दी गयी है। इन सात दिनों में श्रद्धालुओं के बीच भक्ति की बयार बहेगी। इसके लिए समिति के लोग अभी से हीं पुरजोर रूप से तैयारी में लगे हुए हैं।

युवक को सांप ने काटा इलाज के क्रम में हुई मौत

कुजू। कुजू ओपी क्षेत्र के कोषमांडू बाबा स्थित ट्रांसपोर्ट नगर के पास बबलू बॉडी गैरेज में सो रहे युवक को बीती रात में एक जहरीले सांप ने काट लिया। जिससे उसकी मौत इलाज के क्रम में हो गयी। जानकारी के अनुसार बबलू बॉडी गैरेज का मालिक बबलू शर्मा का छोटा भाई डब्लू शर्मा (35 वर्ष) पिता इंद्रदेव मिस्त्री मंगलवार रात में अपने गैरेज में सोया हुआ था। इसी बीच रात करीब तीन बजे के आसपास एक जहरीले सांप ने उसके हाथ एवं पैर में काट लिया। जब युवक को एहसास हुआ तो इसकी जानकारी परिजनों को दिया। जिसके बाद परिजन तत्काल इलाज के लिए सदर अस्पताल रामगढ़ ले जहां।

जनसेवक संघ का धरना 9वें दिन भी जारी

रामगढ़। मांगों को लेकर जन सेवक संघ द्वारा आयोजित धरना बुधवार को 9वें दिन भी जारी रहा। संघ के जिला अध्यक्ष लोकेश कुमार ने बताया कि विभागीय मंत्री से सकारात्मक पहल की गई है। उन्होंने उम्मीद जताया की सरकार उनकी मांगों पर शीघ्र ध्यान देगी और सकारात्मक पहल करेगी। मौके पर रविंद्र कुमार महतो, विकास प्रसाद, उमेश कुमार, अजीत कुमार गुप्ता, बिमल कुमार बेदिया, विनीता सिंह, आलोक मित्रा, परमानंद कुमार, ज्ञानी प्रताप भारती, जितेंद्र प्रसाद, विकास कुमार, संदीप कुमार, आनंद कुमार, जॉर्ज टुडू, रवि सागर पांडेय आदि उपस्थित थे।

गिरिडीह से रांची जाने के क्रम में बाबूलाल मरांडी पंहुचे हजारीबाग

सदर विधायक कार्यालय से संगठन की ऑनलाइन मीटिंग में हुए शामिल

खबर मन्त्र संवाददाता

हजारीबाग। झारखंड के प्रथम मुख्यमंत्री सह भाजपा विधायक दल के नेता बाबूलाल मरांडी अपने गिरिडीह जिले के देवरी प्रखंड स्थित पैतृक आवास खोदईबाग से राजधानी रांची जाने के क्रम में हजारीबाग में रुके। हजारीबाग के विशेश्वर दयाल पथ अवस्थित हजारीबाग विधायक मनीष जायसवाल के आवास पहुंचे जहां उनके पुराने राजनीतिक साथी रहे पूर्व जिला परिषद ब्रजकिशीर जायसवाल से मुलाकात कर उनका कुशलक्षेम जाना। ब्रजकिशोर जायसवाल ने बाबूलाल मरांडी का पुष्पगुच्छ भेंटकर और हाथ जोड़कर अभिनंदन किया। सदर विधायक मनीष जायसवाल से उनके दैनिक राजनीतिक दिनचर्या और स्वसंचालित योजनाओं की जानकारी ली।

विधायक मनीष जायसवाल के द्वारा जानकारी दिए जाने के उपरांत उनके द्वारा क्षेत्र की बहन- बेटियों को दिए जा रहे लहंगा के सौगात के सकारात्मक पहल की स्वतंत्र कंठ से खूब सरहना की। तत्पश्चात विधायक मनीष जायसवाल के सभाकक्ष से केंद्रीय स्तर के संगठनात्मक ऑनलाइन मीटिंग में शामिल हुए ।

कार्यकताओं से मिले बाबूलाल मरांडी : बाबूलाल मरांडी भाजपा कार्यकताओं के बीच बेहद लोकप्रिय हैं। हजारीबाग पंहुचते ही उनसे मिलने भाजपा कार्यकताओं और समर्थकों का एक बड़ा हुजूम जुट गया। बाबूलाल मरांडी ने भाजपा कार्यकताओं से बड़े ही आत्मीय भाव से मुलाकात की और उनके अभिवादन को स्वीकार किया। पूर्व मुख्यमंत्री और भारतीय जनता पार्टी के विधायक दल के नेता बाबूलाल मरांडी ने कहा कि दिल्ली विधानसभा चुनाव के जैसा परिणाम कर्नाटक विधानसभा चुनाव का रहा। झारखंड के विधानसभा चुनाव और लोकसभा सीटों पर कर्नाटक विधानसभा के परिणाम का कोई असर नहीं होगा।

अपना बूथ सबसे मजबूत के तर्ज पर झारखंड में सभी लोकसभा सीटें भाजपा जीतेगी और एक बार फिर झारखंड में भारतीय जनता पार्टी अपना सरकार बनाने की वजूद कायम करेगी। मौके पर सदर विधानसभा क्षेत्र के विधायक प्रतिनिधि दिनेश सिंह राठौड़, कटकमदाग विधायक प्रतिनिधि अजय कुमार साहू, सदर विधायक प्रतिनिधि विजय कुमार, कटकमसांडी विधायक प्रतिनिधि किशोरी राणा, खेलकूद विभाग के विधायक प्रतिनिधि बंटी तिवारी, समाजसेवी नारायण गुप्ता, जयप्रकाश, सदर विधायक के मीडिया प्रतिनिधि रंजन चौधरी सहित अन्य गणमान्य लोग मौजूद रहें।

प्राचीन हनुमान मंदिर के जीर्णोद्धार को ले ग्रामीणों ने की बैठक

धर्मशाला परिसर में बैठक में मौजूद भुरकुंडा के स्थानीय लोग।

खबर मन्त्र संवाददाता

भुरकुंडा (रामगढ़)। भुरकुंडा बाजार स्थित खोपड़िया बाबा प्राचीन हनुमान मंदिर सह धर्मशाला परिसर में मंगलवार की शाम स्थानीय लोगो की बैठक हुई। इसकी अध्यक्षता जवाहर नगर पंचायत के पूर्व मुखिया प्रदीप मांझी और संचालन सतीश मोहन मिश्रा ने किया। बैठक मे सर्वसम्मति से खोपड़िया बाबा प्राचीन हनुमान मंदिर के जीर्णोद्धार का निर्णय लिया गया। साथ ही धर्मशाला को और बेहतरीन ढंग से बनाने और सुचारू रूप चलाने पर सहमति जताई गई। बैठक में आगामी जून माह में आयोजित होने वाले श्री संकटमोचन हनुमान महायज्ञ को सफल बनाने की सहमति बनी।

आंगनबाड़ी केंद्र गरजामो में बच्चों के बीच पोशाक वितरण

बच्चों के बीच पोशाक वितरण करते जिप उपाध्यक्ष किसुन यादव।

खबर मन्त्र संवाददाता

बरही। प्रखंड अंतर्गत डपोक पंचायत के गरजामो स्थित आंगनबाड़ी केंद्र में बच्चों के बीच पोशाक का वितरण किया गया। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि जिला परिषद उपाध्यक्ष सह संघ के प्रदेश अध्यक्ष किशुन यादव शामिल हुए। इस अवसर पर उन्होंने बच्चों के बीच पोशाक वितरण किया। उन्होंने कहा कि बच्चें देश के भविष्य है।

इसलिए बच्चों के परवरिश में किसी प्रकार कु कोताही नही होनी चाहिए।उन्होंने बच्चों के अभिभावकों एवं उनके माता पिता को संबोधित करते हुए कहा कि शिक्षा किसी के जीवन का आधार है।इसलिए बच्चों को शिक्षित करें। बच्चे न सिर्फ देश का भविष्य, बल्कि वर्तमान भी है।

कराटे शारीरिक व मानसिक विकास के साथ अनुशासन की भी देता है सीख : हरिनाथ

पतरातू बीडीओ ने अंतरराष्ट्रीय कराटेकार कंचन दास को ट्रॉफी देकर किया सम्मानित

खबर मन्त्र संवाददाता

भुरकुंडा (रामगढ़)। मार्शल आर्ट सितोरियू कराटे कोच सह अंतरर्राष्ट्रीय कराटेकार सेंसाई कंचन दास को क्षेत्र में कराटे का बेहतर प्रशिक्षण देने को लेकर बुधवार को पतरातू बीडीओ हरिनाथ महतो ने मेमेंटो देकर सम्मानित किया है। ज्ञात हो कि कंचन दास से कराटे, योग व खेल-कूद का प्रशिक्षण लेने वाले खिलाड़ी प्रखंड व डिस्टिक ही नहीं स्टेट तथा ईस्ट जोन एवं राष्ट्रीय और अंतरर्राष्ट्रीय एथेलेटिक्स व कराटे प्रतियोगिता में मेडल जीतकर कोयलांचल भुरकुंडा का नाम रोशन किया है। यहां बताना लाजमी होगा कि कंचन दास के सफल मार्गदर्शन में 10 से 12 वर्ष के बच्चों ने पिछले वर्ष उड़ीसा में आयोजित नेशनल कराटे में दो सिल्वर एवं एक ब्रांउज मेडल जीतकर क्षेत्र का मान बढ़ाया था। वहीं अप्रैल माह में रांची खेलगांव में आयोजित इंडियन स्कूल कराटे चैम्पियनशिप में 5 गोल्ड व 1 सिल्वर और 3 ब्रांउज मेडल जीतकर जीतकर अपने माता-पिता, स्कूल व प्रशिक्षण को गौरवान्वित कराया था। जबकि पिछले वर्ष ही भाला फेंक में भी एक गोल्ड मेडल जीता है। इधर दो बच्चों का जमशेदपुर में स्टेट लेबल की प्रतियोगिता के लिए चयन हुआ है। वहीं पिछले 7 मई को एथेलेटिक्स प्रतियोगिता के लिए चार बच्चों को चयन हुआ है। चयनित चारो खिलाड़ी आगामी 27 और 28 मई को रजरप्पा डीएवी मैदान में आयोजित प्रतियोगिता में अपने प्रतिभा का प्रदर्शन करेंगे। इन्हीं उपलब्धियों को लेकर पतरातू बीडीओ हरिनाथ महतो ने खेल प्रशिक्षक सेंसाई कंचन दास को ट्रॉफी देकर सम्मानित करते हुए उनका हौसला आफजाई किया है। मौके पर बीडीओ हरिनाथ महतो ने कहा कि शारीरिक व मानसिक विकास के लिए कराटे व योग काफी लाभदायक होता है। उन्होंने कहा कि कराटे आत्मरक्षा का बेहतर साधन तो है ही, यह हमें अनुशासन की भी सीख देता है। श्री महतो ने कहा कि बच्चों को बेहतर भविष्य देने में कंचन दास अहम भूमिका निभा रहे हैं। उन्होंने बच्चों की सफलता पर हर्ष व्यक्त करते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की है। साथ ही प्रशिक्षक कंचन दास को बधाई देते हुए खेल-कूद में अपनी ओर से हर संभव सहयोग करने की भी बात कही है। मौके पर कंचन दास ने कहा कि पढ़ाई के साथ-साथ बेहतर प्रदर्शन कर खेलो में भी कैरियर बनाया जा सकता है। उन्होंने बीडीओ हरिनाथ महतो को बताया कि मैं और मेरे कराटेकार छात्र-छात्राओं ने नेपाल कठमांडू में आयोजित अंतरर्राष्ट्रीय कराटे प्रतियोगिता में कांस्य पदक जीता है। जो की क्षेत्र के लिए काफी गौरव की बात है।

अंतरराष्ट्रीय कराटेकार कंचन दास को सममानित करते बीडीओ।

एक नजर में

अपराधियों को संरक्षण दे रही ऋत्विक कंपनी, घटना को दिला रही अंजाम

समशाद अंसारी

केरेडारी (हजारीबाग)। एनटीपीसी की आउटसोर्सिंग कंपनी ऋत्विक द्वारा अपराधियों को संरक्षण देने के साथ उनकी मदद से कोल ट्रांसपोर्टेशन में खलल डाला जा रहा है। पुलिस की जांच में खुलासा हुआ है कि ऋत्विक कंपनी के जीएमएल भास्कर सिंह ने अपनी ही कंपनी में अपराधियों की मदद से दहशत फैलाने का काम किया है। मकसद कोयला ट्रांसपोर्टेशन पर एकाधिकार जमाना बताया जा रहा है। एनटीपीसी के अधीन ऋत्विक कंपनी कोल ट्रांसपोर्टेशन करती है। ट्रांसपोर्टिंग का टेंडर लेने के लिए कंपनी में ही हंगामा कराया गया। हजारीबाग एसपी मनोज रतन चौथे ने बताया कि ऋत्विक कंपनी के जीएमएल भास्कर सिंह के निर्देश पर षड्यंत्र के तहत 8-9 मई की रात प्रोजेक्ट को-ऑर्डिनेटर की गोली मार कर हत्या कर दी गयी थी। केरेडारी थाना क्षेत्र के चट्टी बरियातू कोल माइंस में एक सफेद स्कॉर्पियो पर सवार छह अज्ञात अपराधियों ने ऋत्विक कंपनी में ट्रांसपोर्टेशन का कार्य कर रही कंपनी के वाहन चालकों को डरा-धमका कर ट्रांसपोर्टेशन कार्य को बाधित करा दिया था। इसे लेकर केरेडारी थाना में एफआईआर (कांड संख्या 116/23) दर्ज हुई थी। हजारीबाग एसपी ने बड़कागांव एसडीपीओ अमित कुमार सिंह के नेतृत्व में विशेष दल का गठन किया था। मामले को लेकर सभी छह संदिग्ध अपराधियों को हिरासत में लेकर पूछताछ की गई, तो खुलासा हुआ कि आरोपियों ने प्रोजेक्ट को-ऑर्डिनेटर की गोली मार कर हत्या कर दी थी।

रामचंद्र सोनी उर्फ रामा सोनी के खुलासे से कंपनी में खलबली : हिरासत में लिए गए आरोपी रामचंद्र सोनी उर्फ रामा सोनी ने खुलासा किया कि ऋत्विक कंपनी के जीएमएल भास्कर सिंह के निर्देश पर षड्यंत्र कर घटना को अंजाम दिया गया था। तकनीकी शाखा के माध्यम से भी भास्कर सिंह की इस घटना में संलिप्तता की पुष्टि हुई है। इस खुलासे के बाद एनटीपीसी और ऋत्विक कंपनी में खलबली मच गई है। वहीं हजारीबाग पुलिस ने इस मामले को लेकर विशेष तहकीकात भी शुरू कर दी है।

कई बिन्दुओं पर उठ रहे सवाल : जीएमएल भास्कर सिंह ने आखिर किसके इशारे पर घटना को अंजाम दिलाया।भास्कर ऋत्विक कंपनी में नौकरी करते हैं, तो उन्होंने अपराधियों की मदद क्यों ली।अपराधियों को माइनिंग कंपनी ही क्यों खुद संरक्षण दे रही है।आए दिन अपराधियों द्वारा धमकी देने की बात सामने आती रही है।

पीएनएम कंपनी बड़कागांव में कोल ट्रांसपोर्टेशन का काम कर रही है।कंपनी रांची के एक व्यवसायी की है, जिसे हटाने के लिए षड्यंत्र रचा गया है। प्रोजेक्ट को-ऑर्डिनेटर हत्याकांड में जीएमएल पर घूम रही शक की सूई।

इन आरोपियों की गिरफ्तारी : रामचंद्र सोनी, विवेक कुमार सोनी, संजय राणा, आदित्य सोनी, मो. शहजाद और मो. शमशेर आलम शामिल है।

पकड़े गए आरोपियों की खंगाली जा रही कुंडली : विवेक कुमार सोनी उर्फ विवेक वर्मा का आपराधिक इतिहास रहा है। उस पर बड़कागांव कांड संख्या 139/13 के तहत धारा : 341, 323, 325, 34, कांड संख्या 82/19 के तहत धारा :302/12बी/34आर्म एक्ट बड़कागांव कांड संख्या 42/20 धारा : 302/34 एवं 27आर्म एक्ट, कांड संख्या 196/20 के तहत धारा : 386, 406, 419, 420, कांड संख्या 214/ 20 धारा : 386,387,120बी और कांड संख्या 2/21 के तहत धारा : 385, 386 और 387 दर्ज हैं

प्रखंड के 10 से अधिक बेटियों को सदर विधायक ने उपहार स्वरूप भेंट किया लहंगा

कटकमसांडी। सदर विधायक मनीष जयसवाल के द्वारा निरंतर भाई यानी सदर विधायक के तरफ से बहनों को उपहार स्वरूप लहंगा भेंट किया गया। विधायक प्रतिनिधि स्वयं बहनों के बीच जा जा कर कर के लहंगा भेंट किया।कटकमसांडी के विभिन्न गांवों में 10 से अधिक बेटियों को उनके विवाह के लिए उपहार स्वरूप लहंगा भेंट किया। विधायक मनीष जायसवाल की ओर से कटकमसांडी विधायक प्रतिनिधि किशोरी राणा ने लोगों को लहंगा अपने हाथों सौंपा।

फरार व्यक्ति को चरही पुलिस ने किया गिरफ्तार, भेजा गया जेल

चरही। चरही थाना क्षेत्र के बहेरा निवासी रंजन कुमार पिता विष्णु महतो को चरही पुलिस ने मंगलवार को गिरफ्तार कर हजारीबाग न्यायायिक हिरासत में भेज दिया गया। उक्त अभियुक्त के विरुद्ध कांड संख्या 11/23 चरही-घाटो सड़क जाम करने तथा सरकारी कार्य में बाधा पहुंचाने को लेकर चरही थाना में मामला दर्ज किया गया था।तब से यह अभियुक्त फरार चल रहा था। पुलिस ने फरार अभियुक्त को गिरफ्तार करने को लेकर छापेमारी अभियान चला रखी थी।

गर्मी से राहत नहीं, लोग हलकान

चरही। चरही तथा कोयलांचल क्षेत्र में एक सप्ताह से भीषन गर्मी पड़ने से ग्रामीण हाल से बेहाल हैं। इतना ही नहीं जंगली जानवर, पशु-पक्षी भी बेहाल हैं। नदी-नाले अहरा, पोखर, तालाब और कुएं सूखते जा रहे हैं। गावं के ग्रामीण सुबह उठकर पानी के तलाश में जुट जाते हैं। मवेशी जंगली जानवर और पशु पक्षी भी पानी के लिए इधर-उधर भटकने को मजबूर हो रहे हैं। तेज धूप और गरम हवा चलने के कारण ग्रामीण इससे बचने के लिए अपने-अपने घरों में दुबक जाते हैं।

स्थापना समिति की बैठक में 132 शिक्षकों के पदस्थापन पर लगी मुहर

रांची में मुख्यमंत्री बाटेंगे नियुक्ति पत्र

संदीप सिन्हा

हजारीबाग। बीते पांच वर्षों से नियुक्ति की आस में बैठे राज्यभर के स्नातक प्रशिक्षित शिक्षकों को कल रांची में आयोजित समारोह में मुख्यमंत्री के हाथों नियुक्ति पत्र दी जाएगी। इसी कड़ी में जिले के 132 शिक्षकों के पदस्थापन पर मंगलवार को स्थापना समिति की मुहर लग गई। रिक्त पदों के विरुद्ध विषयवार स्कूलों का आवंटन कर दिया गया है। मिली जानकारी के अनुसार मंगलवार की देर रात तक तमाम जरूरी प्रक्रियाएं निपटा ली गईं।विभागीय सूत्रों के अनुसार कुल छह अभ्यर्थी कॉउंसलिंग के दौरान अनुपस्थित रहे। वहीं पांच अभ्यर्थियों के संदर्भ में जेएसएससी से मंतव्य मांगा गया है। तीन फेज के कॉउंसलिंग में कुल 118 व इससे पूर्व के कॉउंसलिंग में 14 अभ्यर्थियों को जिला शिक्षा स्थापना समिति की बैठक में विद्यालयों का आवंटन किया गया। बता दें कि ये 14 अभ्यर्थी सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल करने वाले पिटीशनर थे। मालूम हो कि पूर्व सरकार की नियोजन नीति के तहत शेड्यूल व नॉन शेड्यूल जिले में नियोजन को लेकर पेंच फंसा था। इस नीति को उच्च न्यायालय में चुनौती दी गई थी। उच्च न्यायालय ने 13 शेड्यूल जिले की नियुक्ति को रद्द कर दिया था।इन जिलों के नियोजित शिक्षकों ने मामले को स्पेशल लीव पिटीशन (एसएलपी) के तहत सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी। उसके बाद सुप्रीम कोर्ट ने माध्यमिक शिक्षक नियुक्ति संबंधी सभी मामलों को टैग करते हुए फैसला दिया कि सरकार नियुक्ति प्रक्रिया जारी रखते हुए शेष पदों पर बहाली पूर्ण करे। इस फैसले पर कोई कार्यवाई नहीं होने की स्थिति में अभ्यर्थियों ने सुप्रीम कोर्ट में झारखंड सरकार के विरुद्ध कंटेम्प्ट ऑफ कोर्ट का मामला दाखिल किया। जिस पर बीते वर्ष 15 दिसंबर को सुप्रीम कोर्ट ने सभी को बहाल करने का फरमान सुनाया। बहरहाल इस नियुक्ति से एक बार फिर झारखंड के माध्यमिक विद्यालयों की स्थिति सुधरने की उम्मीद जगी है। ऐसा माना जा रहा है कि शिक्षकों की कमी से जूझ रहे इन विद्यालयों के बच्चों के दिन एक बार फिर से बहुरेंगे।

विभिन्न योजनाओं के निरीक्षण में पहुंची संयुक्त सचिव शैल प्रभा कुजूर

चरही। ग्रामीण विकास विभाग झारखंड सरकार के संयुक्त सचिव शैल प्रभा कुजूर के अनुसमर्थन दल द्वारा जिले के चुरचू प्रखंड पहुंची। निरीक्षण दल को विकास कार्यों के निरीक्षण हेतु जरबा पंचायत लाया गया,जहां विभिन्न विकास कार्यों को दिखलाया गया। तीन सदस्यीय दल के साथ चुरचू बीडीओ इंदर कुमार, जेई अरुण कुमार,बीपीओ असीम और स्थानीय मुखिया सुनीता देवी उनके साथ थे। उन्हे अवगत कराया गया कि यह पंचायत सांसद के आदर्श गांव से जुड़ा है। निरीक्षण के क्रम में अमृत सरोवर योजना से बनी तालाब,स्वास्थ्य उप केंद्र,मनरेगा से किया गया समतली करण मैदान दिखाया गया।

विधायक ने किया बंदर बेला में पक्की सड़क मरमत कार्य का शिलान्यास

पदमा। प्रखंड अंतर्गत ग्राम बंदर बेला में पहले से बनी सड़क का प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत मरमती कार्य का शिलान्यास बरही विधायक उमाशंकर अकेला यादव ने फीता काटकर किया गया। यह सड़क आर इ ओ पथ जीहु से ग्राम बंदर बेला तक 3600000 लाख के लागत से 1800 मीटर तक सड़क मरम्मत्ती होना है। यह सड़क अत्यंत ही जर्जर अवस्था में था सड़क बन जाने से लोगों को गांव से हजारीबाग आने जाने में सुविधा होगी। इस अवसर पर विधायक ने कहा कि मैं जल्दी ही इसी गांव में जल नल योजना का शुभारंभ करने आऊंगा। झारखंड सरकार गांव के विकास के लिए कृत संकल्प है। मौके पर मुख्य संघ के अध्यक्ष अनिल मेहता बंदर बेला पंचायत के मुखिया विजय मेहता, पंचायत समिति सदस्य रूबी देवी, भुनेश्वर प्रसाद मेहता, अशोक राणा सुनील राणा, राजेंद्र प्रसाद मेहता, दामोदर साव, मोहम्मद लतीफ मियां, राजकुमार मेहता, संजय मेहता इत्यादि सैकड़ों लोग उपस्थित थे।

अत्यधिक गर्मी के कारण भुरकुंडा साइडिग के कोयला भंडार में लगी आग

बुझाने में जुटे कर्मी, हर समस्या को निपटने के लिए मैंनेजमेंट ने बोरिंग, टैंकर आदि की कर रखी है संपूर्ण व्यवस्था

कोयले में लगी आग को बुझाता कर्मी।

खबर मन्त्र संवाददाता

भदानीनगर (रामगढ़)। अध्यधिक गर्मी के कारण भुरकुंडा साईडिंग स्थित कोल भंडार में आग लर्ग गई। गर्मी के दिनो में तापमान बढ़ने से कोयले में आग लगने की घटना कोई नई नहीं है। वर्तमान में भदानीनगर क्षेत्र के भुरकुंडा रेलवे साईडिंग के कोल भंडारा में पुनः आग लग गई है। जिसे टैंकर व बोरिंग पंप के माध्यम से बुझाने का कार्य चल रहा है। वहीं समस्या को पाटने का प्रयास रेलवे साइडिंग मैनेजमेंट कर रही है। मामले पर साईडिंग संचालक धनंजय यादव ने कहा कि भंडार में कोयला स्टोक के रख-रखाव पर पैनी नजर रखी जाती है, बावजूद इसके गर्मी के दिनो में अमूनन आ लग जाती है। जिसे हर संभव प्रयास कर बुझा दिया जाता है। उन्होंने बताया कि कोयले में लगी आग को कोल स्टोक से उठाकर साईडिंग के सुनसान जगह पर ले जाकर प्रतिदिन बुझाने का कार्य टैंकर के माध्यम पानी डालकर किया जाता है। ताकि किसी को परेशानी का सामना न करना पड़े। मालूम हो कि कोल स्टोक में किसी भी तरह की परेशानी होने पर समस्या को पाटने का प्रयास बखूबी रेलवे साइडिंग मैनेजमेंट करती आई है। प्रदूषण की समस्या को पाटने के लिए भी साइडिंग मैनेजमेंट द्वारा सड़को व कोल भंडार क्षेत्र में नियमित रूप से जल का छिड़काव किया जाता है। श्री यादव ने बताया कि बोरिंग, टैंकर, स्प्रींगल आदि की संपूर्ण व्यवस्था रेलवे साईडिंग में है ताकि किसी भी हाल में आग लगने पर उसे बुझाया जा सके। ज्ञात हो कि पूर्व में भी तापमान बढ़ने के कारण यहां आग लगी थी, जिसे टैंकर के माध्यम से बुझाया गया था।

प्रचंड गर्मी से लोग हुए बेहाल, दोपहर में सड़कों पर चहल-पहल हुई कम

17 मई को तापमान 40 डिग्री तक पहुंचा

रामगढ़। लगातार बढ़ रहे तापमान से जिले वासियों की परेशानी बढ़ गई है। बढ़ते तापमान की वजह से जिले के सड़कों पर दोपहर में सन्नाटा पसरा रहता है। क्योंकि लोग गर्मी की तपिश से बचने के लिए दोपहर में अपने घरों में रहते हैं। ताकि खुद को गर्मी से बचाए रख सकें।

सड़कों पर पसरा सन्नाटा: जिले में तापमान लगातार बढ़ रहा है। जिससे लोगों को अपने दैनिक कार्य निपटाने में परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। बुधवार को जिले का अधिकतम तापमान 40 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया। जिससे लोग काफी परेशान दिखे और अपने घरों में ही दुबके रहना बेहतर समझा।

शीतल पेय और सत्तू के शरबत की बढ़ी मांग : इधर, गर्मी की बढ़ती तपिश से जिले में शीतल पेय और सत्तू के शरबत की मांग काफी बढ़ गई है। गर्मी से बेहाल लोग इससे राहत पाने के लिए शीतल पेय और सत्तू के शरबत का जमकर प्रयोग कर रहे हैं। जिस कारण शीतल पेय और सत्तू के शरबत की बिक्री करने वाले काफ ी खुश दिख रहे हैं। साथ ही गर्मी के कारण बाजार में खीरा, तरबूज, नींबू आदि की भी बिक्री काफी बढ़ गई है।

बढ़ती गर्मी से लोग पड़ रहे बीमार : वहीं, बढ़ती गर्मी के प्रभाव में आकर जिला में लोग बीमार भी पड़ रहे हैं। बीमार लोगों को चिकित्सकों के पास इलाज करवाने के लिए नंबर लगवाते देखा जा रहा है। चिकित्सकों ने लोगों को सलाह दी है की जब तापमान बढ़ जाता है , उस दौरान वे घरों में रहें। कहा की यदि जरूरत पड़ने पर बाहर जाएं तो चेहरे को गमछा, तौलिया आदि से ढंककर रखें। साथ ही पीने के लिए पानी भी साथ में रखें।

स्पीड न्यूज

लोहरदगा ने रांची को चार विकेट से हराया

लोहरदगा। स्थापना दिवस युवा सद्भावना मंच ने बुधवार को बीएस कॉलेज क्रिकेट स्टेडियम में 25-25 ओवर का एक मैच लोहरदगा बनाम रांची के बीच खेला गया। रांची ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी कर 8 विकेट खोकर 165 रन बनाये। विवेकानंद ने 55, सार्थक ने 35 तथा सोनू ने 25 रन बनाये। लोहरदगा के जय जीत ने 3 विकेट तथा सिवा और सुमित ने दो-दो विकेट लिये। जवाबी पारी में लोहरदगा की टीम ने 23 ओवर में 6 विकेट खोकर लक्ष्य हासिल कर लिया। सुमित ने नाबाद 45, प्रेम ने 30 तथा शमशाद ने नाबाद 25 रन बनाये। रांची के सोनू ने 3 तथा प्रशांत ने दो विकेट लिया। उद्घाटन में डीसी वाघमारे प्रसाद कृष्ण, एसपी आर रामकुमार, एसडीओ अरविंद और डीएसओ अमित बेसरा सहित कई खिलाड़ी थे।

गोबर-धन योजना को लेकर कार्यक्रम

कैरो। प्रखंड के हनहट लिप्ट्स बगान में बुधवार को जिला कृषि कार्यलय आत्मा लोहरदगा के तत्वावधान में केंद्र प्रायोजित गोबर–धन योजनांतर्गत मिट्टी की उर्वरता बरकरार रखने को लेकर फोम/एलफॉम कार्यक्रम किया गया। जिसमें प्रखंड तकनीकी प्रबंधक अमरेंद्र वर्मा ने पंचायत के किसानों को जैविक तरीके से खेती करने, नैनो यूरिया, नैनो डीएपी का प्रयोग करने, मोटे अनाज मडुवा, बाजरा की खेती करने को लेकर प्रशिक्षण देते हुए जागरूक किया। साथ ही खेतों में चुना का प्रयोग एवं बीजोपचार सहित कई बिंदु पर जानकारी दी। कार्यक्रम में ग्राम प्रधान जुगल मुंडा, कृषक मित्र राजनारायण सिंह, वार्ड सदस्य नौसाद अली, अंगनु उरांव, नईम अंसारी, सुरेश उरांव, बजरंग साहू, दिलेश्वर भगत, खेलो उरांव, महादेव उरांव, बुदा उरांव, एजाज खान भी थे।

सर्पदंश से वृद्ध ग्रामीण जख्मी

गुमला। घाघरा थाना क्षेत्र के देवाकी निवासी रामचरण टाना भगत (70) सर्पदंश से बुधवार को जख्मी हो गये। परिजन पहले उसे झाड़ फूंक कराने ले गये। करीब दो घंटे तक झाड़ फूंक के बाद जब रामचरण की स्थिति बिगड़ने लगी तो उसे गुमला सदर अस्पताल लाया गया। जहां इलाज चल रहा है।

कई कार्यालयों का होगा उद्घाटन

गुमला। जिले के 40वें स्थापना दिवस पर नव निर्मित कई कार्यालय भवनों का उद्घाटन होगा। जिसमें अनुमंडल स्तरीय पुस्तकालय भवन, अनुमंडल कार्यालय, प्रखंड सह अंचल कार्यालय गुमला, रागी मिलेट कैफे एवं नगर स्थित नव निर्मित पीएचसी सेंटर का उदघाटन किया जायेगा। जिसकी तैयारी पूरी कर ली गयी है। बुधवार को उपायुक्त सुशांत गौरव ने अनुमंडल स्तरीय लाइब्रेरी, अंचल सह प्रखंड कार्यालय एवं अनुमंडल कार्यालय के तैयारियों की वर्तमान स्थिति का निरीक्षण कर जायजा लिया एवं निरीक्षण के दौरान पाए गए कमियों को आज शाम तक दूर करते हुए सभी तैयारियों को पूर्ण करने का निर्देश दिया। उपायुक्त ने कहा कि जिले के 40 वें स्थापना दिवस को धूम धाम से मनाया जायेगा। जिसकी तैयारी कर ली गई है। उन्होंने कहा कि स्थापना दिवस के अवसर पर जिले वासियों को स्वास्थ्य , शिक्षा एवं प्रशासनिक दृष्टिकोण से कई तोहफे दिए जाएंगे। जिसके तहत पीएचसी सेंटर, अनुमंडल स्तरीय पुस्तकालय एवं प्रशासनिक भवनों का उदघाटन किया जायेगा।

पंक्षियों को दाना-पानी दिलाने के लिए सर्वेश्वरी समूह ने चलाया अभियान

गुमला। प्रचंड गर्मी को देख श्री सर्वेश्वरी समूह प्रार्थना गृह शाखा गुमला ने बुधवार को पंक्षी को दाना, पंक्षी को पानी उपलब्ध कराने को लेकर जन जागरुकता अभियाना समूह के गुमला शाखा उपाध्यक्ष अजय प्रसाद की अगुवाई में शहरी क्षेत्र के मेन रोड, जशपुर रोड, डीएसपी रोड सहित मुख्य पथों पर चलाया गया। इस दौरान लोगों के बीच हुए पंक्षियों को पानी देने के लिए मिट्टी का पात्र व दाना का वितरण किया गया। समूह के सदस्य ध्वनि विस्तारक यंत्र के माध्यम से तत्संबंधी स्लोगनों से इस भीषण गर्मी में पंक्षियों को दाना–पानी देने के लिए प्रेरित भी कर रहे थे। अभियान में समूह के संजय महापात्र, अजय प्रसाद, अशोक यादव,कृष्ण कुमार गुप्ता, विजय सिन्हा, आश्रम कुमार, विजय केसरी, अजय सिन्हा, श्यामा कांत मिश्र, अभय कुमार, कुमार दिपांकर, पप्पू चक्रवर्ती, मुन्ना दास, विनोद कुमार, मनोज गुप्ता, सुरेन्द्र सिंह, अर्जुन सिंह, कंचन कुमार, सोहन बड़ाईक, अनिल आदि थे।

गुमला शहर में दो दिनों से जलापूर्ति बाधित, प्रचंड गर्मी में लोग हैं परेशान

गुमला। रूह को झकझोर देने वाली गर्मी से जिलेवासी परेशान हैं। पूर्वाह्न 11 बजे के बाद सड़कों पर गर्मी के कारण निकलना मुश्किल हो गया है। गर्मी का प्रभाव इतना व्यापक है कि लोगों के जीवन पर असर डाल रहा है। ऐसी विषय परिस्थिति के बाद भी गुमला शहर में पिछले दो दिनों से जलापूर्ति बाधित है। लोग पानी के लिए पानी–पानी होने को विवश हो गये हैं। गुमला शहर में हर दस से पंद्रह दिन में किसी न किसी कारण से जलापूर्ति बाधित हो जाती है। विभाग कभी भी जलापूर्ति को लेकर सचेत नजर नहीं आया है और न ही कभी कोई वैकल्पिक व्यवस्था ही कर पायी है। पानी लोगों की सबसे बड़ी जरूरत है और गुमला के अधिकांश परिवार के लोग जलापूर्ति के ही पानी पर निर्भर हैं। ऐसी स्थिति में पेयजल आपूर्ति बाधित होना लोगों के परेशानी का सबसे बड़ा सबब है। प्रचंड गर्मी होने के बाद भी जलापूर्ति नहीं होने से सुबह से ही लोग पेयजल को लेकर परेशान नजर आये। सबसे बुरा हाल तो ड्राई जोन वाले इलाके के लोगों की है। क्योंकि ड्राई जोन क्षेत्र के कुंए भी सुख चुके हैं और लोगों को पानी के लिए भटकना पड़ रहा है। गर्मी के मौसम में पानी की अहमियत हर व्यक्ति जानता है लेकिन दुर्भाग्य है गुमला शहर वासियों का कि उन्हें हमेशा पेयजल आपूर्ति की समस्या से जूझते रहना पड़ता है।

भाजपा प्रदेश संगठन महामंत्री का लोहरदगा में स्वागत

जिला कार्यसमिति की बैठक आज

खबर मन्त्र संवाददाता

लोहरदगा। भारतीय जनता पार्टी झारखंड प्रदेश के प्रदेश संगठन महामंत्री कर्मवीर सिंह के लोहरदगा आगमन पर भाजपा जिला अध्यक्ष मनीर उरांव, पूर्व जिलाध्यक्ष ब्रज बिहारी प्रसाद,राजकिशोर महतो, जिला उपाध्यक्ष हर्षनाथ महतो, नवीन कुमार टिंकु, सूरज मोहन साहू, राजकुमार वर्मा, बालकृष्णा सिंह, सजल कुमार ने संगठन महामंत्री को पुष्प देकर लोहरदगा आगमन पर स्वागत किया। मौके पर जिला कार्यसमिति की बैठक में विषय वस्तु को लेकर चर्चा हुई।

भारतीय जनता पार्टी जिला कार्यालय बक्शीडिप्पा में भारतीय जनता पार्टी जिला कार्यसमिति की बैठक आज 18 मई को दिन के 11 बजे आयोजित की गई है। इस बैठक में जिला भाजपा के सभी पदाधिकारी गण, सभी मोर्चा के जिलाध्यक्ष एवं महामंत्री, मंडल अध्यक्ष एवं महामंत्री एवं जिला कार्यसमिति सदस्य, विशेष आमंत्रित सदस्य, लोहरदगा जिला के सभी पूर्व जिला अध्यक्ष गण एवं लोहरदगा जिला में निवास करने वाले सभी राष्ट्रीय और झारखंड प्रदेश के पदाधिकारी एवं कार्यसमिति सदस्य झारखंड प्रदेश के सातों मोर्चा के पदाधिकारी गण एवं कार्यसमिति सदस्य भाग लेंगे। यह जानकारी देते हुए भाजपा जिला महामंत्री राजकुमार वर्मा ने सभी लोगो से बैठक में उपस्थित होने की अपील की गयी है।

संगठन महामंत्री का स्वागत करते भाजपाई।

भुइंहर मुंडा आदिवासी समुदाय को दिलायेंगे उनका संवैधानिक अधिकार : सुखदेव भगत

- प्रदेश कांग्रेस कमेटी के पूर्व अध्यक्ष ने विशुनपुर प्रखंड के दुर्गम व पहाड़ पर बसे गांवों का किया दौरा

खबर मन्त्र संवाददाता

गुमला। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के पूर्व अध्यक्ष सुखदेव भगत ने बुधवार को विशुनपुर प्रखंड के दुर्गम व पहाड़ी क्षेत्र में बसे गांवों का दौरा किया। इस क्रम में डुमरपाठ, काटोपाना, अंबाकोना, गोरा पाठ, सुखआ पानी, गुदरी व अमतीपानी क्षेत्र के ग्रामीणों की समस्याओं से श्री भगत अवगत हुए। ग्रामीणों ने भुंइहर मुंडा समुदाय को आदिवासियों को सूची में शामिल नहीं करने और सरकारी योजनाओं का लाभ नहीं मिलने की जानकारी श्री भगत को दी।

दौरे के क्रम में ग्रामीणों संग बैठक करते सुखदेव भगत।

खास बातें : श्री भगत ने कहा कि मैं इस पीड़ा से अवगत हूं और जनजातीय सलाहकार परिषद में भी यह बात मैंने उठाया था। कांग्रेस इस मुद्दे पर अत्यंत संवेदनशील है। मैं शीघ्र ही सभी तकनीकी एवं संवैधानिक पहलुओं का अध्ययन कर आदिवासी सूची में शामिल कराने का हर संभव प्रयास करूंगा। हिंडालको कंपनी द्वारा बॉक्साइट खनन से उत्पन्न दुष्परिणाम से भी ग्रामीणों ने अवगत कराया। ग्रामीणों ने श्री भगत को बताया कि गरीब आदिवासी एवं आदिम जनजाति लोगों का हिंडालको द्वारा शोषण किया जा रहा है। सड़क, बिजली, शिक्षा व स्वास्थ्य जैसे बुनियादी सुविधा भी कंपनी लोगों को उपलब्ध नहीं करा रही है। वहीं कंपनी के द्वारा किये जाने वाले ब्लास्टिंग से घर को काफी क्षति पहुंच रहा है। खनन कार्य करने के बाद भूमि का समतलीकरण नहीं किया गया है। हिंडालको बाहर की कंपनी को काम देती है जो सरकारी प्रावधानों का खुलकर उल्लंघन करती है। गरीब आदिवासी जनों को प्रशासन से धमका कर एग्रीमेंट साइन भी करा लेती है।

जिला स्थापना समिति सह जिला अनुकंपा समिति की बैठक

सामान्य अनुकंपा के पांच आश्रितों की नियुक्ति के प्रस्ताव का अनुमोदन

खबर मन्त्र संवाददाता

गुमला। उपायुक्त सुशांत गौरव की अध्यक्षता में बुधवार को जिला स्थापना समिति सह जिला शिक्षा स्थापना समिति सह जिला अनुकंपा समिति की बैठक की हुई। बैठक में उप विकास आयुक्त के स्क्रीनिंग समिति में लिए गए निर्णयों के आधार पर प्राप्त प्रस्तावों पर चर्चा की गई। इस दौरान सामान्य अनुकंपा के आलोक में 5 मृत सरकारी सेवकों के आश्रितों के नियुक्ति के प्रस्ताव को उपायुक्त द्वारा अनुमोदित किया गया।

बैठक में निर्देश देते डीसी व उपस्थित अधिकारी।

चौकीदार अनुकंपा के आलोक में 5 आश्रितों की नियुक्ति के प्रस्ताव को अनुमोदित किया गया। एमएसीपीएस के तहत विमला देवी अनुसेविका को द्वितीय एमएसीपीएस की स्वीकृति दी गयी। चौकीदारों के कुल 48 प्रस्तावों में से 41 प्रस्ताव निर्धारित प्रक्रिया के तहत सही पाए गए हैं। उनकी सेवा संपुष्टि हेतु स्वीकृति प्रदान की गई। शिक्षा विभाग द्वारा नव नियुक्त उच्च विद्यालय के शिक्षकों की नियुक्ति पत्र निर्गत करने एवं पदस्थापन के संबंध में शिक्षा पदाधिकारी गुमला द्वारा रखे गये प्रस्ताव को अनुमोदित किया गया।

खास बातें : गुमला एसडीओ को निर्देशित किया गया कि पदस्थापन प्रस्तावों को पुनः एक बार समीक्षा कर लें। विभिन्न कर्मियों द्वारा स्थानांतरण संबंधित प्राप्त आवेदनों पर जिला स्क्रीनिंग समिति की अनुसंशा पर निर्देशित किया गया कि सभी बिंदुओं पर एक बार बीडीओ से मंतव्य प्राप्त कर संचिका के माध्यम से प्रस्ताव उपस्थापित किया जाये। जिला शिक्षा अधीक्षक गुमला को निर्देशित किया गया कि पारा शिक्षकों के नियुक्ति, पदस्थापन एवं सेवा से संबंधित मुख्य बिंदुओं को बीआरसी एवं पंचायत सचिवालय भवनों पर अंकित करना सुनिश्चित करें।

लोहरदगा : जिला स्थापना दिवस पर विद्यालय में पौधरोपण कार्यक्रम

खबर मन्त्र संवाददाता

लोहरदगा। जिला स्थापना दिवस के 40 वीं वर्षगांठ के अवसर पर राजकीयकृत मध्य विद्यालय नवाडी पाड़ा लोहरदगा में वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रधानाध्यापक अरुण राम के नेतृत्व में विद्यालय परिवार ने वृक्षारोपण कर पर्यावरण को सुरक्षित रखने व अपने लोहरदगा जिला की हरियाली बनाये रखने का संदेश दिया। अरुण राम ने लोहरदगा वासियों को स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामना देते हुए कहा कि लोहरदगा जब जिला बना था पेड़ पौधे से आच्छादित यह क्षेत्र खूबसूरत एवं हर भरा था।

जंगलों की अंधाधुंध कटाई से पर्यावरण पर दुष्प्रभाव पड़ना शुरू हो गया है। बचाव के लिए वृक्षारोपण करना आवश्यक है। हम सभी को लोहरदगा जिला के विकास में अपना सहयोग देना चाहिए। इस के लिए शिक्षा के अधिकार को हरएक बच्चों तक पहुंचाना होगा, सभी बच्चों को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा मुहैय्या कराना होगा। ज्ञान रूपी हथियार से विकास के सारे दरवाजे खुलते हैं।

विज्ञान शिक्षक राहुल कुमार ने कहा की विद्यालय प्रांगण में वृक्षारोपण से विद्यालय की सुंदरता तो बढ़ती हीं है साथ ही पर्यावरण की सुरक्षा भी होती है। हम सभी को यह प्रण लेना चाहिए कि विशेष आयोजनों पर वृक्षारोपण का कार्यक्रम अवश्य करें। इस अवसर पर अजय कुमार, नेमहंती मिंज, सुमित्रा टोप्पो, मनीष कुमार के साथ-साथ माता समिति के सदस्य किरण देवी, सुमन देवी, पुष्पा देवी सहित विद्यालय के छात्र छात्राएं उपस्थित थे।

लोहरदगा जिला स्थापना दिवस को लेकर पौधरोपण करते लोग।

डुमरी : खस्सी चोरी का अभियुक्त गिरफ्तार

डुमरी। थाना कांड संख्या 14/2023 के प्राथमिकी अभियुक्त सलमान खान (26) पिता स्व गुलाम रशुल ग्राम तिगरा थाना जारी को गिरफ्तार कर डुमरी पुलिस ने न्यायिक हिरासत में जेल भेजा दिया। उसपर खस्सी चोरी का मामला दर्ज था।

मवेशी तस्करी मामले में दो युवक गिरफ्तार, जेल

गुमला। जारी थाना क्षेत्र में मवेशी तस्करी मामले में 6 मई को दो लोगों के विरुद्ध एफआईआर दर्ज की गई थी। जिसमें चैनपुर आजाद बस्ती के यासीन खान का 25 वर्षीय पुत्र जाकिर खान व सरवर आलम खान का 25 वर्षीय पुत्र बोधा खान के नाम पर एफआईआर दर्ज की गई थी। जारी थाना प्रभारी मनीष कुमार ने बताया कि गुप्त सूचना मिली थी 6 मई को देर शाम 18 मवेशी को कुछ लोग हांक कर ले जा रहे। जिसकी रेकी की गई और 18 मवेशी को पकड़ा गया। जहां रात का अंधेरा का फायदा उठाकर मवेशी हांकने वाले लोग घटनास्थल से फरार हो गये थे। जिसको लेकर दो लोगों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई थी। जिसे गिरफ्तार करते हुए आज जेल भेजा जा रहा है।

शिविर में भाग लेने 50 सदस्यीय दल दिल्ली रवाना

फोटो कैप्शन4 रवाना होते लोग

लोहरदगा। अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के तत्वावधान में 40 वां वैचारिक क्रांति शिविर आगामी 19 मई से 28 मई 2023 तक आर्य समाज मंदिर, रानी बाग दिल्ली में आयोजन हेतु झारखंड से 50 प्रशिक्षु भाग लेने के लिए बुधवार को रवाना हुए हैं। टीम का नेतृत्व गुरुकुल शांति आश्रम के संचालक एवं आर्य वीर दल झारखंड प्रदेश के प्रांत प्रभारी आचार्य शरचचंद्र आर्य कर रहे हैं। शिविर में चतरा, लोहरदगा एवं लातेहार के प्रतिनिधि भाग लेंगे। जहां बच्चों को आगामी 10 दिनों के शिविर में भारतीय संस्कृति, राष्ट्रीय प्रेम एवं चरित्र निर्माण की भावना जागृत करने हेतु अपनी संस्कृति और गौरव की रक्षा आदि विभिन्न कार्यक्रम के माध्यम से इन्हें संस्कार एवं संस्कृति व चरित्र निर्माण बौद्धिक कार्यक्रम के माध्यम से प्रशिक्षित किया जायेगा।

प्रशासनिक गंभीरता से दुर्घटना में कमी : रमेश

गुमला। कांग्रेस के प्रदेश सचिव रमेश कुमार चीनी ने जिले में बढ़ती सड़क दुर्घटनाओं पर चिंता प्रकट की है। उन्होंने कहा है कि प्रशासनिक गंभीरता और चालकों की सजगता से ही हादसों पर नियंत्रण संभव है। उन्होंने अभिभावकों से कम उम्र के बच्चों को गाड़ी नहीं देने का अनुरोध किया है। अक्सर देखा जाता है कि स्कूली बच्चे और नाबालिग बिना लाइसेंस और अनुभव के सरपट गाड़ी दौड़ाते हैं और असमय काल के गाल में समा जाते है। ऐसी घटनाओं की पुनरावृति न हो। इसके लिए अभिभावकों के साथ स्कूल प्रबंधन को भी गंभीर होना होगा और यह सुनिश्चित करना होगा कि बच्चे गाड़ी लेकर स्कूल नहीं आएं। उन्होंने सड़क सुरक्षा के अधिकारियों से नियमित रूप से जागरूकता अभियान चलाने का आग्रह किया है। साथ ही नशे के सेवन के बाद चालकों से वाहन नहीं चलाने की अपील की है।

लोहरदगा: 6 एचएससी निर्माण कार्य में जांच को समिति गठित

- डीसी ने की जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक

खबर मन्त्र संवाददाता

लोहरदगा। उपायुक्त डॉ वाघमारे प्रसाद कृष्ण की अध्यक्षता में जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक समाहरणालय सभागार में आयोजित हुई। बैठक जिला में 17 स्थानों पर स्वास्थ्य उपकेंद्र निर्माण के संबंध में सदर प्रखंड, सेन्हा, भण्डरा और कुडू प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी द्वारा बताया गया कि कुल 6 एचएससी निर्माण कार्य में डुप्लीकेसी पायी गयी है। उपायुक्त द्वारा तत्काल छह सीएससी में कार्य रोकने का निदेश दिया गया।

साथ ही उप विकास आयुक्त की अध्यक्षता में जांच टीम का गठन किया गया। जिसमें जिला यक्ष्मा पदाधिकारी और कार्यपालक दण्डाधिकारी पूजा कुमारी रहेंगी। समिति द्वारा जांच रिपोर्ट उपायुक्त के समक्ष समर्पित किये जाने का निदेश दिया गया। साथ ही, उन स्थानों के बदल अन्य छह स्थानों पर प्रस्ताव समर्पित किये जाने का भी निर्देश दिया गया।

कुरकुरा थाना के नवनिर्मित भवन का गुमला एसपी ने किया निरीक्षण

- निर्माणाधीन कुरकुरा रेलवे स्टेशन व पुल निर्माण कार्य का भी लिया जायजा

खबर मन्त्र संवाददाता

गुमला। पुलिस अधीक्षक डॉ ऐहतेशाम वकारिव ने बुधवार को कामडारा प्रखंड स्थित कुरकुरा थाना के नवनिर्मित भवन का निरीक्षण किया। एसपी ने भवन का निरीक्षण करने के बाद कहा कि भवन बनकर तैयार है। जल्द इसका उद्घाटन होगा। नये थाना भवन बनने से पुलिस कर्मियों को काम करने में असानी होगी। जिसके बाद एसपी ने निर्माणाधीन कुरकुरा रेलवे स्टेशन व गुरजनडीह पुल निर्माण कार्य का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान कार्य करा रहे संवेदक को एसपी ने कई निर्देश दिये। निरीक्षण में एसपी ने साथ चल रहे पुलिस पदाधिकारियों को विकास योजनाओं के कार्यों का निरीक्षण करने व अपराधियों के खिलाफ कार्रवाई का निर्देश दिया। मौके पर एसडीपीओ बसिया विकास आनंद लागुरी, इंस्पेक्टर एसएन मंडल, बसिया थाना प्रभारी, पालकोट थाना प्रभारी, कुरकुरा थाना प्रभारी व कामडारा थाना प्रभारी उपस्थित थे।

वार्ड नंबर 10 और 11 में सुलभ रास्ता नहीं है : मिशन बदलाव

- समस्याओं के समाधान को लेकर उपायुक्त, विधायक व सांसदों को करेंगे पत्राचार

खबर मन्त्र संवाददाता

गुमला। मिशन बदलाव की बैठक वार्ड के सवाल वार्ड की सरकार अभियान के तहत कुम्हार ढलान के समीप वार्ड 10 और 11 के मुहल्लेवासियों के साथ नगर अध्यक्ष ज्योति वर्मा की अध्यक्षता में हुई। बैठक में मुहल्लेवासियों ने बताया कि वार्ड 10 और 11 में आम लोगों को बहुत कठिनाई हो रही है। यहां के लोगों के आवागमन के लिए रास्ते एवं पुल नहीं हैं और बरसात में पूरा मुहल्ला बंद हो जाता है। कोई भी व्यक्ति आकस्मिक परिस्थितियों में भी एक जगह से दूसरे जगह जाने के लिये सोचता है और कई बार पगडंडियों में चलने से स्कूली बच्चे गिर चुके हैं। मुहल्लों के मरीजों को अस्पताल पंहुचाना बहुत बड़ी चुनौती होती है।

जंगल से लकड़ी लाने के क्रम में गड्ढे में गिरी महिला, पैर टूटा

गुमला। चैनपुर थाना क्षेत्र के नवागांई की ज्ञानमुनी लकड़ा (45) पति अंधरियस लकड़ा बुधवार को जंगल से लकड़ी लाने के क्रम में एक गड्ढे में गिरकर घायल हो गयी। महिला का पैर टूट गया। साथ गये लोगों ने उसे गड्ढे से निकालकर इलाज के लिए चैनपुर स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया। जहां प्राथमिक उपचार के बाद उसे गुमला सदर अस्पताल रेफर कर दिया गया। जानकारी के अनुसार बुधवार की सुबह घर से करीब तीन किमी दूर महिला कुछ लोगों के साथ जंगल लकड़ी लाने गयी थी।

शहर में पेयजलापूर्ति एक सप्ताह से ठप, लोग बेहाल

- विभागीय अधिकारी अलग अलग अलाप रहे हैं राग

खबर मन्त्र संवाददाता

लोहरदगा। शहरी क्षेत्र में भीषण गर्मी में एक सप्ताह से जलापूर्ति व्यवस्था ठप रहने से लोग बेहाल है।शरीर को जला देने वाली गर्मी में लोग पानी के लिए पानी पानी हो रहे हैं।इधर, जलापूर्ति नहीं होने के कारण बिजली की समस्या और शंख और कोयल नदी में पानी की कमी बताई जा रही है। वही पेयजल आपूर्ति ठप्प रहने का कारण दो विभाग के बीच आपसी समन्वय की कमी भी एक वजह बतायी जा रही है। दोनों विभाग अलग ही राग अलाप रहे है। इस संबंध में शहरी जलापूर्ति योजना के संवेदक कुमार संदीप ने बताया की बिजली की कमी और लो वोल्टेज के कारण शहर में जलापूर्ति नहीं हो पा रही है। वोल्टेज कम होने के कारण पानी मशीन नहीं चल पा रहा है। इधर बिजली विभाग के कार्यपालक अभियंता ने बताया की न तो संवेदक और नही नगर परिषद से ऐसी कोई शिकायत मिली है।

आंदोलनकारियों को पहचान और सम्मान देने में राज्य सरकार विफल : राजू महतो

- हजारों आंदोलनकारियों का चिह्नि तीकरण कार्य अधर पर : कयूम खान
- चिह्नि तीकरण आयोग का दल पहुंचेंगे लोहरदगा : अश्विनी कुजूर

खबर मन्त्र संवाददाता

लोहरदगा। झारखंड आंदोलनकारी संघर्ष मोर्चा लोहरदगा जिला समिति की बैठक बुधवार को कार्यकारी जिला अध्यक्ष अमर किन्डो की अध्यक्षता में हुई। बैठक में केंद्रीय समिति के अध्यक्ष राजू महतो, महासचिव कयूम खान, वरीय उपाध्यक्ष अश्विनी कुजूर, केन्द्रीय सदस्य इसरार अहमद, सीता उरांव आदि मुख्य रूप से उपस्थित थे। मौके पर केन्द्रीय अध्यक्ष राजू महतो ने कहा कि झारखंड आंदोलनकारियों की पहचान और सम्मान सहित अन्य लाभ देने के मामले में झारखंड सरकार अभी तक विफल रही है। आगामी 09 जून को राज्य स्तरीय सम्मेलन में आगामी रणनीति बनाकर आंदोलन कारियों को लेकर जबरदस्त आंदोलन कर झारखंड सरकार को विवश किया जाएगा। श्री महतो ने सरकार से मांग करती है कि जेल जाने की बाध्यता को समाप्त करते हुए तय सीमा के अंदर सभी आंदोलनकारियों को चिन्हित करते हुए व्यवस्था का लाभ सुनिश्चित करें। केंद्रीय महासचिव कयूम खान ने ने भी लोगों को संबोधित किया।

आंदोलनकारी मोर्चा की बैठक में उपस्थित लोग।

- संबोधित करने वालों में जिला संयोजक प्रोफेसर विनोद भगत, केंद्रीय महिला संयोजिका सीता उरांव, सचिव विशेषण भगत, चैतू मुंडा, इसरार अहमद, जिला प्रवक्ता अनिल कुमार भगत, दशरथ उरांव, अमर किन्डो, नगर अध्यक्ष रूस्तम खान, दीपक वर्मा, जगदीश उरांव, कृष्णा ठाकुर, तरामनी मिंज, अजित खाखा, सुशीला लकड़ा, प्रिसका कुजूर आदि शामिल थे। बैठक का संचालन जिला प्रवक्ता अनिल कुमार भगत ने की। मौके पर नगर सचिव दिनेश साहू, सुखदेव उरांव, सूरज मोहन लकड़ा, आरिफ खान, खुर्शीद आलम, आनंद भगत, मनोज उरांव, अशफाक खान, असगर खान, हाजी सुलतान अंसारी, ललिता भगत, छोटन विश्वकर्मा, अनुभा टोप्पो, खुर्शीद आलम आदि सहित बड़ी संख्या में आंदोलनकारी मौजूद थे। सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि अगली बैठक 14 जून को होगी।

पुस्तकालय में शिक्षा ग्रहण कर अपने जीवन का लक्ष्य हासिल करें विद्यार्थी : अगुस्टीन

- पुस्तकालय के सफल संचालन को लेकर हुई कमेटी की बैठक

खबर मन्त्र संवाददाता

घाघरा। प्रखंड मुख्यालय स्थित पुस्तकालय के सफल संचालन को लेकर बुधवार को बीडीओ विष्णु देव कच्छप की अध्यक्षता में बैठक आयोजित की गई। बैठक में सर्वप्रथम नव चयनित अध्यक्ष अगस्टिन महेश कुजूर, सचिव अनिरुद्ध चौबे, कोषाध्यक्ष विजय कुमार साहू को शॉल ओढ़ाकर बीडीओ सीओ, प्रखंड प्रमुख ने स्वागत किया।

मौके पर अध्यक्ष अगस्टिन महेश कुजुर ने कहा कि पुस्तकालय खुलने से प्रखंड क्षेत्र के लोगों को लाभ मिल रहा है। बच्चे बच्चियां मन लगाकर पढ़ाई करें और नौकरी के क्षेत्र में अपना परचम लहरायें। सचिव अनिरुद्ध चौबे ने कहा कि पुस्तकालय की मर्यादा बनाये रखते हुए आप बच्चे बच्चियां शिक्षा ग्रहण करें। नौकरी की तैयारी करें और मुकाम तक पहुंचे।

बैठक को संबोधित करते बीडीओ विष्णुदेव कच्छप व उपस्थित अन्य।

कार्यक्रम की खास बातें : प्रखंड प्रमुख सविता देवी ने बच्चों को उत्साह के साथ शिक्षा ग्रहण करने की बात कही। बीडीओ बिष्णुदेव कच्छप और सीओ प्रणव ऋतुराज ने कहा कि उपायुक्त व अन्य अधिकारियों के पहल से पुस्तकालय का शुभारंभ क्षेत्र के बच्चों के लिए किया गया है। कई बच्चे गरीबी के अभाव में नहीं पढ़ पाते हैं वैसे लोग पुस्तकालय में अपना भविष्य बनाएं और बेहतर तैयारी कर सरकारी नौकरियों में जाएं। इससे पूर्व बैठक में बच्चों को बेहतर सुविधा देने, अधिक से अधिक बच्चों को प्रचार-प्रसार के माध्यम से पुस्तकालय से जोड़ने आदि पर चर्चा हुई। मौके पर विधायक प्रतिनिधि संजीव उराव, चंद्रदेव उराव, अमित ठाकुर, विनोदानंद पाठक, कृष्णा कुमार लोहरा, शीला कुजूर, मनोज सिन्हा, गौतम साहू, शहजाद खान सहित कमिटी के कई सदस्य व बच्चे बच्चियां उपस्थित थे।

3 दिनों से लापता युवक का शव तोपचांची झील से बरामद

खबर मन्त्र संवाददाता

तोपंचाची। 3 दिनों से लापता युवक का शव तोपचांची झील में तैरता हुआ मंगलवार को पाया गया ।अपनी प्रेमिका से मिलने तोपचांची झील गए युवक का शव दो दिन बाद 16 मई की दोपहर झील से बरामद किया गया। युवक की शिनाख्त तोपचांची निवासी शेख मनीर के बेटे शेख इमरान (24) के रूप में हुई है। उसके कपड़े व जूते रविवार को तोपचांची झील किनारे पाए गए थे, जिसकी पहचान इमरान के परिजनों ने की थी। पुलिस जूते व कपड़े जब्त कर थाना ले गई थी। इसके बाद से ग्रामीण झील में उसकी खोज कर रहे थी। शव मिलने की सुचना पर आसपास के ग्रामीणों की भीड़ झील किनारे जुट गई। इधर, तोपचांची थाना पुलिस पूरे मामले की जांच में जुट गई है। शव को पोस्टमार्टम के लिए एसएनएमएमसीएच भेज दिया गया। मिली जानकारी के अनुसार,

प्रेमिका से मिलने गया था तोपचांची झील

शेख इमरान शनिवार की रात अपनी प्रेमिका से मिलने घर से निकला था।

झील किनारे से कपड़े व जूते बरामद होने के बाद पुलिस ने इमरान के दो दोस्तों रूपेश कुमार व पंकज कुमार को हिरासत में लेकर पूछताछ की। दोस्तों ने बताया कि इमरान ने रात को फोन कर बुलाया था। कहा था कि उसे प्रेमिका से मिलने जाना है। इसके बाद दोनों ने उसे शनिवार की रात करीब 12 बजे झील के पास ले जाकर छोड़ दिया था। पुलिस दोनों युवकों से पूछताछ कर सच्चाई जानने की कोशिश कर रही है।

परिजनों ने पुलिस पर लगाया लापरवाही का आरोप

इधर इमरान का शव मिलने के बाद आक्रोशित परिजनों ने पुलिस पर लापारवाही का आरोप लगाया है,कहा कि झील किनारे से इमरान का कपड़ा बरामद कर पुलिस थाने में ले जाकर सो गई। अगर समय पर गोताखोर को बुला कर झील में खोजबीन की गई होती, तो पहले ही सब कुछ पता चल जाता।

सांसद ने एसवीएम में आयोजित चित्र प्रदर्शनी का किया उदघाटन

खबर मन्त्र संवाददाता

बोकारो। नेहरू युवा केंद्र, बोकारो के सहयोग से नगर के सेक्टर-3सी स्थित सरस्वती विद्या मंदिर में आजादी के अमृत महोत्सव थीम पर आयोजित चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन बतौर मुख्य अतिथि धनबाद लोकसभा सांसद पशुपतिनाथ सिंह ने किया। उन्होंने प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए कहा कि प्रदर्शनी में प्रदर्शित राज्य के स्थानीय स्वतंत्रता सेनानियों के साथ-साथ देश के स्वतंत्रता सेनानियों की जानकारी राष्ट्रभक्ति के लिए प्रेरणास्त्रोत है।

स्वतंत्रता सेनानियों की जीवनियां राष्ट्रप्रेम की भावना का संचार करती है। केंद्रीय संचार ब्यूरो द्वारा प्रकाशित न्यू इंडिया समाचार की इस महीने की प्रति भी उन्हें भेंट की गई।

चंदनक्यारी में चलाया गया वाहन जांच अभियान

बोकारो। जिला परिवहन पदाधिकारी संजीव कुमार के निदेर्शानुसार जिला परिवहन कार्यालय एवं यातायात पुलिस के द्वारा संयुक्त रूप से चंदनक्यारी स्थित इलेक्ट्रोस्टील परिसर के समीप जांच अभियान चलाया गया जिसमें बिना त्रिपाल लगे वाहनों पर मोटर वाहन अधिनियम के तहत जुमार्ना लिया गया। इसके अलावा बड़ी वाहनों के चालकों द्वारा सीट बेल्ट का इस्तेमाल, गति सीमा आदि की भी जांच की गई। वाहन चलाते वक्त मोबाइल फोन का प्रयोग करने वालों पर भी सख्ती की गई। साथ ही वाहन संचालकों को कड़ी हिदायत देते हुए वाहन अधिनियम का पालन करने को कहा गया। परिवहन विभाग द्वारा निर्देश दिया गया कि परमिट व अन्य प्रपत्र उपलब्ध न होने पर वाहनों को सीज कर परिवहन विभाग के नियम के अनुसार जुमार्ना किया जाएगा।

दामोदर बचाओ आंदोलन बोकारो जिला की बैठक संपन्न

खबर मन्त्र संवाददाता

बोकारो। बोकारो सर्किट हाउस में सुरेंद्र प्रसाद सिन्हा की अध्यक्षता एवं अभय कुमार मुन्ना के संचालन में आयोजित दामोदर बचाओ आंदोलन बोकारो जिला की बैठक में आंदोलन के अध्यक्ष सरयू राय ने कहा कि वर्ष 2004 में दामोदर के अस्तित्व को समझने के लिए जारी अभियान में आम लोगों की सहभागिता के कारण अभियान ने गति पकड़ा। दामोदर को प्रदूषित करने वाली अधिकतर सरकारी कंपनियां एवं उद्योग के ऊपर अंकुश लगाना संभव हुआ। अब दामोदर की सहायक नदियों के संरक्षण एवं स्वच्छता हेतु गंगा दशहरा के दिन बोकारो जिला के सभी निर्धारित 23 स्थलों पर आमजन, सम्मानित जनप्रतिनिधि, बुद्धिजीवी लोगों को लेकर जागरूकता कार्यक्रम करने की आवश्यकता है।

उपायुक्त ने जिला सड़क सुरक्षा समिति की बैठक में दिये निर्देश

बोकारो। बोकारो समाहरणालय स्थित कार्यालय कक्ष में उपायुक्त कुलदीप चौधरी की अध्यक्षता में जिला सड़क सुरक्षा समिति की मासिक बैठक की गई। मौके पर एसपी चंदन कुमार झा, एडीसी सादात अनवर, एसडीओ चास दिलीप प्रताप सिंह शेखावत, सिविल सर्जन डॉ अभय भूषण प्रसाद, डीटीओ संजीव कुमार, धनबाद सांसद प्रतिनिधि आर एन ओझा, बेरमो विधायक प्रतिनिधि विनोद कुमार, सहायक उत्पाद आयुक्त, डीपीआरओ राहुल कुमार भारती आदि उपस्थित रहे। उपायुक्त श्री चौधरी ने दो पहिया वाहन का सघन जांच कर नियम संगत कार्रवाई करने एवं चिन्हित स्थलों पर रंबल स्ट्रिप तथा रेडियम लाइट लगाने का निर्देश दिया।

अवैध आरा मशीन पर वन प्रमंडल और दुगदा पुलिस की संयुक्त छापेमारी

बेरमो। बोकारो से वन प्रमंडल बोकारो द्वारा मंगलवार को भी दूसरे दिन दुगदा थाना पुलिस के सहयोग से दुगदा थाना क्षेत्र के चंदुआडीह एवं दुगदा बस्ती में अवैध ढंग से संचालित आरा मील में छापेमारी अभियान चला कर भारी मात्रा में लकड़ी व आरा मशीन को जब्त किया। छापेमारी का नेतृत्व वन प्रमंडल बोकारो के वनरक्षी रुद्र प्रताप सिंह कर रहे थे। अवैध आरा मिल के संचालक मौके से फरार हो गए। छापेमारी दल चंदुआडीह रोड़ साइड अवैध आरा मिल एवं दुगदा बस्ती में एक साथ छापेमारी की जहां से भारी मात्रा में कीमती लकड़ी बरामद किया।

टांड़ बालीडीह में रुद्र महायज्ञ महोत्सव का हुआ शुभारम्भ

बोकारो। जैनामोड़ टांड़ बालीडीह में श्री श्री 108 पांच दिवसीय रुद्र महायज्ञ महोत्सव में पूजन-कार्यक्रम का शुभारंभ अखिल भारतीय अग्रवाल कल्याण महासभा के प्रदेश अध्यक्ष सह झामुमो नेता अनिल अग्रवाल ने किया। उन्होंने कहा कि इस तरह के आयोजन से पूरा क्षेत्र भक्तिमय हो गया है। महायज्ञ से न सिर्फ सनातन धर्म परंपरा को बल मिलता है, बल्कि वातावरण भी शुद्ध होता है। उन्होंने कहा कि रुद्र महायज्ञ का फल तत्काल मिलता है। इस दौरान आयोजन समिति के लोगों ने श्री अग्रवाल को अंगवस्त्र भेंट कर सम्मानित किया।

विधायक पूर्णिमा ने 39 लाख की 12 योजनाओं का किया उद्घाटन व शिलान्यास

विकसित झरिया की पहचान दिलाना प्राथमिकता : पूर्णिमा नीरज

खबर मन्त्र संवाददाता

झरिया। झरिया विधायक सह सचेतक श्रीमती पूर्णिमा सिंह द्वारा विभिन्न जगहों पर 39 लाख 9 सौ रुपए की लागत से 12 विकास योजनाओं का शिलान्यास व उद्घाटन किया। उक्त सभी योजये विधायक मद से खर्च हुआ है। इस दौरान स्थानीय लोगों ने आतिशबाजी व पुष्प हार से विधायक पूर्णिमा नीरज सिंह का गर्म जोशी से स्वागत किया । इस दौरान विधायक ने कहाकि जनता

से किया वादा निभा रहे है। साथ ही राज्य में विकासशील झरिया के रूप में पहचान दिलाने को लेकर प्रयासरत है। विकसित व खुशहाल होगा झरिया तो समाजिक उत्थान में सार्थक साबित होगा।

सीएमपीडीआइ आरआइ 2 ने आश्रम को 2 लाख 80 हजार के 25 बेड किये भेंट

खबर मन्त्र संवाददाता

धनबाद। बुधवार को लालमणि वृद्धा सेवा आश्रम 'अपना घर'आसन डाबर, कदैया रोड, टुंडी स्थित आश्रम में सेंट्रल माइन प्लैनिंग एंड डिजाइन इंस्टीट्यूट, आर आई- 2, धनबाद ने अपने कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व (सीएसआर) के तहत आश्रम को बहुत ही नितांत जरूरी 25 आधुनिक, कीड़ों से सुरक्षित, बेहद आरामदायक गद्देदार बेड प्रदान किया।

आश्रम में वृद्धजनों के पुराने बेड, फोल्डिंग खाँट काफी चरमराई और खराब स्थिति में हो गए थे ।इसी के संबंध में आश्रम के अध्यक्ष नौशाद गद्दी के विशेष आग्रह पर सेंट्रल माइन प्लानिंग एंड डिजाइन इंस्टीट्यूट आर आई 2 के क्षेत्रीय निदेशक राजीव कुमार सिन्हा और उनकी पत्नी रानी कुमारी, महाप्रबंधक (खनन) रविंद्र नाथ सिंह, विभागाध्यक्ष(वित) डी.के. तिवारी, मैनेजर (कार्मिक एवं प्रशासन) जोली भट्टाचार्य, नोडल अधिकारी (सीएसआर) नवीन कुमार, उप प्रबंधक (पर्यावरण) कुमार वैभव, क्षेत्रीय निदेशक (पीए) बृजेश कुमार यादव, सीनियर क्लर्क दिलीप दत्ता, मणिलाल कुमार ने सीएमपीडीआई के कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व तहत आश्रम पहुंचकर 2 लाख 80 हजार कीमत की मजबूत, टिकाऊ एवं बेहतरीन बेड प्रदान किया एवं वृद्धजनों की सुध बुध ली। इस अवसर पर लालमणि प्रबंधन ने सभी

सीएमपीडीआई के अधिकारियों को शॉल ओढाकर, आश्रम का स्मृति चिन्ह एवं पुष्पगुच्छ भेंट कर इस पुनीत कार्य के लिए सम्मानित किया। सेंट्रल माइन प्लैनिंग एंड डिजाइन इंस्टीट्यूट आर आई 2 धनबाद के क्षेत्रीय निदेशक राजीव कुमार सिन्हा ने कहा सीएमपीडीआई बहुत मजबूती के साथ लालमणि वृद्धा सेवा आश्रम के आदरणीय वृद्ध माताओं पिताओं को सेवा प्रदान करने के लिए खड़ा है। अभी सीएसआर के तहत इन्हें 25 बेड प्रदान किया गया है तथा भविष्य में सीएमपीडीआई के तरफ से और भी अनेक सुविधाएं प्रदान की जाएंगी। महाप्रबंधक रविंद्र नाथ सिंह ने कहा आश्रम के अध्यक्ष नौशाद गद्दी एवं आश्रम मैनेजमेंट की टीम को वे हार्दिक बधाई देते हैं कि अपना घर व्यापार छोड़ के वृद्धों के सेवा के जुनून में इनकी खाने-पीने, रहने एवं सारी सुविधाओं की वस्तुओं की जुगाड़ में अनवरत लगे रहते हैं मानव सेवा सब की बात नहीं है यह ईश्वरीय देन ही है जो मानव के लिए इतना उत्कृष्ट कार्य कर रहे हैं सीएमपीडीआई यथासंभव लालमणि वृद्धा सेवा आश्रम को भविष्य में मदद करते रहेगी।

डी.के. तिवारी विभागाध्यक्ष वित्त ने कहा हम सीएमपीडीआई टीम का आश्रम से एक गहरा नाता हो गया है और यहां कर सेवा करने के लिए हम सभी तत्पर रहते हैं। पहली बार आश्रम आई मैनेजर मैनेजर ,(कार्मिक एवं प्रशासन) जोली भट्टाचार्य ने कहा कि एकदम दुनिया से अलग जगह में आ गई हूं और वृद्ध जनों से नीला सच्चा अपनापन और आशीर्वाद बहुत ही अच्छा लगा। आश्रम की माताओं एवं पिताओं के साथ मिलन सुखद अनुभूति का शब्दों में व्याख्यान नहीं किया जा सकता। आश्रम में वृद्धजनों का खास रखने वाले ओमकार मिश्रा ने कहा आज आश्रम की वृद्धजनों के आराम सुविधा के लिए लिए बहुत खुशी का दिन है 25 नये बेड लगने से आश्रम का हर रूम सुंदर, साफ- सुथरा व्यवस्थित लग रहा है। पूरा दिन आश्रम में सीएमपीडीआई की टीम ने वृद्ध माता-पिताओं के साथ बिताया और बीते हुए इस पल को एक अच्छा दिन,अच्छा समय बताया और शीघ्र सेवा में उपस्थित होने का भावुकतापुर्ण कर रवाना हुए। आश्रम के इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम में समाजसेवी ओंकार मिश्रा और आश्रम के कोषाध्यक्ष अधिवक्ता प्रशांत वर्मा का सक्रिय योगदान था।

ढिबरा के बहाने माइका का हो रहा था अवैध उत्खनन, 6 जेसीबी व 7 ट्रक जब्त, मचा हड़कंप

कोडरमा। वन विभाग के अधिकारियों व कर्मियों की मिलीभगत से कोडरमा थाना अंतर्गत वन्य प्राणी आश्रयणी में लंबे समय से ढिबरा के नाम पर माइका का अवैध उत्खनन चल रहा था। मामला प्रकाश में आया तो वन विभाग ने बुधवार को कार्रवाई की और वन्य प्राणी आश्रयणी स्थित लोमचांची (चितरपुर) जंगल से जेसीबी और ट्रक जब्त किया। उस इलाके में बड़े पैमाने पर माईका को निकालने के लिए खदान बना लिए गए थे और भारी मात्रा में माईका का उत्खनन कर स्थानीय माइका पाउडर और माईका पेपर प्लांट में बेचा जा रहा था। मिली जानकारी के अनुसार अवैध खनन की सूचना राज्य सरकार के साथ ही आला अधिकारियों को दी गई और तब बुधवार को वन्य प्राणी आश्रयणी के डीएफओ अवनीश चौधरी के नेतृत्व में छापेमारी अभियान चलाया गया। इस दौरान काफी संख्या में अवैध खनन में लिप्त वाहनों को जब्त किया गया पर एक भी व्यक्ति गिरफ्त में नहीं आ सका। यह भी जानकारी है कि छापेमारी के पहले इस कार्य में लगे लोगों को इसकी सूचना मिल गई थी, जिसके कारण सभी व्यक्ति वहां से फरार हो गए थे। हालांकि इस बड़ी कार्रवाई, वाहनों की जप्ती के बाद अवैध खनन में लिप्त लोगों में हड़कंप मच गया है ।ढिबरा मजदूरों के नाम पर संगठित गिरोह अवैध उत्खनन कर मजदूरों के पेट पर लात मार रहा है। कोडरमा में लाखों मजदूर ढिबरा चुनकर दो वक्त की रोटी का जुगाड़ करते हैं। मगर ढिबरा मजदूरों की आड़ में बड़े बड़े गिरोह जंगल में मशीन लगाकर अवैध माइनिंग कर रहे। जिसके वजह से गरीब ढिबरा मजदूरों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। उक्त बातें ढिबरा स्क्रैप मजदूर संघ (डीएसएमएस) के जिलाध्यक्ष कृष्णा सिंह घटवार ने कही। उन्होंने कहा कि कोडरमा में ढिबरा चुनने वाले गरीब मजदूर हैं, जो दिनभर कड़ी मेहनत कर 10-12 किलो ढिबरा चुनते हैं। इसी ढिबरा को बेचकर घर परिवार चलता है।

15000 ग्रामीणों के सामने पानी की समस्या, धरना पर बैठे

केंदुआ। पानी की समस्या को लेकर भोला नाथ बसेरिया के ग्रामीणों ने ईस्ट बसुरिया क्षेत्र के विद्युत आपूर्ति को ठप कर बीसीसीएल प्रबंधक के खिलाफ नारेबाजी करते हुए धरने पर बैठ गए। ग्रामीणों ने बताया कि करीब 15 -16 दिनों से बसरिया के पांच छह गांवों के हजारों लोग पानी की समस्या से जूझ रहे हैं। बसेरिया दास बस्ती में बीसीसीएल के गोंन्दुडीह खास कुसुंडा कोलियरी प्रबंधक के द्वारा एक समरसेबल पंप लगाकर बसेरिया दास बस्ती, यादव बस्ती, तिवारी बस्ती, रवानी बस्ती, मसाला पट्टी, पांच नंबर, चार नंबर आदि क्षेत्रों मे जला आपूर्ति किया जाता था ।लेकिन पिछले 15, 16 दिनों से यह समरसेबल पंप खराब हो गया है। जिससे इन सभी क्षेत्रों में जलापूर्ति ठप है। जिससे यहां पर रह रहे हजारों लोग पानी की समस्या से जूझ रहे हैं।

लोगों को कोनार नदी में नया इंटेकवेल बना कर स्वच्छ पानी दिया जायेगा : विधायक

खबर मन्त्र संवाददाता

बेरमो /गोमिया। गोमिया विधायक डॉ लंबोदर महतो के साथ जिप सदस्य डॉ सुरेंद्र राज, पलिहारी गुरुडीह मुखिया सपना कुमारी, गोमिया मुखिया बलराम रजक व स्वांग उतरी मुखिया बिनोद विश्वकर्मा बुधवार को गोमिया प्रखंड के खम्हरा पंचायत स्थित कोनार नदी में नया इण्टेकवेल बनाने को लेकर स्थल का निरीक्षण किया। इस दौरान पेयजल एवं स्वच्छता विभाग तेनुघाट के कार्यपालक अभियंता शशिशेखर सिंह,सहायक अभियंता शास्त्री शाह व जेई रोहित मंडल भी उपस्थित थे। निरीक्षण के पश्चात विधायक डॉ लंबोदर महतो ने बताया कि गोमिया एवं पलिहारी गुरुडीह पंचायत के लोगों को जल्द ही कोनार नदी से स्वच्छ पानी पाइपलाइन द्वारा घर घर पहुंचाया जाएगा। इसके लिए कोनार

नदी में स्थल का निरीक्षण विभाग के पदाधिकारियों के साथ किया गया है। इसी स्थल पर नया इण्टेकवेल व पानी का नया मोटर हाउस बनाया जाएगा। वहीं पुराने पाइपलाइन को भी दुरुस्त किया जाएगा। कहा कि इसके लिए जल्द ही सर्वे व डीपीआर तैयार कर विभाग को भेजा जाएगा और उसके बाद प्रशासनिक स्वीकृति कराई जाएगी। विधायक ने बताया कि वे शुरू से हीं गोमिया एवं पलिहारी गुरुडीह पंचायत में कोनार नदी से पानी उपलब्ध कराने को लेकर डीएमएफटी की पहली बैठक में इस मामले को उठाया था और विधानसभा के सत्र में भी इस मुद्दे को कई बार उठाया। वहीं इस बारे में राज्य के मुख्यमंत्री एवं पेयजल एवं स्वच्छता मंत्री से भी मिला। कहा कि मेरा मानना है कि जल्द ही इन दो पंचायतों के लोगों को कोनार नदी से स्वच्छ पानी उपलब्ध होगा। जानकारी के अनुसार गोमिया एवं पलिहारी गुरुडीह पंचायत में अभी बोकारो नदी से पाइपलाइन द्वारा पानी सप्लाई किया जा रहा है। लेकिन लोगों की मांग है कि उन्हें कोनार नदी से ही पानी सप्लाई किया जाये।

एक नजर में

बागबेड़ा जलापूर्ति योजना का बनेगा नया फील्टर प्लांट

जमशेदपुर। बागबेड़ा हाउसिंग कॉलोनी जलापूर्ति योजना से बरसों से हो रहे गंदे पानी की सप्लाई को लेकर बागबेड़ा महानगर विकास समिति के अध्यक्ष सह भाजपा नेता सुबोध झा के नेतृत्व में 2005 से क्रमबद्ध आंदोलन के बाद बागबेड़ा हाउसिंग कॉलोनी में पाइप बिछाने का कार्य का शुभारंभ हुआ और फिल्टर पानी विभाग द्वारा उपलब्ध किया गया। पेयजल एवं स्वच्छता विभाग के कार्यपालक अभियंता जेएस होरो ने सुबोध झा एवं प्रतिनिधि को बताया कि नये फिल्टर प्लांट के लिए झारखंड सरकार के द्वारा एक करोड़ 82 लाख रुपया विभाग को उपलब्ध करा दिया गया है। पेयजल एवं स्वच्छता विभाग के कार्यपालक अभियंता जेएस होरो से आंदोलनकारी सुबोध झा की बातचीत में होरो ने बताया कि विभाग के द्वारा एक करोड़ 82 लाख रुपए लगभग का टेंडर किया गया है। कांट्रैक्टर को ड्राइंग के काम 1 सप्ताह के अंदर पूरा करते ही प्रोजेक्ट आर्डर उन्हें दे दिया गया है। स्वच्छ पेयजल पिलाने के लिए आदित्यपुर मोड़ वोल्टास बिल्डिंग के सामने टाटा स्टील के द्वारा दिए जा रहे वेस्टेज पानी को पेयजल एवं स्वच्छता विभाग आदित्यपुर प्रमंडल के द्वारा फिल्टर कर उपलब्ध कराने के लिए फिल्टर प्लांट का निर्माण का कार्य 1 सप्ताह में शुरू कर बागबेड़ा हाउसिंग कॉलोनी के 1140 घरों में स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने के लिए कार्य का शुभारंभ किया जाएगा। और बागबेड़ा कॉलोनी रोड नंबर 3 रोड नंबर 5 में लगभग 80 घरों में पानी नहीं प्राप्त हो रहे हैं। पेयजल एवं स्वच्छता विभाग के जेई सत्य प्रकाश पांडे जाएंगे, स्विच बॉल आदि निरीक्षण कर समस्या का समाधान भी यथाशीघ्र कर लिया जाएगा।

टिनप्लेट स्टेडियम में राष्ट्रीय नेत्रहीन महिला एवं पुरुष फुटबॉल टूर्नामेंट का आगाज

जमशेदपुर। इंडियन ब्लाइंड फुटबॉल फेडरेशन और दिव्यांग मार्गदर्शन ट्रस्ट जमशेदपुर झारखंड के संयुक्त तत्वाधान में समारोह पूर्वक उद्घाटन के साथ ही बुधवार को संध्या 4:00 से जमशेदपुर के तीनप्लेट स्थित तीनप्लेट स्पोर्ट्स कंपलेक्स में पहली बार (चार दिवसीय) 17 मई से 20 मई 2023 तक राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित नेत्रहीन पुरुषों की 7 वीं और 3री नेत्रहीन महिलाओं के फुटबॉल टूर्नामेंट 2023 का शुभारंभ हुआ। मौके पर बतौर मुख्य अतिथि के रूप में पुरुषोत्तम गोडबोले (हेड) ऑपरेशन एंड मार्केटिंग-जेएफसी, झारखंड) ने प्रतियोगिता स्थल पर पहुंचकर विधिवत टूर्नामेंट का शुभारंभ किया। इसके उपरांत मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों सतनाम कौर कपिला प्रेसिडेंट रोटरी क्लब ऑफ झारखंड अरशद हुसैन, ग्रास रूट कोच ऑफिसर सीएसआर एम राहुल राज, ग्रास रूट कोच झारखंड, यूसीआईएल एडिशनल मैनेजर पर्सनल तपा धीर भट्टाचार्य, हेमलता पी शिरोडकर, गाजिया हादसा, बालाकृष्ण सुनील जेमात्सू मुख्य प्रशासक एवं ऑब्जर्वर आई बीएफएफ मिश्रा ने देश के 4 जोन (क्षेत्रों) से आए हुए 15 राज्यों कि टीमें जिनमें मेजबान झारखंड, पश्चिम बंगाल, उत्तराखंड, तेलंगाना, मेघालय, उड़ीसा, अरुणाचल प्रदेश, केरला, तमिलनाडु, दिल्ली, गुजरात, नागालैंड, अरुणाचल प्रदेश मध्य प्रदेश के प्रतिभागी खिलाड़ियों जिनमें महिला वर्ग में 12 और पुरुषों वर्ग में 12 नेत्रहीन फुटबॉल टीमों के खिलाड़ी, टीम प्रबंधक, टीम प्रशिक्षकों, भारतीय नेत्रहीन फुटबॉल फेडरेशन के शीर्ष अधिकारियों पर्यवेक्षकों, निर्णयकों और मेजबान आयोजन समिति के अधिकारियों से परिचय प्राप्त किया।

हुसैनाबाद विधानसभा क्षेत्र में घोर पेयजल संकट के निदान के लिए विधायक कमलेश सिंह ने लिखा प्रधानमंत्री को पत्र

हुसैनाबाद पलामू। हरिहरगंज विधानसभा क्षेत्र के विधायक कमलेश कुमार सिंह के प्रधानमंत्री को लिखे पत्र पर पीएमओ ने तत्काल संज्ञान लेते हुए जल शक्ति मंत्रालय भारत सरकार से कार्रवाई करने को कहा है। जल शक्ति मंत्रालय भारत सरकार ने पेय जल एवं स्वच्छता विभाग झारखंड सरकार को समस्या का समाधान कर जलशक्ति मंत्रालय एवं विधायक कमलेश कुमार सिंह को अवगत कराने का आग्रह किया है। पीएमओ द्वारा पत्र पर तत्काल कार्रवाई करने पर विधायक ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व जलशक्ति मंत्रालय भारत सरकार के प्रति आभार व्यक्त किया है। सिंह ने उम्मीद जताई है कि जलशक्ति मंत्रालय के आग्रह पर पेय जल एवं स्वच्छता विभाग झारखंड सरकार हुसैनाबाद हरिहरगंज क्षेत्र में जलसंकट का तत्काल समाधान करेगा। मालूम हो कि हुसैनाबाद हरिहरगंज के विधायक कमलेश कुमार सिंह ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र के मध्यम से हुसैनाबाद विधानसभा क्षेत्र में पेयजल संकट का निदान करने का आग्रह किया है। उन्होंने प्रधानमंत्री को लिखे पत्र में कहा है कि झारखण्ड प्रदेश के हुसैनाबाद-हरिहरगंज विधानसभा क्षेत्र में पेयजल का घोर संकट उत्पन्न हो गया है।

सभी के सहयोग से होगा क्षेत्र का विकास, समस्याएं होंगी दूर: मंत्री

मेदिनीनगर। जनप्रतिनिधियों, आमजनों एवं पदाधिकारियों के सहयोग से क्षेत्र का विकास होगा। साथ ही आमलोगों की समस्याएं भी दूर होगी। समन्वय के साथ कार्य करने से बेहतर परिणाम आएंगे। यह बातें महिला, बाल विकास एवं सामाजिक सुरक्षा विभाग की मंत्री-सह- जिला योजना समिति की अध्यक्ष जोबा माझी ने कही। वे बुधवार को पलामू जिले में जिला योजना समिति के बैठक की अध्यक्षता कर रही थीं। पलामू के उपायुक्त बैठक के उद्देश्यों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि जिला योजना समिति पंचायतों एवं नगरपालिका द्वारा तैयार की गई योजनाओं को समेकित करने एवं संपूर्ण जिला के लिए विकास योजना जैसे- शिक्षा, लोक स्वास्थ्य, परिवार कल्याण, महिला बाल विकास, पंचायत एवं ग्रामीण विकास, उर्जा क्षेत्र का प्रारूप तैयार करने हेतु जिला योजना समिति का गठन किया गया है। उपायुक्त ने कहा जिला योजना समिति के सदस्यों की अनुशंसा वाली योजनाओं को इसमें रखते हुए अनुमोदित एवं स्वीकृत की जाएगी। उप विकास आयुक्त रवि आनंद ने जिला योजना समिति के पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला। बैठक में मंत्री जोबा माझी, उपायुक्त आंजनेयुलू दोड्डे, वन प्रमंडल पदाधिकारी सौमित्र मिश्रा, जिला परिषद अध्यक्ष प्रतिमा देवी, जिला परिषद उपाध्यक्ष आलोक कुमार सिंह एवं कई पदाधिकारी उपस्थित थे।

बच्चे को चपेट में लेने के बाद स्कॉर्पियो ने पोल में मारी टक्कर, ड्राइवर फरार

मनिका। मनिका थाना क्षेत्र अंतर्गत स्थित पशुपालन विभाग के समीप राष्ट्रीय मार्ग 39 पर मनिका प्रखंड क्षेत्र के पश्चिमी जिला परिषद सदस्य बलवंत सिंह के स्कॉर्पियो वाहन ने दिन बुधवार की सुबह में एक युवक नीतीश कुमार यादव उम्र लगभग 17 वर्ष पिता कमलेश यादव घर भदईबथान (मनिका) को अपने चपेट में ले लिया और बच्चे को धक्का मारने के बाद स्कॉर्पियो सीधे जाकर बिजली के पोल से टकरा गई जिस कारण बिजली का पोल अपने स्थान से टूट कर स्कॉर्पियो पर ही जा गिरा और स्कॉर्पियो वाहन टूटे हुए बिजली के पोल में जाकर फंस गया। जिसके बाद वाहन चला रहा मुरारी ठाकुर नामक व्यक्ति घटनास्थल से अपनी जान बचाकर फरार हो गया। गनीमत रही कि बिजली की तार से स्कॉर्पियो में करंट नहीं लगा ग्रामीणों ने तुरंत बिजली ग्रिड से बिजली कटवाया। वहीं वाहन की चपेट में आने से युवक नीतीश कुमार यादव गंभीर रूप से घायल हो गया। मौके पर मौजूद आसपास के ग्रामीणों की सहायता से घायल नीतीश कुमार को आनन-फानन में इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मनिका पहुंचाया गया जहां डॉक्टरों के द्वारा प्राथमिक उपचार के बाद घायल युवक की गंभीर स्थिति को देखते हुए बेहतर इलाज के लिए लातेहार सदर अस्पताल रेफर कर दिया गया है। वहीं दुर्घटना की सूचना मिलते ही मनिका थाना प्रभारी राणा भानु प्रताप सिंह अपने दल बल के साथ घटनास्थल पर पहुंचे और घटना की जांच पड़ताल करते हुए वाहन को अपने कब्जे में लेकर मनिका थाना ले आए। मौके पर वाहन चला रहा मुरारी ठाकुर नामक ड्राइवर की भारी लापरवाही देखी गई वाहन की रफ्तार काफी तेज थी जिससे वाहन के चपेट में और भी कई लोग आ सकते थे लेकिन वाहन को बिजली के पोल से टकराने की वजह से बहुत ही बड़ी अनहोनी टल गई।

श्री बागेश्वर धाम

अरविन्द पाण्डेय

श्रीबागेश्वर धाम का समर्थन : श्री बागेश्वर धाम एक सिद्ध तीर्थ है जहां श्री हनुमान जी महाराज की सजीव प्रतिमा विराजित है..

पटना के समीप तरेत पाली मठ के हनुमंत कथा में 50 लाख लोगों ने शिरकत की। आखिर कौतूहल स्वाभाविक है संत धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री के बारे में।

श्रीहनुमान जी महाराज के कृपापात्र संत श्री धीरेन्द्रकृष्ण शास्त्री जी वहीं के साधक हैं और सनातन धर्म की निरंतर विश्वव्यापी सेवा कर रहे हैं..

संत श्री शास्त्री अपनी सभाओं में जिन अतिंद्रिय कार्यों का आश्चर्य मूलक प्रदर्शन करते हैं उन कार्यों को करने वालों को आजकल सारे विश्व में विज्ञान की भाषा में मेंटलिस्ट और मांइड रीडर आदि कहा जाता है...

भारत में नकुल शनाय,डॉ कुर्तो पारेख, राहुल खरबंदा, सुहानी शाह आदि प्रसिद्ध मेंटलिस्ट हैं जो अपने कार्यक्रमों में इस तरह के चामत्कारिक प्रदर्शन करते हैं।

हां, मेंटलिस्ट जो प्रदर्शन करते हैं उसे वे घोषित रूप से ईश्वरीय कृपा नहीं कहते किंतु जब कोई आध्यात्मिक साधक वही प्रदर्शन करता है तो वह उसे अपने इष्टदेव द्वारा प्रदत्त कृपा के रूप में घोषित करता है..यही अंतर है..

यहां यह जान लेना चाहिए कि मेंटलिस्ट को भी ऐसे प्रदर्शन के पहले कठिन अभ्यास या साधना करनी पड़ती है..

तो संत श्री शास्त्री के कार्यक्रमों में अपार जनसमूह एकत्र होने से स्वाभाविक रूप से उन पर सनातन धर्म द्रोहियों का आक्रमण प्रारंभ होना था जो प्रारंभ भी हो चुका है क्योंकि वे स्वयं को अंग्रेजी में मेंटलिस्ट नहीं कहते, वे स्वयं को श्री हनुमान जी महाराज का कृपा पात्र कहते हैं..

कुछ दिन पूर्व उनका नागपुर में प्रवचन का कार्यक्रम था.. 7 दिन के कार्यक्रम की समाप्ति के बाद जब वे वहां से प्रस्थान कर चुके तो महाराष्ट्र की एक संस्था के प्रतिनिधि ने उन्हें चैलेंज किया कि यदि वे उस संस्था की शर्तों के अनुरूप कुछ चमत्कार जैसा कार्य करके दिखाएं तो उन्हें 30 लाख रुपए की राशि पुरस्कार में दी जाएगी अन्यथा उनके विरुद्ध मुकदमा किया जाएगा।

संत श्री धीरेन्द्रकृष्ण शास्त्री जी का नागपुर में पांच दिनों तक प्रवचन होता रहा किंतु जब उनका प्रवचन समाप्त हुआ और वे वहां से प्रस्थान कर गए तो एक संस्था के प्रतिनिधि ने उनके विरुद्ध महाराष्ट्र नरबलि, अमानवीय कुप्रथा,अघोरी एवं कालाजादू उन्मूलन अधिनियम 2013 के अंतर्गत मुकदमा दर्ज करने के लिए आवेदन दिया और मीडिया में समाचार प्रकाशित कराया कि श्री शास्त्री जी ने उनकी चुनौती को स्वीकार नहीं किया और नागपुर से चले गए.. यह तो इसी तरह हुआ कि कोई व्यक्ति किसी हार्ट सर्जन को कहे कि तुम मेरे सामने हार्ट सर्जरी करके दिखाओ तो 50 लाख रुपए पुरस्कार देगें नहीं तो फर्जी डॉक्टर होने का मुकदमा करेंगे।

जिस अधिनियम में उनके विरुद्ध मुकदमा दर्ज होने का मिथ्या प्रवाद प्रसारित किया गया उसमें नरबलिअमानवीय कुप्रथा, अघोरी और काला जादू के आचरण, सहयोग, विज्ञापन आदि के लिए दंड का प्रावधान है.. इसी अधिनियम की धारा 12 में अनेक उदाहरण देकर धार्मिक, पांथिक प्रसार प्रचार या यहां तक कि जैन धर्म वालों के केशलुंचन आदि प्रथाओं को अपराध की श्रेणी से बाहर माना गया है..

इस अधिनियम की अनुसूची में काला जादू, अघोरी क्रिया आदि का विस्तृत सूचीकरण है और केवल उन्हीं अनुचित क्रियाओं के लिए ही अधिनियम की धारा 5 के अंतर्गत नियुक्त सतर्कता अधिकारी मुकदमा दर्ज करा सकता है..

किंतु, सोशल मीडिया पर मिथ्या प्रवाद प्रचारित किया गया कि संत श्री धीरेन्द्रकृष्ण शास्त्री के विरुद्ध मुकदमा हो गया, वे नागपुर छोड़कर चले गए, आदि आदि..

ऐसे मिथ्याप्रवादों से बचने की आवश्यकता है..

कम से कम मुझे उनके कार्यक्रमों को टीवी पर देखने के बाद नहीं ऐसा नहीं प्रतीत हुआ कि संत श्री धीरेंद्रकृष्ण शास्त्री जी द्वारा इस अधिनियम के किसी प्रावधान का कभी उल्लंघन किया गया है!

हां, वे अत्यंत प्रखरता प्रगल्भता के साथ हिंदू धर्म अर्थात सनातन धर्म, भारतीय संस्कृति का व्याख्यान और प्रसार करते हैं।

वर्तमान का सत्य यह है संत श्री धीरेन्द्रकृष्ण शास्त्री की प्रवचन सभाओं में हजारों श्रद्धालु जाते हैं कथा श्रवण का लाभ लेते हैं। उन्हें स्वामी रामदेव जैसे विश्वप्रसिद्ध योग साधकों और लब्धप्रतिष्ठ संतों का सान्निध्य, सम्मति और सहमति प्राप्त है. उनके द्वारा उपदिष्ट धार्मिक विधियों का अनुपालन करने से हजारों श्रद्धालुओं को लाभ की अनुभूति हुई है.. वे सनातन धर्म अर्थात हिंदू धर्म के विश्वव्यापी प्रसार और प्रचार में निरंतर निरत हैं.. वे एक प्रगल्भ और प्रखर हिंदू प्रवक्ता हैं जिन्हें इस समय सारे विश्व में श्रद्धा के साथ सुना जा रहा है.. महाराष्ट्र की संस्था द्वारा किए गए परिवाद पर मुकदमा दर्ज होगा या नहीं यह महाराष्ट्र के कानून द्वारा नियुक्त सतर्कता अधिकारी के विवेक पर निर्भर है और भविष्य के गर्भ में है। किंतु, संप्रति श्री हनुमान जी महाराज के कृपापात्र संत श्री धीरेन्द्रकृष्ण शास्त्री का यश निरंतर वर्धमान और प्रखर होता जा रहा है और वे हिंदुओं के लोकप्रिय प्रवचन पुरोधा के रूप में अग्रगामी हैं झ इस समय यही सत्य है।

(लेखक चर्चित पुलिस अधिकारी और सनातन धर्म के मर्मज्ञ हैं।)

गुप्त तपस्या का केंद्र रही है नर्मदा

सुधीर कुमार

पुण्यसलिला मेकलसुता मां नर्मदा, जिनके पुण्य प्रताप से हर कोई परिचित है। वैसे तो आमतौर अनेक नदियों से कोई न कोई कथा जुड़ी हुई है, लेकिन मां नर्मदा इनमें सबसे भिन्न हैं। यह एकमात्र ऐसी नदी है जिसका पुराण है। यह एकमात्र ऐसी नदी है जिसकी परिक्रमा की जाती है। बड़े-बड़े ऋषि मुनि नर्मदा के तटों पर गुप्त तप करते हैं। मान्यता है कि एक बार क्रोध में आकर इन्होंने अपनी दिशा परिवर्तित कर ली और चिरकाल तक अकेले ही बहने का निर्णय लिया। ये अन्य नदियों की तुलना में विपरीत दिशा में बहती हैं। इनके इस अखंड निर्णय की वजह से ही इन्हें चिरकुंआरी कहा जाता है। यहां हम आपको नर्मदा मैया से जुड़े कुछ ऐसे तथ्यों के बारे में बताने जा रहे हैं जिनके बारे में जानना संभव नहीं होता। पुराणों में ऐसा बताया गया है कि इनका जन्म एक 12 वर्ष की कन्या के रूप में हुआ था। समुद्र मंथन के बाद भगवान शिव के पसीने की एक बूंद धरती पर गिरी जिससे मां नर्मदा प्रकट हो गईं। इसी वजह से इन्हें शिवसुता भी कहा जाता है। चिरकुंआरी मां नर्मदा के बारे में कहा जाता है कि चिरकाल तक मां नर्मदा को संसार में रहने का वरदान है। ऐसा उल्लेख मिलता है कि भगवान शिव ने मां रेवा को वरदान दिया था कि प्रलयकाल में भी तुम्हारा अंत नहीं होगा। अपने निर्मल जल से तुम युगों-युगों तक इस समस्त संसार का कल्याण करोगी। मध्य प्रदेश के खूबसूरत स्थल अमरकंटक अनूपपुर से मां नर्मदा का उद्गम स्थल है। यहां ये एक छोटी-सी धार से प्रारंभ होकर आगे बढ़ते हुए विशाल रूप धारण कर लेती हैं। यह स्थान अद्भुत दृश्यों के लिए भी जाना जाता है। इसी जगह पर मां रेवा का

विवाह मंडप आज भी देखने मिलता है। पुराणों के अनुसार अपने प्रेमी सोनभद्र से क्रोधित होकर ही इन्होंने उल्टा बहने का निर्णय लिया और गुस्से में अपनी दिशा परिवर्तित कर ली। सोनभद्र और सखी जोहिला ने बाद में इनसे क्षमा भी मांगी, किंतु तब तक नर्मदा दूर तक बह चुकी थी। अपनी सखी के विश्वास को खंडित करने की वजह से ही जोहिला को पूज्यनीय नदियों में स्थान नहीं दिया गया है।

सोन नदी या नद सोनभद्र का उद्गम स्थल भी अमरकंटक ही है। वैसे तो मां नर्मदा को लेकर अनेक मान्यताएं हैं लेकिन ऐसा बताया जाता है कि जो भी भक्त पूरी निष्ठा के साथ इनकी पूजा व दर्शन करते हैं उन्हें ये जीवनकाल में एक बार दर्शन अवश्य देती हैं। जिस प्रकार गंगा में स्नान का पुण्य है उसी प्रकार नर्मदा के दर्शन मात्र से मनुष्य के कष्टों का अंत हो जाता है। अन्य नदियों से विपरीत नर्मदा से निकले हुए पत्थरों को शिव का रूप माना जाता है। ये स्वयं प्राणप्रतिष्ठित होते हैं अर्थात नर्मदा के पत्थरों को प्राण प्रतिष्ठित करने की आवश्यकता नहीं होती। इसी कारण देश में ही नहीं विदेशों में भी नर्मदा से निकले हुए पत्थरों की शिवलिंग के रूप में सर्वाधिक मान्यता है। ऐसी पुरातन मान्यता है कि गंगा स्वयं प्रत्येक साल नर्मदा से भेंट एवं स्नान करने आती हैं। मां नर्मदा को मां गंगा से भी अधिक पवित्र माना गया है कहा जाता है कि इसी वजह से गंगा हर साल स्वयं को पवित्र करने नर्मदा के पास पहुंचती हैं।

(लेखक शिक्षाविद, काउंसलर हैं।)

ब्रह्म मुहूर्त में जागने ध्यान योग का अतिरेक लाभ

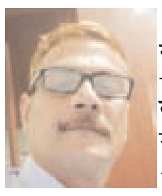

नागेन्द्र सिंह

बदलती जीवनशैली में हम देर से सोने और देर से जागने को आधुनिक जीवनशैली का हिस्सा मानने लगे हैं, परन्तु हमेशा से ही अच्छी सेहत पाने के लिए रात को जल्दी सोना और सुबह जल्दी जागने की बात कही गई है। देर से सोना और देर से उठना दोनों ही आदतें स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकती हैं। यही कारण है कि हमारी प्राचीन परम्पराओं में सुबह उठने का समय भी तय किया गया है यह है 'ब्रह्म मुहूर्त', यानि कि रात्रि का अंतिम प्रहर या सूर्योदय से लगभग डेढ़ घंटे पहले का समय।दिल और दिमाग दोनों के लिए बेहतर

सुबह जल्दी उठना हमारे लिए किसी दवा से कम नहीं है, ये आदत जीवन में आई हर स्वास्थ्य समस्या का अंत सकारात्मक प्रभाव से करेगी। जल्दी उठने की आदत डालेंगे तो इम्यून सिस्टम मजबूत होगा, जिससे रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ेगी और आप बीमार नहीं पड़ेंगे। वैज्ञानिक शोधों से यह साबित हो चुका है कि जल्दी उठना दिमाग के लिए बहुत फायदेमंद है। इससे दिमाग की कोशिकाएं सक्रिय रहती हैं, जिससे दिमाग तेज होता हैं और याददाश्त अच्छी बनी रहती हैं। ब्रह्म मुहूर्त में सत्वगुण की होती है अधिकता

हमारे शास्त्रों में भी ब्रह्म मुहूर्त में जागने को ही सही बताया गया है,तभी तो प्राचीन काल में ब्रह्म मुहूर्त में गुरुओं द्वारा अपने शिष्यों को वेदों एवं शास्त्रों का अध्ययन करवाया जाता था। संसार के प्रसिद्ध साधक, बड़े-बड़े विद्वान और दीर्घजीवी मनुष्य सूर्योदय के पूर्व ब्रह्म मुहूर्त में उठकर ही दैनिक कार्यों की शुरुआत करते थे। ऋग्वेद में कहा गया हैं कि जो मनुष्य सुबह उठता हैं, उसकी आयु लंबी होती हैं। ब्रह्म मुहूर्त में तम एवं रजो गुण की मात्रा बहुत कम होती हैं तथा इस समय सत्वगुण का प्रभाव अधिक होता हैं, इसलिए इस काल में बुरे मानसिक विचार भी सात्विक और शांत हो जाते हैं।

ब्रह्म मुहूर्त के बारे में क्या कहता है आयुर्वेद

आयुर्वेद के अनुसार इस समय में बहने वाली वायु चन्द्रमा से प्राप्त अमृत कणों से युक्त होने के कारण हमारे स्वास्थ्य के लिए अमृत तुल्य होती है, यह वीरवायु कहलाती हैं। इस समय भ्रमण करने से शरीर में शक्ति का संचार होता है और शरीर कांतियुक्त हो जाता है। हम प्रात? सोकर उठते हैं तो यही अमृतमयी वायु हमारे शरीर को स्पर्श करती हैं। इसके स्पर्श से हमारे शरीर में तेज, बल शक्ति, स्फूर्ति एवं मेधा का संचार होता है, जिससे मन प्रसन्न व शांत होता है। इसके विपरीत देर रात तक जागने से और सुबह देर तक सोने से हमें यह लाभकारी वायु प्राप्त नहीं हो पाती, जिससे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचता है।

ब्रह्म मुहूर्त में जागने का वैज्ञानिक सच

अनेक शोधों के अनुसार प्रात?काल ब्रह्म मुहूर्त के समय हमारा वायुमंडल काफी हद तक प्रदूषण रहित होता है। इस समय दिन के मुकाबले वातावरण में प्राणवायु ऑक्सीजन की मात्रा भी अधिक होती है। सुबह-सुबह की शुद्ध वायु हमारे तन-मन को स्फूर्ति और ऊर्जा से भर देती है। फेंफड़ों की शक्ति बढ़ती है, जिससे रक्त शुद्ध होता है। यही वजह है कि इस समय में की गई सैर एवं व्यायाम, योग व प्राणायाम शरीर को निरोगी रखते हैं। इसके अलावा पक्षियों की चहचाहट से सुबह का माहौल खुशनुमा हो जाता है, जिससे हमारा तन-मन प्रफुल्लित होकर तरोताजा हो जाता है।

दिनचर्या होगी ठीक तो मिलेगी सफलता

सुबह जल्दी उठना दिनचर्या का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है, क्योंकि जल्दी उठने से दिन भर के कार्यों और योजनाओं को बनाने का हमें पर्याप्त समय मिल जाता है। न ऑफिस में देर से पहुंचने और न ही बच्चों की स्कूल बस छूटने की समस्या होती है। हर कार्य पूर्व नियोजित ढंग से पूर्ण होता है, जिससे दिमाग में कोई तनाव नहीं होता है, अपनी रूचि के कार्यों को करने का भी समय मिल जाता है। ब्रह्म मुहूर्त में जागने वाला व्यक्ति शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ्य रहकर सुखी और समृद्ध हो सकता है। जल्दी उठकर हम अपनी व्यस्त जीवन शैली में से भी अपने करीबी रिश्तेदार और मित्रों के लिए समय निकाल पाएंगे, नतीजा रिश्तों को मजबूती मिलेगी।

भगवान शिव की पुत्री अशोक सुंदरी

जीवीएस शास्त्री

भगवान शिव की एक पुत्र का नाम अशोक सुंदरी था। हालांकि महादेव की और भी पुत्रियां थीं जिन्हें नागकन्या माना गया- जया, विषहर, शामिलबारी, देव और दोतलि। अशोक सुंदरी को भगवान शिव और पार्वती की पुत्री बताया गया इसीलिए वही गणेशजी की बहन है। इनका विवाह राजा नहुष से हुआ था। पद्मपुराण अनुसार अशोक सुंदरी देवकन्या हैं। दरअसल, माता पार्वती के अकेलेपन को दूर करने हेतु कल्पवृक्ष नामक पेड़ के द्वारा ही अशोक सुंदरी की रचना हुई थी। एक बार माता पार्वती विश्व में सबसे सुंदर उद्यान में जाने के लिए भगवान शिव से कहा। तब भगवान शिव अपनी पत्नी पार्वती को नंदनवन ले गए। वहां माता को कल्पवृक्ष से लगाव हो गया और वे उस वृक्ष को लेकर कैलाश आ गईं। कल्पवृक्ष मनोकामना पूर्ण करने वाला वृक्ष है। पार्वती ने अपने अकेलेपन को दूर करने हेतु उस वृक्ष से यह वर मांगा कि उन्हें एक कन्या प्राप्त हो। तब कल्पवृक्ष द्वारा अशोक सुंदरी का जन्म हुआ। माता पार्वती ने उस कन्या को वरदान दिया कि उसका विवाह देवराज इंद्र जैसे शक्तिशाली युवक से होगा। इसी वरदान के असर के कारण एक बार अशोक सुंदरी अपनी दासियों के साथ नंदनवन में विचरण कर रही थीं तभी वहां हुंड नामक राक्षस का आया। जो अशोक सुंदरी की सुंदरता से मोहित हो गया और उसने अशोक सुंदरी के सामने विवाह का प्रस्ताव रखा। लेकिन अशोक सुंदरी ने अपने वरदान और विवाह के बारे में बताया कि उनका विवाह नहुष से ही होगा। यह सुनकर राक्षस ने कहा कि वह नहुष को मार डालेगा। ऐसा सुनकर अशोक सुंदरी ने राक्षस को शाप दिया कि जा दुष्ट तेरी मृत्यु नहुष के हाथों ही होगी। यह सुनकर वह राक्षस घबरा गया। तब उसने राजकुमार नहुष का अपहरण कर लिया। लेकिन नहुष को राक्षस हुंड की एक दासी ने बचा लिया। इस तरह महर्षि वशिष्ठ के आश्रम में नहुष बड़े हुए और उन्होंने हुंड का वध किया। इसके बाद नहुष तथा अशोक सुंदरी का विवाह हुआ हुआ। विवाह के बाद अशोक सुंदरी ने ययाति जैसे वीर पुत्र तथा सौ रुपवती कन्याओं को जन्म दिया। ययाति भारत के चक्रवर्ती सम्राटों में से एक थे और उन्हीं के पांच पुत्रों से संपूर्ण भारत पर राज किया था। उनके पांच पुत्रों का नाम था-

1.पुरु, 2.यदु, 3.तुर्वस, 4.अनु और 5.द्रुहु। इन्हें वेदों में पंचनंद कहा गया है।

दक्षिण का द्वारिका केरल का गुरुवायूर मंदिर

पीएम मोदी दोबारा प्रधानमंत्री बनने के बाद केरल के दौरे पर गए थे। जहां पर उन्होंने केरल के त्रिशूर जिले के गुरुवयूर स्थित श्रीकृष्ण मंदिर में पूजा अर्चना की। गुरुवयूर मंदिर लगभग 5000 साल पुराना मंदिर है। आइए जानते हैं गुरुवयूर मंदिर का महत्व और खास बातें....

- गुरुवयूर मंदिर के देवता भगवान गुरुवायुरप्पन हैं जो कृष्ण भगवान का बालरूप के रूप में इनकी पूजा की जाती हैं।

- गुरुवयूर मंदिर को भूलोका वैकुंठम के नाम से भी जाना जाता है, जिसका मतलब होता है पृथ्वी पर भगवान विष्णु का वास।

- गुरुवयूर मंदिर को दक्षिण का द्वारका कहा जाता है। यहां पर कृष्ण भगवान के बालरूप के दर्शन होते हैं।

- केरल के इस मंदिर में गैर-हिन्दुओं को मंदिर में प्रवेश की अनुमति नहीं दी जाती है।

- पौराणिक कथा के अनुसार इस मंदिर यह मंदिर गुरु बृहस्पति और वायु देवता से सम्बंधित है।

- बृहस्पति देव को भगवान कृष्ण की एक तैरती प्रतिमा मिली। बृहस्पति देव ने वायु देवता के साथ मिलकर कलयुग में मानवों की सहायता के लिए इस मंदिर में भगवान की स्थापना की थी।

- ऐसी मान्यता है इस मंदिर में भगवान कृष्ण की द्वापर युग में श्री कृष्ण द्वारा प्रयोग की गयी थी।

- आजादी से पूर्व अन्य मंदिरों की तरह इस मंदिर में भी हरिजनों के प्रवेश पर पूर्ण प्रतिबंध था। बाद में गांधी जी के आंदोलन से इस मंदिर में हरिजनों को प्रवेश की करने और पूजा करने की अनुमति मिली।

- गुरुवयूर मंदिर में पारंपरिक वेशभूषा में ही प्रवेश किया जा सकता है।

लिविंगस्टोन की पारी बेकार, पंजाब 15 रन से हारी

पंजाब के प्लेऑफ में पहुंचने की उम्मीदों को लगा बड़ा झटका, दिल्ली ने खराब किया खेल

एजेंसी

धर्मशाला। इंडियन प्रीमियर लीग 2023 के 64वें मैच में दिल्ली कैपिटल्स ने पंजाब किंग्स को 15 रन से हरा दिया। इस मुकाबले में दिल्ली कैपिटल्स ने टॉस हारने के बाद पहले बल्लेबाजी करते हुए राइली रूसो और पृथ्वी शॉ की दमदार बैटिंग से 213 रन का स्कोर खड़ा किया था जिसके जवाब में पंजाब किंग्स 20 ओवर में 8 विकेट के नुकसान पर 198 रन ही बना सकी। दोनों टीमों के बीच यह मुकाबला हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला क्रिकेट स्टेडियम में खेला गया था। इस मैच में लक्ष्य का पीछा करते हुए पंजाब किंग्स के लिए लियाम लिविंगस्टन ने 48 गेंदों में दमदार 98 रनों की पारी खेली। अपनी इस पारी में उन्होंने 5 चौके और 9 छक्के भी लगाए, लेकिन वह टीम की जीत के लिए काफी नहीं रहा। मैच में पंजाब किंग्स की टीम एक समय पर जीत की तरफ बढ़ती हुई दिख रही थी लेकिन टीम मैनेजमेंट के एक फैसले के कारण दिल्ली की टीम को वापसी का मौका मिल गया। दरअसल मैच में लिविंगस्टन के साथ मिलकर अर्थव ताइडे अच्छी लय में दिख रहे थे। दोनों छोर से तेजी से रन बना रहे थे लेकिन अर्थव ने 55 रन के स्कोर खुद को रिटायर आउट घोषित कर दिया। इसके बाद टीम ने जितेश शर्मा और शाहरुख खान के रूप में जल्दी से दो विकेट गंवा दिए जिसके कारण टीम के लिए मुश्किल खड़ी हो गई। हालांकि छठे नंबर पर बल्लेबाजी करने उतरे सैम करन ने भी कुछ आकर्षक शॉट जरूर खेले लेकिन वह लक्ष्य तक टीम को नहीं पहुंचा सके।

दिल्ली के लिए रूसो और पृथ्वी ने किया कमाल

बल्लेबाजी में दिल्ली कैपिटल्स के लिए राइली रूसो के 37 गेंद में नाबाद 82 रनों की पारी खेली। वहीं एक महीने बाद वापसी कर रहे पृथ्वी साव ने 54 रन बनाए। शॉ ने आखिरी मैच 20 अप्रैल को कोलकाता नाइट राइडर्स के खिलाफ खेला था। उन्होंने 35 गेंद में 50 रन पूरे किए जो आईपीएल में पिछली 13 पारियों में उनका पहला अर्धशतक था। उन्होंने अपनी पारी में 38 गेंद खेलकर सात चौके और एक छक्का जड़ा। कप्तान डेविड वॉर्नर ने 31 गेंद में पांच चौकों और दो छक्कों के साथ 46 रन बनाए। दोनों ने पहले विकेट के लिए 94 रन जोड़े जो इस सत्र की उनकी सबसे बड़ी साझेदारी थी। इसके बाद रूसो ने आइपीएल में पहला अर्धशतक 25 गेंदों में पूरा किया। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका के अपने साथी खिलाड़ी कगिसो रबाडा को छक्का लगाकर हाथ खोले। रबाडा ने तीन ओवर में 36 रन दे डाले जबकि सैम करन ने 36 रन देकर दो विकेट लिए। दिल्ली ने पावरप्ले के छह ओवर में बिना किसी नुकसान के 61 रन बनाए थे। यह दूसरी बार है जब दिल्ली ने पावरप्ले में विकेट नहीं गंवाया। वॉर्नर ने करन को लगातार चौके लगाये और इसके बाद रबाडा की गेंदों की धुनाई की। उन्होंने रबाडा को तीन गेंद के भीतर दो छक्के लगाकर उस ओवर में 17 रन निकाले। वॉर्नर और शॉ ने पांच ओवर में ही दिल्ली के 50 रन पूरे कर दिए।

पंजाब किंग्स के लिए लियाम लिविंगस्टोन ने 48 गेंद में दमदार 98 रनों की पारी खेली। अपनी इस पारी में उन्होंने 5 चौके और 9 छक्के भी लगाए, लेकिन वह टीम की जीत के लिए काफी नहीं रहा।

फ्लाइंग शिखर धवन... 37 की उम्र में भी चीते की फुर्ती

दिल्ली के लिए ओपनिंग करने उतरे डेविड वॉर्नर और पृथ्वी शॉ ने बेहतरीन शुरूआत की थी। दोनों ने पावर प्ले और उसके बाद भी खूब चौके और छक्के लगाए लेकिन अर्धशतक से ठीक पहले डेविड वॉर्नर आउट हो गए। दरअसल पारी के 11वें की दूसरी गेंद पर सैम करन ने चतुराई दिखाते हुए स्लोअर गेंद डाल दी, जिसके कारण वॉर्नर से मिस शॉट हो गया और गेंद हवा में लहरा गई। हालांकि एक बार ऐसा लगा था कि वॉर्नर को जीवनदान मिल जाएगा लेकिन पंजाब के कप्तान शिखर धवन ने लंबी दौड़ लगाते हुए हवा में छलांग लगाकर गेंद को अपने पंजे में जकड़ लिया। 37 साल के शिखर धवन ने जिस अंदाज में डाइव लगाकर कैच को लपका वह हैरतअंगेज था।ऐसा बहुत ही कम देखने को मिलता है कि 37 की उम्र में भी किसी खिलाड़ी में इतनी फुर्ती हो।

आज का मैच

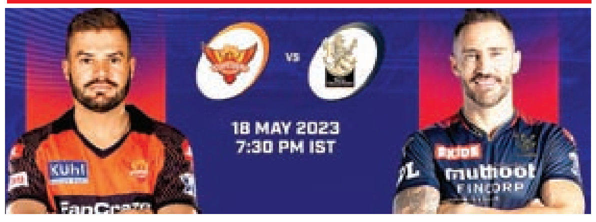

अब जेड सिक्योरिटी में रहेंगे सौरव गांगुली

नयी दिल्ली। पूर्व भारतीय कप्तान सौरव गांगुली की सुरक्षा व्यवस्था को अपग्रेड करने की खबर आ रही है। पश्चिम बंगाल सरकार ने भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष गांगुली कटिगरी की सुरक्षा जेड कटिगरी में अपग्रेड किया है। रिपोर्ट्स की मानें तो पूर्व कप्तान गांगुली की ओर से किसी तरह का अनुरोध नहीं किया गया था, लेकिन पश्चिम बंगाल सरकार के प्रशासनिक कार्यालय ने इसे देने का फैसला किया है। दुनिया के सर्वश्रेष्ठ कप्तानों में शामिल गांगुली को राज्य सरकार से श्रेणी की सुरक्षा मिलती थी। अब उन्हें जेड श्रेणी की सुरक्षा दी जाएगी। यह फैसला क्यों किया गया है इस बारे में किसी खास वजह का पता नहीं चला।

इटली में बाढ़ के कारण फार्मूला वन एमीलिया-रोमाग्ना ग्रां प्री रद्द

इमोला। उत्तरी इटली में इस सप्ताहांत होने वाली एमीलिया-रोमाग्ना ग्रां प्री फार्मूला वन रेस को क्षेत्र में भयंकर बाढ़ के कारण बुधवार को रद्द कर दिया गया। फार्मूला वन (एफवन) ने कहा कि उन्होंने इटली के नेताओं से सलाह मशविरे के बाद सुरक्षा कारणों और आपात सेवाओं पर अतिरिक्त बोझ डालने से बचने के लिए यह फैसला किया है। एफवन ने बयान में कहा कि यह फैसला किया गया क्योंकि हमारे प्रशंसकों, टीम और कर्मचारियों के लिए प्रतियोगिता का सुरक्षित आयोजन संभव नहीं था और क्षेत्र के नगर और शहर जिस स्थिति का सामना कर रहे हैं उसे देखते हुए यह सही और जिम्मेदारी भरी चीज है।

भारत-ऑस्ट्रेलिया हॉकी श्रृंखला गुरुवार से

एडिलेड। भारतीय महिला हॉकी टीम ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ होने वाली पांच मैचों की श्रृंखला की शुरूआत गुरुवार को यहां मेट स्टेडियम पर करेगी। गोलकीपर सविता पूनिया की कप्तानी दीप ग्रेस एक्का की उप कप्तानी में भारतीय टीम के पहले तीन मैच ऑस्ट्रेलिया की राष्ट्रीय टीम से होंगे। इसके अलावा भारतीय महिलाएं ऑस्ट्रेलिया-ए के खिलाफ भी दो मैच खेलेंगी। यह दौरा सितंबर-अक्टूबर में होने वाले हांगझोउ एशियाई खेलों के लिहाज से भारतीय टीम के लिये महत्वपूर्ण है।

एटीके से सुपर जायंट बना मोहन बागान

कोलकाता। इंडियन सुपर लीग (आइएसएल) के 2022-23 संस्करण का चैंपियन क्लब एटीके मोहन बागान एक जून से मोहन बागान सुपर जायंट कहलायेगा। क्लब ने बुधवार को यह घोषणा की। क्लब के मालिक संजीव गोयनका ने इस वर्ष आइएसएल फाइनल में बेंगलुरु एफसी पर मोहन बागान की जीत के बाद ही क्लब का नाम बदलने की सूचना दे दी थी। गोयनका ने कहा, अगले सीजन से क्लब को मोहन बागान सुपर जायंट कहा जायेगा। हम इसकी घोषणा के लिये आईएसएल फाइनल जीतने का इंतजार कर रहे थे।

विदेश में प्रशिक्षण लेंगे ओलंपियन नाविक

नयी दिल्ली। नेत्रा कुमानन, विष्णु सरवनन, वरुण ठक्कर और केसी गणपति इस साल के अंत में चीन में हांगझोऊ एशियाई खेलों की तैयारी के लिये सितंबर तक विदेश में विभिन्न स्थानों पर प्रतियोगिताओं में प्रशिक्षण और भाग लेंगे। खेल मंत्रालय ने मई से सितंबर तक विदेशी प्रशिक्षण और प्रतियोगिताओं के लिये इन चार टारगेट ओलंपिक पोडियम स्कीम (टॉप्स) नाविकों के प्रस्ताव को मंजूरी देने के बाद यह निर्णय लिया। नेत्रा जहां सितंबर तक स्पेन के ग्रैन कैनरिया में प्रशिक्षण लेंगी, वहीं वह विभिन्न प्रतियोगिताओं के लिए कील, जर्मनी (कील वीक), मार्सिले, फ्रांस (ओलंपिक टेस्ट इवेंट) और शेवेनिंगेन, नीदरलैंड्स (विश्व सेलिंग चैंपियनशिप) में हिस्सा लेंगी।

14 जून से खेला जायेगा अफगानिस्तान-बांग्लादेश टेस्ट

ढाका। अफगानिस्तान अपने आगामी बांग्लादेश दौरे की शुरूआत 14 जून से होने वाले टेस्ट मैच के साथ करेगा। बुधवार को अफगानिस्तान की टीम 10 जून को बांग्लादेश पहुंचेगी और 14 से 18 जून के बीच दोनों टीमें यहां शेर-ए-बंगला स्टेडियम में पांच-दिवसीय टेस्ट मैच में आमने-सामने होंगी।

गर्मियों में आयोजन करने से बचना चाहता है एआईएफएफ

नयी दिल्ल। अखिल भारतीय फुटबॉल महसंघ (एआईएफएफ) के अध्यक्ष कल्याण चौबे ने बुधवार को कहा कि वह आगामी सत्र से ग्रीष्म ऋतु में कोई भी फुटबॉल प्रतियोगिता आयोजित करने से बचने की कोशिश करेंगे। चौबे ने अगले महीने होने वाली सैफ चैंपियनशिप के ड्रॉ समारोह के बाद संवाददाताओं से कहा, इस महीने महिला लीग (आईडब्ल्यूएल) के साथ फुटबॉल सत्र खत्म हो जायेगा। हमारा प्रयास होगा कि हम अपने देश के मौसम को देखते हुए अप्रैल और मई में फुटबॉल प्रतियोगिताएं कराने से बच सकें।

जोकोविच का बड़ा आरोप- कैमरून नॉरी ने की बदतमीजी

एजेंसी

रोम। नोवाक जोकोविच ने इटालियन ओपन टेनिस में कैमरून नॉरी के खिलाफ 6-3, 6-4 की जीत दर्ज कर क्वार्टर फाइनल में जगह पक्की करने के बाद ब्रिटेन के इस खिलाड़ी के खिलाफ मैच के दौरान खेल भावना के विपरीत आचरण करने का आरोप लगाया। सर्बिया के इस खिलाड़ी ने लगातार 17वीं बार इस टूनार्मेंट के क्वार्टर फाइनल में पहुंचने के बाद कहा कि नॉरी ने इस मुकाबले में कई बार बुरा बर्ताव किया। मैच के दूसरे सेट में जोकोविज के अंक गंवाने के बाद भी नॉरी ने गेंद पर प्रहार किया जो 22 बार के ग्रैंड स्लैम चैम्पियन के पिंडलियों में जाकर लगी। जोकोविच ने इस बात को भी मुद्दा बनाया कि नॉरी ने मैच खत्म होने से ठीक पहले मेडिकल टाइम आउट लिया। जोकोविच ने कहा कि जब उसका शॉट मुझे लगा तब मैंने भी रिप्ले देखा था। शायद आप कह सकते हैं कि उसने मुझे जानबूझकर नहीं मारा। उन्होंने कहा कि यह सिर्फ इसी घटना के बारे में नहीं था। मैच के शुरू होने के साथ ही वह सब कुछ कर रहा था जिसकी अनुमति (लेकिन वह खेल भावना के खिलाफ था) थी। उसे मेडिकल टाइम आउट लेने की अनुमति है। उसे एक खिलाड़ी को गेंद से मारने की करने की अनुमति है। उसे हर अंक के बाद प्रतिद्वंद्वी खिलाड़ी को निशाना बनाकर कुछ कहने की अनुमति है। उन्होंने कहा कि एक खिलाड़ी के तौर पर हम जानते है कि यह खेल भावना नहीं है। वहीं, महिला वर्ग में दो बार की गत विजेता इगा स्वियातेक ने डोना वेकिक को 6-3, 6-4 से हराया और अगले मुकाबले में उनके सामने विंबलडन चैंपियन एलिना रायबाकिना की चुनौती होगी।

होल्गर रूने ने नोवाक जोकोविच को हराया

रोम। डेनमार्क के होल्गर रूने ने बुधवार को यहां नोवाक जोकोविच को तीन सेट तक चले कड़े मुकाबले में हराकर इटैलियन ओपन टेनिस टूनार्मेंट के पुरुष एकल सेमीफाइनल में जगह बनाई। डेनमार्क के 26 साल के खिलाड़ी होल्गर रूने ने 22 बार के ग्रैंडस्लैम विजेता सर्बिया के जोकोविच को 6-2, 4-6, 6-2 से हराया। मुकाबले के दौरान जोकोविच शुरूआत में शारीरिक रूप से काफी अच्छी स्थिति में नहीं दिखे। दूसरे सेट में 2-1 की बढ़त के दौरान उनका ट्रेनर भी कोर्ट पर आया और उन्हें दवाई दी। छह बार के चैंपियन जोकोविच ने मुकाबले के दौरान होल्गर रूने की 15 के मुकाबले 35 सहज गलतियां की। इनमें से 22 गलतियां उन्होंने फोरहैंड पर की। होल्गर रूने सेमीफाइनल में कास्पर रूड और फ्रांसिस्को सेरुनडोलो के बीच होने वाले मैच के विजेता से भिड़ेंगे।

भारत ने ऑस्ट्रेलिया को अंतिम मैच में चटाई धूल

एजेंसी

नयी दिल्ली। खिताबी दौड़ से पहले ही बाहर हो चुके भारत ने सुदीरमन कप बैडमिंटन टूर्नामेंट में ग्रुप सी के अपने अंतिम मुकाबले में ऑस्ट्रेलिया पर 4-1 से जीत के साथ अपने अभियान को खत्म किया। टूनार्मेंट के सबसे मुश्किल ग्रुप में शामिल भारत चीनी ताइपे से 1-4 और मलेशिया के खिलाफ 0-5 से हार के साथ पहले ही इस मिश्रित टीम चैंपियनशिप से बाहर हो गया था। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ भी टीम को अच्छी शुरूआत नहीं मिली। साई प्रतीक और तनीषा क्रास्टो की मिश्रित युगल जोड़ी को केनेथ झे हूई चू और ग्रोन्या सोमरविले के खिलाफ 21-17, 14-21, 18-21 से हार का सामना करना पड़ा। एचएस प्रणय ने हालांकि केवल 28 मिनट में जैक यू पर 21-8 से शानदार जीत के साथ स्कोर बराबर कर दिया। टीम खिताबी दौड़ से बाहर हो चुकी थी और दांव पर कुछ नहीं था ऐसे में भारत ने पीवी सिंधू के स्थान पर अनुपमा उपाध्याय को

महिला एकल में उतारा और इस युवा खिलाड़ी ने निराश नहीं किया। उन्होंने टिफनी हो पर 21-1, 21-18 से जीत दर्ज की। एमआर अर्जुन और ध्रुव कपिला ने पुरुष युगल में रिकी टैंग और रेयान वांग को 21-11, 21-12 से हराकर भारत को 3-1 से अजेय बढ़त दिला दी। क्रेस्टो और अश्विनी पोनप्पा की महिला युगल जोड़ी ने कैटलिन ईए और एंजेला यू पर 21-19 21-13 से जीत दर्ज कर भारत की बढ़त को 4-1 किया।

खेल में प्रतिभा के साथ होगा यूपी की कला-संस्कृति का दर्शन

गोरखपुर। खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स में प्रतिभाग करने आ रहे खिलाड़ियों को अपनी खेल प्रतिभा का प्रदर्शन करने के साथ उत्तर प्रदेश की कला-संस्कृति के दर्शन का भी अवसर प्राप्त होगा। गोरखपुर की मेजबानी में रामगढ़ताल में 27 से 31 मई तक होने वाली रोइंग प्रतियोगिता में शामिल होने आ रहे खिलाड़ी यूपी की खास नृत्य कलाओं व लोकगायन का आनंद भी ले सकेंगे। इस सिलसिले में अपर मुख्य सचिव खेल नवनीत सहगल की देखरेख में संपूर्ण आयोजन की रूपरेखा भी तय की गई है।

सैफ चैंपियनशिप 2023: भारत और पाकिस्तान को एक ही ग्रुप में रखा गया

एजेंसी

नयी दिल्ली। भारत और पाकिस्तान की फुटबॉल टीम लगभग पांच साल बाद आपस में भिड़ती नजर आएंगी क्योंकि दोनों पड़ोसी देशों को बेंगलुरू में 21 जून से चार जुलाई तक होने वाले सैफ कप के लिए समान ग्रुप में रखा गया है। दक्षिण एशियाई फुटबॉल महासंघ (सैफ) कप के 14वें टूनार्मेंट का ड्रॉ बुधवार को यहां हुआ जिसमें गत चैंपियन भारत, पाकिस्तान, कुवैत और नेपाल को ग्रुप ए में जगह मिली जबकि लेबनान, मालदीव, बांग्लादेश और भूटान को ग्रुप बी में रखा गया है। ग्रुप मुकाबले राउंड रोबिन प्रारूप के आधार पर खेले जाएंगे और प्रत्येक ग्रुप में शीर्ष पर रहने वाली दो टीम सेमीफाइनल में जगह बनाएंगी। आठ देशों का यह टूनार्मेंट कांतीर्वा स्टेडियम में खेला जाएगा। टूनार्मेंट को और अधिक प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए दक्षिण एशिया से बाहर के दो देशों लेबनान और कुवैत को प्रतियोगिता में खेलने के लिए आमंत्रित किया गया है। यह कुवैत और नेपाल के बीच टूनार्मेंट के पहले मैच के बाद दिन का दूसरा मुकाबला होगा। भारत और पाकिस्तान ने आधिकारिक तौर पर कुल मिलाकर 20 से अधिक अंतरराष्ट्रीय मुकाबले खेले हैं। इनमें भारत ने दबदबा बनाते हुए एक दर्जन से अधिक मैच जीते हैं। भारत ने आठ बार सैफ कप का खिताब जीता है जबकि चार बार वह उप विजेता रहा। एआईएफएफ अध्यक्ष कल्याण चौबे ने ड्रॉ के बाद कहा, पाकिस्तान ने टूनार्मेंट में हिस्सा लेने की पुष्टि कर दी है इसलिए यहां ड्रॉ में उनका नाम है। दक्षिण एशिया क्षेत्र के सभी देशों को इस टूनार्मेंट में खेलने का अधिकार है। महासचिव शाजी प्रभाकरन ने पीटीआई से कहा कि पाकिस्तानी दल भारत की यात्रा के लिए वीजा का आवेदन कर चुका है और आवेदन से जुड़ी प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। सैफ के महासचिव अनवर उल हक ने कहा कि भाग लेने वाले देशों ने आयोजकों को आश्वासन दिया है कि वे अपनी मजबूत राष्ट्रीय टीम भेजेंगे। उन्होंने कहा, हम आपको आश्वासन दे सकते हैं कि लेबनान, कुवैत और अन्य सभी भाग लेने वाली टीमें अपनी मजबूत राष्ट्रीय टीम भेजेंगी। अनवर ने कहा, हम एआईएफएफ द्वारा सुझाए गए अन्य देशों को टूनार्मेंट के लिए ला सकते थे लेकिन उनकी राष्ट्रीय टीमें व्यस्त थी और हम इस टूनार्मेंट के लिए कोई आयु वर्ग टीम नहीं चाहते थे। भारत के मुख्य कोच इगोर स्टिमक ने दोहराया कि पश्चिम एशिया की दो टीम के शामिल होने से टूनार्मेंट अधिक प्रतिस्पर्धी होगा। स्टिमक ने कहा, हमें टूनार्मेंट जीतने के लिए प्रबल दावेदार के रूप में व्यवहार करने और कार्य करने की आवश्यकता है। हम मेहमान के रूप में कुवैत और लेबनान का स्वागत करते हैं।

सैफ कप का कार्यक्रम

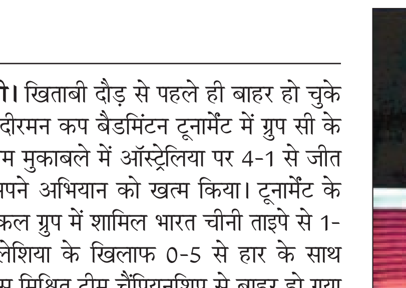

- 21 जूनः कुवैत बनाम नेपाल, दोपहर 3.30 बजे और भारत बनाम पाकिस्तान, शाम 7.30 बजे।
- 22 जूनः लेबनान बनाम बांग्लादेश, दोपहर 3.30 बजे और मालदीव बनाम भूटान, शाम 7.30 बजे।
- 24 जूनः पाकिस्तान बनाम कुवैत, दोपहर 3.30 बजे और नेपाल बनाम भारत, शाम 7.30 बजे।
- 25 जूनः बांग्लादेश बनाम मालदीव, दोपहर 3.30 बजे और भूटान बनाम लेबनान, शाम 7.30 बजे।
- 27 जूनः नेपाल बनाम पाकिस्तान, दोपहर 3.30 बजे और भारत बनाम कुवैत, शाम 7.30 बजे।
- 28 जूनः लेबनान बनाम मालदीव, दोपहर 3.30 बजे और भूटान बनाम बांग्लादेश, शाम 7.30 बजे।
- एक जुलाईः सेमी फाइनल (चार जुलाईः फाइनल।)

फीडे महिला ग्रां प्री : हरिका नें जीत से किया आरंभ

साइप्रस। भारत की शीर्ष महिला ग्रांड मास्टरों में से एक हरिका द्रोणावल्ली नें फीडे महिला ग्रां प्री के तीसरे चरण में जीत से साथ अपना टूनार्मेंट की शुरूआत की है। हरिका नें पहले राउंड में सफेद मोहरो से खेलते हुए वर्तमान विश्व ब्लिट्ज महिला शतरंज चैंपियन कजाकिस्तान की बिबिसारा असुबाएवा को पराजित किया। किंग्स इंडियन ओपनिंग में खेला गया यह मुकाबला हरिका नें अपने राजा और घोड़े के शानदार एंडगेम में 49 चालों में अपने नाम किया। प्रतियोगिता में दुनिया की शीर्ष 12 खिलाड़ी राउंड रॉबिन आधार पर कुल 11 राउंड खेलेंगी। पहले राउंड के अन्य परिणामों में जर्मनी की दिनारा वैगनर नें शीर्ष वरीय रूस की आलेक्सान्द्रा गोरयाचकिना को जॉर्जिया की नाना दगनिडजे नें हमवतन बेला खोटेंशविली को चीन की तान ज्हंगोई नें रूस की अलेक्जेंड्रा कोस्टेनियुक को अजरबैजान की गुनय मामजदा नें पोलैंड की ओलिवा किओबसा को और रूस की लागनों काटेरयना नें हमवतन पोलिना शुवालोवा को मात देते हुए शुरूआत की ।

पेज 1 का शेष

सिद्धारमैया ही होंगे सीएम...

खास तौर से ग्रामीण कर्नाटक पर सिद्धारमैया की मजबूत पकड़ है। **कई कारणों से पिछड़े शिवकुमार :** शिवकुमार पर टैक्स चोरी का आरोप है। 2017 में दिल्ली में छापेमारी के दौरान उनके चार ठिकानों से 8.5 करोड़ रुपये बरामद हुए थे। आइटी के रेडार पर नयी दिल्ली के सफदरजंग इन्क्लेव में खरीदे गए तीन फ्लैट भी थे। इनका शिवकुमार से कथित संबंध होने की बात आयीथी। इडी ने उनके खिलाफ जांच शुरू की और 3 सितंबर 2019 को पूछताछ के बाद मनी लॉन्ड्रिंग के आरोप में शिवकुमार को पीएमएलए के तहत गिरफ्तार किया गया। शिवकुमार 50 दिन तक दिल्ली की तिहाड़ जेल में बंद रहे। 24 अक्टूबर 2019 को दिल्ली हाई कोर्ट से जमानत मिलने के बाद शिवकुमार की रिहाई हुई थी। शिवकुमार के खिलाफ सीबीआई ने भ्रष्टाचार निरोधी कानून के तहत आय से ज्यादा संपत्ति का केस दर्ज किया।

बिहार में शराब...

बता दें कि बिहार के पटना से उड़ा ड्रोन छपरा में जाकर गायब हो गया था, जिसका अभी तक सुराग नहीं मिल पाया है। इस ड्रोन की कीमत करीब 60 लाख रुपये है, जो शराब धंधेबाजों के खिलाफ कार्रवाई के लिए लाया गया था। उत्पाद विभाग की ओर से 9 मई को पटना के दियारा इलाके से ड्रोन को उड़ाया गया था। छपरा के क्षेत्र में प्रवेश करने के बाद गायब हो गया था। छपरा के तेलवा में आने के बाद पायलट से कनेक्श टूट गया था। इसके बाद से लापता चल रहा है।

राज्य भर में तेज आंधी...

मौसम वैज्ञानिक अभिषेक आनंद ने बताया कि राज्य के कुछ हिस्सों में बारिश की संभावनाएं बन रही है, लेकिन इससे तापमान में असर नहीं देखा जायेगा। 21 मई तक राज्य के कुछ हिस्सों में बारिश की संभावना है। पर तापमान में कमी की बात नहीं की गयी है। विभाग के अनुसार मुख्य रूप से बारिश उत्तर पूर्वी, दक्षिणी और मध्य भाग में दर्ज की जायेगी। रांची, बोकारो, गुमला, हजारीबाग, खूंटी, रामगढ़, पूर्वी सिंहभूम, पश्चिमी सिंहभूम, सिमडेगा, सरायकेला खरसावां, दुमका, देवघर, गोड्डा, पाकुड़, जामताड़ा, साहेबगंज, धनबाद समेत अन्य जिलों में बारिश की संभावना व्यक्त की गयी है। 19 तक मध्यम दर्जे की बारिश होगी। बारिश के साथ कुछ इलाकों में 30 किलोमीटर प्रति घंटा रफ्तार से हवाएं चलेंगी। **18 जिलों का तापमान 40 डिग्री पार :** रांची : 39.8, जमशेदपुरः 43.3, डालटनगंज : 43.3, बोकारो : 40.5, देवघर : 41.5, गढ़वा : 42.1, गिरीडीह : 40.6, गोड्डा : 37.7, गुमला : 40.1, हजारीबाग : 38.5, खूंटी : 40.4, लातेहार : 40, लोहरदगा : 42.2, पाकुड़ : 41.0, रामगढ़ : 40, साहिबगंज : 41.2, सिमडेगा : 41.0, पश्चिमी सिंहभूम : 42.0।

मददगारों की सूची बनी...

रेलवे कोयला साइडिंग में टीपीसी उग्रवादियों का वर्चस्व खत्म होने के बाद आपराधिक गिरोह की धमक को बढ़ाया। नक्सलियों की तरह अमन श्रीवास्तव का गिरोह लगातार अपनी गतिविधियां बढ़ाने लगा। रामगढ़ व हजारीबाग में सक्रिय अमन श्रीवास्तव का गिरोह लातेहार में रेलवे साइडिंग शुरू होने के बाद सक्रिय हुआ। गिरोह द्वारा पूर्व में प्रति रैक 50- 80 हजार रुपए का गुंडा टैक्स मांगा जाता था। कोयला कारोबार में प्रतिद्वंदिता के कारण भी अमन श्रीवास्तव की गतिविधियां चतरा, लोहरदगा, लातेहार, रांची में बढ़ चला था। रांची के खलारी स्थित केडी ओल्ड, पिस्का, चतरा का राजधर, लोहरदगा का बड़कीचापी, लातेहार का टोरी, वीरा टोली, कुसमाही, बालूमाथ, फुलबसिया के अलावा रामगढ़ का बड़काकाना, पतरातू और भुरकुंडा में स्थित रेलवे साइडिंग में जुड़े व्यवसायियों को पूर्व से धमकी दिया जाता था। **छह जिलों की पुलिस के लिए बना था चुनौती :** गैंगस्टर अमन श्रीवास्तव झारखंड के रांची, रामगढ़, चतरा, लोहरदगा, हजारीबाग और लातेहार जिले की पुलिस के लिए चुनौती बन गया था। अमन श्रीवास्तव गिरोह द्वारा जहां व्यवसायियों से रंगदारी वसूली जा रही है, वहीं रंगदारी नहीं देने पर वाहनों में आगजनी और जान से मारने की धमकी भी दी जाती है। अमन श्रीवास्तव पिछले 8 वर्षों से आतंक का पर्याय बना हुआ था।

लॉरेंस बिश्नोई, गोल्डी समेत...

आतंकवाद रोधी एजेंसी ने राज्य पुलिस बलों के साथ मिलकर तड़के ही परिसरों और संदिग्धों से जुड़े अन्य स्थानों पर छापेमारी की। जानकारी के मुताबिक छापेमारी अभी भी जारी है। अधिकारियों के मुताबिक, एनआईए ने पिछले साल तीन मामले दर्ज किए थे, जिनमें आरोप लगाया गया था कि आतंकवादी संगठन और विदेश में मौजूद उनके समर्थक लक्षित हत्याओं और हिंसक आपराधिक कृत्यों को अंजाम देने के लिए भारत के उत्तरी राज्यों में सक्रिय संगठित आपराधिक गिरोहों के सदस्यों के रूप में काम कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि यह भी सामने आया था कि आतंकवादियों, नशीले पदार्थों के तस्करों और माफियाओं का नेटवर्क अवैध हथियारों तथा गोला-बारूद का निर्माण एवं आपूर्ति करने वाले एक व्यापक अंतरराज्यीय गिरोह के माध्यम से सीमा पार हथियारों, विस्फोटकों और आईईडी सहित अन्य आतंकवादी साजोसामान की तस्करी में सक्रिय है। अधिकारियों के अनुसार, एनआईए गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम (यूएपीए) के तहत विभिन्न आपराधिक गिरोहों के 19 सदस्यों, दो हथियार आपूर्तिकर्ताओं और नेटवर्क से जुड़े एक फाइनेंसर को पहले ही गिरफ्तार कर चुकी है।

इमरान के घर छिपे हैं...

मिलिट्री कोर्ट तय करेगी सजा : मीर से जिन्ना हाउस पर हमले से जुड़ा सवाल भी पूछा गया। उनका कहना था कि जिन्ना हाउस पर हमले को आसानी से रोका जा सकता था। लेकिन मुख्यमंत्री ने पुलिस को हथियार प्रयोग करने से रोक दिया था। जिन्ना हाउस जो कि कोर कमांडर का आधिकारिक घर है, उस पर हमले के दौरान कई प्रदर्शनकारी घर के अंदर लोगों के संपर्क में थे। मीर ने आगे कहा कि सरकार ने फैसला किया है कि सैन्य प्रतिष्ठानों पर हमला करने वालों का ट्रायल मिलिट्री कोर्ट में होगा। **सेना आगबबूला, लटकी गिरफ्तारी की तलवार :** इमरान खान बुरी तरह फंस गए हैं और अब उनके राजनीतिक भविष्य पर खतरा मंडराने लगा है। इमरान खान पर पाकिस्तानी सेना अब आर्मी ऐक्ट के तहत मामला दर्ज कर सकती है। इस कानून के तहत दोषी पाये जाने पर मौत की सजा का भी प्रावधान है। पाकिस्तान में 9 मई को इमरान खान की गिरफ्तारी के बाद देशभर में हिंसा हुई थी। उनके समर्थकों ने संवेदनशील सैन्य ठिकानों में तोड़फोड़ की थी। रावलपिंडी में सेना के मुख्यालय जनरल हेडक्वार्टर, लाहौर में कोर कमांडर हाउस, जिन्ना हाउस लाहौर, रेडियो पाकिस्तान के पेशावर कार्यालय और देश भर में अन्य सरकारी और राज्य संस्थान कार्यालयों और इमारतों पर हमले किये गये थे।

पीएलआइ योजना 2.0 को मिली मंजूरी

केंद्रीय कैबिनेट का फैसला : 2430 करोड़ रुपये निवेश प्राप्ति की संभावना

एजेंसी

नयी दिल्ली। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने आइटी हार्डवेयर के लिए उत्पादन आधारित प्रोत्साहन योजना (पीएलआइ) को मंजूरी दे दी है। इस पर 17 हजार करोड़ रुपये का बजटीय परिव्यय होगा। कार्यक्रम की अवधि 6 वर्ष है। इससे 2,430 करोड़ रुपये के निवेश प्राप्ति की संभावना है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने बुधवार को आइटी हार्डवेयर के लिए पीएलआइ स्कीम 2.0 को मंजूरी प्रदान की है। इसमें लैपटॉप, टैबलेट, ऑल-इन-वन पीसी, सर्वर और अल्ट्रा स्मॉल फॉर्म फैक्टर डिवाइस शामिल हैं।

मंत्रिमंडल के फैसले की जानकारी देते हुए केंद्रीय मंत्री अश्वनी वैष्णव ने कहा कि पीएलआइ योजना इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों, मोबाइल और टेलीकॉम उपकरणों के उत्पादन के क्षेत्र में सफल रही है। इससे इन क्षेत्रों में उत्पादन बढ़ा है और भारत इनका बढ़ा निर्यातक बना है। उन्होंने कहा कि अब सरकार आइटी हार्डवेयर क्षेत्र के लिए भी योजना लेकर आयी है। इससे इस क्षेत्र का उत्पादन 3.35 लाख करोड़ रुपये तक बढ़ेगा। क्षेत्र को 2,430 करोड़ रुपये का निवेश प्राप्त होगा और प्रत्यक्ष तौर पर 75 हजार लोगों को रोजगार मिलेगा। वहीं, अप्रत्यक्ष तौर पर 2 लाख से ज्यादा रोजगार पैदा होंगे।

सरकार के अनुसार भारत सभी वैश्विक बड़ी कंपनियों के लिए एक विश्वसनीय आपूर्ति श्रृंखला भागीदार के रूप में उभर रहा है। बड़ी आइटी हार्डवेयर कंपनियों ने भारत में विनिर्माण सुविधाएं स्थापित करने में दिलचस्पी दिखायी है। यह देश के भीतर अच्छी मांग वाले मजबूत आइटी सेवा उद्योग द्वारा समर्थित है। अधिकांश बड़ी कंपनियां भारत में स्थित घरेलू बाजारों की आपूर्ति करना चाहती हैं और साथ ही भारत को एक निर्यात केंद्र बनाना चाहती हैं।

खरीफ सीजन के लिए 1.08 लाख करोड़ रुपये की उर्वरक सब्सिडी को मंजूरी

नयी दिल्ली। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने खरीफ सीजन में यूरिया के लिए 70 हजार करोड़ रुपये और डायमोनियम फॉस्फेट (डीएपी) के लिए 38 हजार करोड़ रुपये सहित कुल 1.08 लाख करोड़ रुपये की उर्वरक सब्सिडी को मंजूरी दी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने बुधवार को पोषक तत्व आधारित सब्सिडी (एनबीएस) दरों में संशोधन के लिए उर्वरक विभाग के प्रस्ताव को मंजूरी प्रदान की है। मंत्रिमंडल के फैसलों की जानकारी देते हुए केंद्रीय मंत्री मनसुख मांडविया ने बताया कि दुनिया भर में उर्वरकों के दाम बढ़ रहे हैं। ऐसे में किसानों को नुकसान से बचाने के लिए सरकार सब्सिडी दे रही है।

स्पीड न्यूज

सैन्य जानकारी साझा करने के मामले में दो गिफ्तार

नयी दिल्ली । केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआइ) ने देश की रक्षा तैयारियों की जानकारी विदेशी एजेंसियों को मुहैया कराने के आरोप में एक पत्रकार विवेक रघुवंशी और उसके सहयोगी पूर्व नेवी कमांडर आशीष पाठक को ऑफिशियल सीक्रेट एक्ट के तहत गिरफ्तार किया है।

डीयू में पेटेंट पर 3 महीने का सर्टिफिकेट कोर्स शुरू

नयी दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय (डीयू) ने एक नयी पहल करते हुए समय की मांग के अनुरूप पेटेंट पर एक सर्टिफिकेट कोर्स सर्टिफिकेट कोर्स ऑन पेटेंट की शुरुआत की है। कोर्स का शुभारंभ विश्वविद्यालय के वाइस रीगल लॉज के अकादमिक परिषद हॉल में बुधवार को किया गया।

27वीं बार एवरेस्ट फतह कर वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया

काठमांडू। नेपाल के कामिरिता शेरपा ने 27वीं बार बुधवार की सुबह माउंट एवरेस्ट पर चढ़ाई की। उन्होंने माउंट एवरेस्ट फतह कर अपना ही रिकॉर्ड तोड़ दिया है। शेरपा 54 साल के हो गये हैं।

ऑस्ट्रेलिया ने क्वाड की बैठक टाली

कैनबरा। ऑस्ट्रेलिया में अगले सप्ताह प्रस्तावित क्वाड देशों की बैठक टाल दी गयी है। आस्ट्रेलिया ने अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन के बैठक में न आने के फैसले की वजह से यह फैसला किया है। चार प्रमुख देशों भारत, जापान, अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया के संगठन क्वाड की बैठक अगले सप्ताह ऑस्ट्रेलिया में प्रस्तावित थी।

निरहुआ-आम्रपाली का गाना 'तू अइला हमरा जिंनगी में' ने तोड़े सारे रिकार्ड

जुबली स्टार व सांसद दिनेशलाल यादव निरहुआ और यूट्यूब क्वीन आम्रपाली दुबे स्टारर गाना 'तू अइला हमरा जिंनगी में' रिकार्ड ब्रेकर साबित हो रहा है। इस गाने ने भोजपुरी म्यूजिक इंडस्ट्री के सभी रिकार्ड ब्रेक कर दिये हैं। गाने को पहले ही दिन महज 10 घंटे में 2.5 मिलियन लोगों ने देख लिया है। भोजपुरी के किसी भी गाने को इतने कम समय में इतनी बार नहीं देखा गया है। यह एक रोमांटिक गाना है, जिसमें आम्रपाली दुबे और दिनेशलाल निरहुआ का हार्ट टचिंग केमेस्ट्री नजर आ रही है। 'तू अइला हमरा जिंनगी में' फिल्म माई प्राउड ऑफ भोजपुरी का खूबसूरत गाना है। इस गाने को वर्ल्ड वाइड रेकॉर्ड्स भोजपुरी के ऑफिशियल यू-ट्यूब चैनल से रिलीज किया गया। इस फिल्म को मंगलवार (16 मई) को ही जियो सिनेमा पर स्ट्रीम किया गया था, जिसे खूब सारे व्यूज मिले हैं। 'तू अइला हमरा जिंनगी में' को स्निग्धा सरकार ने अपनी सुरीली आवाज दी है, जबकि प्यारेलाल यादव ने इसके गीत लिखे हैं। प्रसिद्ध संगीतकार रजनीश मिश्रा ने इस गाने को संगीतबद्ध किया है। रजनीश मिश्रा ने एक बार फिर से अपने इस खूबसूरत संगीत से ना सिर्फ भोजपुरी के ग्राफ को एक नयी ऊंचाई दी है, बल्कि यह भी साबित कर दिया है कि भोजपुरी सिनेमा में भी अच्छी चीजें बन सकती है और ऑडियंस उसे खूब पसंद भी करती है।

विवान को ओलंपियाड ऑफ इंग्लिश लैंग्वेज में चतुर्थ स्थान

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। शारदा ग्लोबल स्कूल के कक्षा तृतीय के विवान जैन ने इंटरनेशनल ओलंपियाड ऑफ इंग्लिश लैंग्वेज में चतुर्थ स्थान प्राप्त किया है। ज्ञान में लोगों की आयु नहीं देखी जाती, इसे विवान जैन ने चरितार्थ किया है। विवान ने इंटरनेशनल स्तर पर चतुर्थ जोनल रैंक प्रथम तथा स्टेट रैंक में भी प्रथम स्थान प्राप्त कर विद्यालय की गरिमा बढ़ायी है और अपने ज्ञान का परिचय दिया है। विद्यालय की डायरेक्टर (एकेडमिक) रंजना स्वरूप एवं प्रिंसिपल जसमीत कौर ने विवान को सर्टिफिकेट एवं मेडल देकर उसकी उपलब्धि पर हर्ष जताते हुए कहा कि सफलता प्राप्त करने के लिए कठिन परिश्रम, मेहनत, लगन, धैर्य, आशावादी और समय का सदुपयोग करने की जरूरत होती है। विवान की इस उपलब्धि पर समस्त शारदा ग्लोबल परिवार ने उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

2024 में 6.7 फीसदी की दर से बढ़ेगी भारतीय अर्थवयवस्था : संयुक्त राष्ट्र

नयी दिल्ली। अर्थव्यवस्था के मोर्चे पर अच्छी खबर है। मजबूत घरेलू मांग की बदौलत भारतीय अर्थव्यवस्था के कैलेंडर वर्ष 2024 में 6.7 फीसदी की दर से बढ़ने की उम्मीद है। संयुक्त राष्ट्र ने जारी एक रिपोर्ट में यह अनुमान जताया है। हालांकि, रिपोर्ट में कहा गया है कि ऊंची ब्याज दरों तथा कमजोर बाहरी मांग की वजह से देश के निवेश और निर्यात पर दबाव बना रहेगा। संयुक्त राष्ट्र की 2023 के मध्य तक वैश्विक आर्थिक स्थिति और संभावनाएं शीर्षक वाली ये रिपोर्ट मंगलवार को यहां जारी की गयी। रिपोर्ट के मुताबिक भारत दक्षिण एशियाई क्षेत्र की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, जो कैलेंडर वर्ष 2023 में 5.8 फीसदी और 2024 में 6.7 फीसदी की आर्थिक वृद्धि दर्ज करेगी। हालांकि, ऊंची ब्याज दरों और कमजोर बाहरी मांग से 2023 में देश के निवेश और निर्यात पर दबाव बना रहेगा।

पाकिस्तानी सेना प्रमुख मुनीर आगबबूला इमरान पर लटकी गिरफ्तारी की तलवार

एजेंसी

इस्लामाबाद। पाकिस्तान की राजनीति में अब इमरान खान के भविष्य को लेकर सवालिया निशान लगने लगे हैं। पाकिस्तान में 9 मई को पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की इस्लामाबाद हाइकोर्ट में गिरफ्तारी के बाद हिंसा, झड़प और अराजकता देखी गयी। इमरान की पार्टी पीटीआइ के समर्थकों ने देश भर में संवेदनशील सैन्य ठिकानों में तोड़फोड़ की और उन्हें भारी नुकसान पहुंचाया। लगभग 72 घंटे तक चली हिंसा में रावलपिंडी में सेना के मुख्यालय जनरल हेडक्वार्टर, लाहौर में कोर कमांडर हाउस, जिन्ना हाउस लाहौर, रेडियो पाकिस्तान के पेशावर कार्यालय और देश भर में अन्य सरकारी और राज्य संस्थान कार्यालयों और इमारतों पर हमले किये गये।

पाकिस्तानी सेना ने अब हमलावरों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की बात कही है। जीएचक्यू

कठिन हो सकते हैं आने वाले दिन

रावलपिंडी में आयोजित कोर कमांडरों के सम्मेलन के एक विशेष सत्र के दौरान, थल सेनाध्यक्ष जनरल सैयद असीम मुनीर को 9 मई से हिंसा की घटनाओं और भीड़ के हमलों के बारे में जानकारी दी गयी। पाकिस्तानी सेना के कमांडरों ने इन घटनाओं पर अपनी पीड़ा व्यक्त की। कोर कमांडर्स कांफ्रेंस में इस बात पर सहमत हुई कि भविष्य में यदि 9 मई की तरह प्रयास दोहराये जाते हैं, तो कोई संयम नहीं दिखाया जायेगा। सशस्त्र बलों ने हमलों को विदेश समर्थित और आंतरिक रूप से सैन्य प्रतिष्ठानों और सार्वजनिक / निजी संपत्तियों के खिलाफ उकसाया करार दिया। जनरल मुनीर की सेना ने पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ और उसके नेता इमरान खान का नाम लिये बिना, उनके द्वारा उकसाए गये उनके समर्थकों को गिरफ्तार करने की ओर इशारा किया है, जिसके कारण सैन्य प्रतिष्ठानों के खिलाफ हमले हुए हैं, और उनके खिलाफ मुकदमा शुरू किया गया है। सेना ने कुछ मामलों में आर्मी एक्ट और ऑफिशियल सीक्रेट एक्ट भी शुरू करने का फैसला किया है। लाहौर में अपने जमान पार्क निवास से इस्लामाबाद के लिए रवाना होने से पहले 9 मई को अपने बयान में, उन्होंने सैन्य प्रतिष्ठान पर एक बार फिर से चेतावनी दी थी कि अगर उन्हें गिरफ्तार करने का कोई प्रयास किया जाता है, तो परिणाम भुगतने के लिए तैयार रहें। अब, जब सेना कानूनी मामलों के साथ इसका जवाब देने के लिए तैयार है, तो इमरान खान के आने वाले दिन कठिन होने वाले हैं। उन्हें बुक और ट्रायल किया जा सकता है। किसी भी संदर्भ के तहत, अगर इमरान खान के खिलाफ मामला दर्ज किया जाता है और उन पर किसी भी अधिनियम के तहत मुकदमा चलाया जाता है, तो आजीवन कारावास या मृत्युदंड का सामना करना पड़ सकता है।

वाणिज्य की खबरें

लगातार दूसरे दिन गिरावट के साथ बंद हुआ शेयर बाजार

नयी दिल्ली। वैश्विक दबाव के कारण घरेलू शेयर बाजार बुधवार को लगातार दूसरे दिन गिरावट के साथ बंद हुआ। आज के कारोबार की शुरुआत सपाट स्तर पर हुई थी, लेकिन दिन के कारोबार के दौरान बिकवाली के दबाव में शेयर बाजार लगातार लुढ़कता चला गया। हालांकि, आखिरी 2 घंटे के कारोबार में खरीदारों ने एक्टिव होकर लिवाली भी की, पर बाजार लाल निशान में ही बंद हुआ। दिन भर की खरीद बिक्री के बाद सेंसेक्स 0.60 प्रतिशत और निफ्टी 0.57 प्रतिशत की कमजोरी के साथ बंद हुए। आज लगातार दूसरे दिन गिरावट के कारण निवेशकों को करीब 90 हजार करोड़ रुपये का नुकसान हुआ। बीएसइ सेंसेक्स 371.83 अंक की कमजोरी के साथ 61,560.64 अंक के स्तर पर बंद हुआ। एनएसई का निफ्टी आज 104.75 अंक की कमजोरी के साथ 18,181.75 अंक के स्तर पर बंद हुआ।

जब तक शरीर में प्राण रहेगा, बिहार आते रहेंगे : बाबा बागेश्वर

पटना में पांच दिवसीय कार्यक्रम का हुआ समापन

एजेंसी

पटना। बाबा बागेश्वर धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री 13 मई को पटना आये थे। नौबतपुर के तरेत पाली मठ में उनके पांच दिवसीय हनुमंत कथा को सुनने लिए देश के कोने कोने से लोग पहुंचे। बुधवार (17 मई) को उनके कार्यक्रम का समापन हो गया। इसके बाद वे पटना एयरपोर्ट से मध्य प्रदेश चले गये। बिहार से वापस जाने के दौरान बागेश्वर बाबा ने कहा, जबतक शरीर में प्राण रहेगा बिहार आते रहेंगे।

बिहार वासियों पर बागेश्वर बाबा की दीवानगी सिर चढ़कर बोलती रही। 13 मई से पहले से ही भक्तों के पटना पहुंचने का सिलसिला शुरू हो गया था। वैसे, बागेश्वर बाबा के बिहार दौरे पर जमकर सियासत भी हुई। राजद ने जहां विरोध का ऐलान किया था, वहीं भाजपा ने भी मोर्चा संभालते हुए हर कदम पर बागेश्वर सरकार का समर्थन किया। बिहार में बागेश्वर बाबा को मिले प्रेम का ही नतीजा है कि उनके और भी कई कार्यक्रम आयोजित करने को लेकर बागेश्वर धाम कमेटी विचार कर रही है। लोगों की ओर से मिले अथाह स्नेह का नतीजा रहा कि बागेश्वर बाबा ने जाते-जाते वापस आने का ऐलान भी कर दिया। पंडित धीरेंद्र शास्त्री उर्फ बागेश्वर बाबा के दर्शन के लिए 13 मई को पटना एयरपोर्ट पर बड़ी संख्या में भक्तों ने उनका स्वागत किया। इस दौरान सांसद मनोज तिवारी ने खुद बागेश्वर बाबा को गाड़ी ड्राइव कर होटल पनाश तक पहुंचाया। पटना से सटे नौबतपुर प्रखंड के तरेत पाली मठ पर बाबा के कार्यक्रम में आम जनता के साथ ही वीआइपी लोग भी पहुंचे। तरेत पाली मठ के परिसर में 5 दिनों तक हनुमंत कथा और प्रवचन चलता रहा। धीरेंद्र शास्त्री की कथा सुनने के लिए भक्त सिर्फ बिहार से ही नहीं, बल्कि देश के दूसरे राज्यों और नेपाल से भी पहुंचे थे। इस दौरान भक्तों ने दिव्य दरबार में अपनी अर्जी भी दी और बाबा ने उनकी समस्याओं का निदान किया। भोजपुरी सिनेमा जगत के दो बड़े सितारे भी बागेश्वर बाबा से मिलने पहुंचे थे। भोजपुरी अभिनेत्री अक्षरा सिंह और सीने स्टार पवन सिंह ने बागेश्वर बाबा के दरबार में हाजिरी लगायी। इस दौरान अक्षरा ने बाबा बागेश्वर को अपनी सुरीली आवाज में भजन गाकर भी सुनाया।

जिला स्थापना दिवस पर समस्त जिला वासियों को हार्दिक बधाई
निवेदक
रमेश कुमार
प्रदेश सचिव कांग्रेस पार्टी गुमला।
हेमावती लकड़ा
उपाध्यक्ष महिला मोर्चा कांग्रेस कमेटी, गुमला।

जिला स्थापना दिवस पर समस्त जिला वासियों को हार्दिक बधाई
निवेदक
संजीव कुमार गुप्ता
उपाध्यक्ष भारतीय जनता पार्टी युवा मोर्चा, गुमला।

जिला स्थापना दिवस पर समस्त जिला वासियों को हार्दिक बधाई
निवेदक
दिलीप नाथ साहु
प्रदेश महासचिव, पिछड़ा वर्ग संघर्ष मोर्चा, गुमला।

जिला स्थापना दिवस पर समस्त जिला वासियों को हार्दिक बधाई
निवेदक
शैल मिश्रा
पूर्व भाजपा महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष सह वार्ड आयुक्त नगर परिषद, गुमला।

जिला स्थापना दिवस पर समस्त जिला वासियों को हार्दिक बधाई
सांता पब्लिक स्कूल में रीएडमिशन का नहीं लगता है चार्ज
निवेदक
हेमंत कुमार
निदेशक सांता पब्लिक स्कूल, शास्त्री नगर डेम साईट, गुमला।

जिला स्थापना दिवस पर समस्त जिला वासियों को हार्दिक बधाई
खाद्य आपूर्ति विभाग के योजना का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाना लक्ष्य
निवेदक
गुलाम समदानी
जिला आपूर्ति पदाधिकारी, गुमला।

जिला स्थापना दिवस पर समस्त जिला वासियों को हार्दिक बधाई
हमारा संकल्प, बेहतर सड़क हरियाली के साथ गुमला के विकास में करें सहयोग
निवेदक
आरकेडी कंस्ट्रक्शन, प्राईवेट लिमिटेड

जिला स्थापना दिवस पर समस्त जिला वासियों को हार्दिक बधाई
हर व्यक्ति को स्वास्थ्य सुविधा मिले ऐसे सुंदर वातावरण का करें निर्माण
निवेदक
डॉ. अनूपम किशोर
अस्पताल उपाधीक्षक, सदर अस्पताल गुमला।

40 वें स्थापना दिवस पर जिले को समृद्ध बनाने का करें संकल्प
जिला स्थापना दिवस पर समस्त जिला वासियों व भाजपा कार्याकर्ताओं को हार्दिक बधाई
निवेदक
सुदर्शन भगत
सांसद, लोहरदगा लोक सभा क्षेत्र सांसद प्रतिनिधि, गुमला।
भोला चौधरी
सांसद प्रतिनिधि, गुमला।